संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

5

brethren
sunday
school

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-4 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen (New York)
  athmamanna@yahoo.com

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

Introduction

We live in a changing world. Even scientific facts change whenever new discoveries are made. However, God never changes, nor does His word. The word of God is as relevant and reliable today as when it was written. Truth cannot and will not change. The truth about God, man, his destiny etc. is the same now as was then.

Man's language has gone through a process of revision. Knowledge explosion necessitates the presentation of truth in understandable words. All these require a restatement of the word of God to a new generation. With this in view, we have been engaged for sometime in revising the Sunday school text books. Four text for standard I to IV have already been published.

We are very happy to present the Sunday School Text for Standard V. This text has been completely revised and re-written. The original work was done by **Late Mr. K.K. John, B.A.L.T., (Kottarakara)** and the English translation was done by **Mrs. Leelamma Zachariah, M.Sc. B.Ed., (New Delhi).** The old text book was good and has served its purpose for the last two generations. The present English edition is a revision, with the language and format updated by **Bro. K.A. Philip & Bro. Sunny T Philip, (Kerala).**

It is **Sister Dora Alex (Delhi)** who revised and translated the English Text to Hindi. The committee expresses its indebtedness to her.

This book for Standard V is sent forth with the hope that God will bless it and that it will be helpful both to the teachers and students.

The Editorial Board gladly express its gratitude to all those who have helped in bring out this series, especially our Indian brethren abroad.

For Brethren Sunday School Committee

Dr. O M Samuel (President)
Bro. C V Samuel (Vice President)
Bro. K A Philip (Secretary)
Bro. Binu Samuel (Secretary)

शिक्षकों से...

प्रभावकारी परिणाम के लिये शिक्षक की तैयारी–

1. सप्ताह के आरंभ में ही पाठ के विषय को समझ लें, ताकि उस पर विचार करने और अपनी कक्षा में, उसे प्रस्तुत करने के तरीके के विषय में सोचने का पर्याप्त समय मिल सके।
2. बाइबल के भाग को ध्यानपूर्वक पढ़ें, पाठ में दी गई व्याख्या इसका विकल्प नहीं है।
3. अपनी कक्षा के प्रति वास्तविक समर्पण रखें। बच्चे उदासीनता को शीघ्र ही पहचान लेते हैं।
4. पाठ्य पुस्तक का उपयोग करें। इसके लेखकों के अनुभव का लाभ उठाएं, जिन्होंने वचन के विभिन्न हिस्सों के द्वारा बच्चों तक सुसमाचार पहुँचाने का कार्य अनेक वर्षों तक किया है।
5. अपने पाठ को निरंतरता के साथ प्रस्तुत करने के लिए यह आवश्यक है कि आप अपनी टिप्पणी लिखें। यदि आप कक्षा में उनका उल्लेख न कर पाएं तौभी पाठ के मुख्य बिंदुओं को याद रखने में यह आपकी सहायता करेगा। अपने पाठ को प्रस्तुत करने से पहले उसे अच्छी तरह समझें और स्वयं को उसे सिखाने का अभ्यास करें।
6. पाठ को रुचिकर बनाने का प्रयत्न करें। पाठ परिचय और निष्कर्ष पर विशेष ध्यान दें। सबसे पहले बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। फिर इस बात का ध्यान रखें कि सिखाए जाने वाले पाठ में से 'आत्मिक शिक्षा' नएपन के साथ हो। सामान्यत: सिखाए जाने वाले 'आत्मिक पाठ' बच्चे पहले से समझ जाते हैं और फिर उस की उपेक्षा करते हैं। अत: यह आवश्यक है कि पाठ के ये भाग

प्रभावकारी हों।

7. अपने पाठ को सिखाने और आत्मिक शिक्षा को प्रस्तुत करने के तरीके और समय में विविधता लाने में निपुण बनें। बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के तरीके अपनाएँ।

8. दृश्य प्रसाधनों का प्रयोग करें। शिक्षक स्वयं इन्हें बनाएँ और चित्रों, शब्दों और रंगों के द्वारा इसमें विविधता लाने का प्रयत्न करें। क्योंकि एक सामान्य सी तस्वीर पूरे समय बच्चों का ध्यान केंद्रित नहीं रख सकती। अपने दृश्य प्रसाधनों को उपयोग के पश्चात् भविष्य में प्रयोग करने के लिए सहेजकर रखें।

9. अपने पाठ की रूपरेखा का अध्ययन करें और इस बात का ध्यान रखें कि हमारे उद्धारकर्त्ता के प्रेम और उद्धार के मार्ग की ओर, हर पाठ के साथ एक-एक कदम आगे की ओर बढ़ाएँ। प्रत्येक पाठ के साथ संपूर्ण सुसमाचार सुनाने के बदले एक समय एक सत्य को उनके दिलों तक पहुँचाएँ।

10. ''मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'' (यूहन्ना 15:5) प्रभु के इन वचनों को स्मरण रखते हुए अपने परिश्रम पर प्रभु की आशीष के लिए प्रार्थना करें।

संपादक-मंडल के लिए

के.ए. फिलिप व सन्नी टी. फिलिप (अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक)

डोरा अलेक्स (हिंदी पाठ्य पुस्तक)

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गास्पल हाल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की

हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति** एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ — पृष्ठ संख्या

1. इस्राएल राष्ट्र 1
2. याकूब–मिस्र में 5
3. मिस्र में दासता 8
4. मूसा 10
5. मूसा–मिद्यान में 13
6. मिस्र पर विपत्तियाँ 16
7. फसह 20
8. मिस्र से निर्गमन 23
9. मारा और एलीम 26
10. मन्ना 28
11. चट्टान–जिसे मारा गया 31
12. दस आज्ञाएँ 35
13. निवासस्थान–1 39
14. निवासस्थान–2 43
15. पवित्रस्थान 46
16. परमपवित्रस्थान 49
17. पुराने नियम के याजक पद 52
18. जंगल के युद्ध 54
19. मूसा के अंतिम दिन 58
20. परमेश्वर की देखभाल 62
21. प्रभु यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा 65
22. प्रभु यीशु और चेले 68

23. रोगों पर अधिकार-1 72
24. रोगों पर अधिकार-2 76
25. रोगों पर अधिकार-3 80
26. दुष्टात्माओं पर अधिकार 83
27. मृत्यु पर अधिकार 87
28. प्रकृति पर अधिकार 92
29. प्रभु यीशु के दृष्टांत-1 96
30. प्रभु यीशु के दृष्टांत-2 100
31. प्रभु यीशु के दृष्टांत-3 104
32. प्रभु यीशु के दृष्टांत-4 109
33. प्रभु यीशु के दृष्टांत-5 113
34. उदाहरण और चेतावनियाँ 117
35. नया जन्म 121
36. प्रभु यीशु और सामरी स्त्री 124
37. उद्धार का मार्ग 128
38. प्रभु यीशु पर आरोप और मुकदमा 131
39. प्रभु यीशु का क्रूसीकरण 135
40. प्रभु यीशु जी उठे! 140

पाठ-1

इस्राएल राष्ट्र

उत्पत्ति 15:5; 18; 32:24-31

मुख्य बिंदु :

तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हो। (1 पतरस 2:9)।

याद करें :

उसने कहा, तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है। (उत्पत्ति 32:28)।

पाठ :

इतिहास गवाह है कि अनेक राष्ट्र बने और समाप्त हो गए। तथापि, एक राष्ट्र है, जो अपनी विशिष्ट पहचान के साथ बना हुआ है। 4000 वर्षों के अपने सांस्कृतिक और आत्मिक परंपरा के साथ बना हुआ यह राष्ट्र है–इस्राएल। बाइबल में उन्हें ''परमेश्वर के चुने हुए'' और ''परमेश्वर का पहिलौठा'' कहा गया है। (निर्गमन 6:7, 4:22)। इस्राएल के अलावा संसार की सभी जातियाँ ''अन्यजाति'' कहलाती हैं। बाइबल के विद्वानों ने अक्सर ''इस्राएल'' को ऐसे चित्रित किया है कि ''झाड़ी जल रही है परन्तु भस्म नहीं होती।'' (निर्गमन 3:2)। इस पाठ में हम उनके आरंभिक इतिहास के बारे में सीखेंगे।

परमेश्वर ने मूर्ति पूजकों में से इब्राहीम को बुलाया, जब वह कसदियों के ऊर (आज का ईराक) में था। परमेश्वर ने उसे एक देश देने का वायदा किया, जो परमेश्वर उसे दिखाने वाले थे। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास के साथ इब्राहीम ने आज्ञा मानी और अपनी पत्नी सारा के साथ अपनी यात्रा आरंभ कर दी। परमेश्वर ने उससे वायदा किया कि उसके वंशज गिनती में आकाश के तारों के समान होंगे। परमेश्वर के वायदे के

अनुसार, इब्राहीम और सारा को एक पुत्र प्राप्त हुआ–इसहाक। इसहाक ने रिबका से विवाह किया और उनके जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न हुए–एसाव और याकूब। एसाव तो चतुर शिकार खेलनेवाला हो गया, परन्तु याकूब सीधा मनुष्य था और तम्बुओं में रहा करता था। (उत्पत्ति 25:27)। याकूब ने परमेश्वर के वायदों पर विश्वास किया। तथापि अपने नाम के अर्थ के अनुसार उसने पहले अपने भाई को धोखा देकर उससे ''पहिलौठे का अधिकार'' ले लिया, फिर धोखा देकर अपने पिता की आशीषें भी ले लीं। एसाव अपने भाई से बहुत क्रोधित था। अपनी माता के सुझाव पर याकूब अपने मामा लाबान के यहाँ पद्दनराम चला गया। वहाँ उसने लाबान की दोनों बेटियों से विवाह किया और बीस वर्ष वहीं रहा। दो पत्नियों और दो दासियों से उसके 11 बेटे* और एक बेटी उत्पन्न हुए। अब समय आ गया था कि वह पद्दनराम छोड़ दे और वापस कनान जाए, जहाँ उसका भाई एसाव रहता था। वह अपना सबकुछ लेकर निकल पड़ा और यब्बोक नदी के किनारे पहुँचा।

बीस वर्ष पूर्व याकूब इसी यब्बोक नदी को पार कर यहाँ पहुँचा था। उस समय उसके पास केवल एक छड़ी थी। आज वह बहुत संपत्ति और बड़े परिवार का मुखिया था। जब उसे पता चला कि एसाव अपने 400 पुरुषों को लेकर उससे मिलने के लिए आ रहा है, तब वह अत्यंत डर गया और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, कि उसे अपने भाई के हाथ से बचाएं। फिर उसने अपने परिवार और पशुओं के अलग-अलग झुण्ड बनाकर उन्हें नदी के पार भेज दिया। याकूब पनीएल में ही रह गया। तब एक पुरुष ने आकर सुबह होने तक उससे मल्लयुद्ध किया। फिर जब उस पुरुष को समझ आया कि वह याकूब से जीत नहीं सकता, तब उसने याकूब की जांघ की नस को छुआ, और उसके जांघ की नस चढ़ गई। तब उस पुरुष ने कहा, ''मुझे जाने दे क्योंकि सुबह होने वाली है।'' परन्तु याकूब ने उत्तर दिया, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।'' तब परमेश्वर ने कहा, ''तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा। क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से

* सबसे छोटा बिन्यामीन बाद में उत्पन्न हुआ। (उत्पत्ति 35:16-18)

भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।'' तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया। बाद में उसके वंशज बारह गोत्र, इस्राएल कहलाए। याकूब के बारह पुत्र इन बारह गोत्रों के मूलपिता हुए।

याकूब अपने सभी पुत्रों में से यूसुफ से सबसे अधिक प्रेम करता था। इस कारण उसके भाई उससे जलते थे। परिणाम यह हुआ कि यूसुफ बेचा गया और फिर एक मिस्री के यहाँ गुलाम बन गया। तथापि, परमेश्वर उसके साथ थे और परमेश्वर ने उसके हालातों को बदला और वह मिस्र का प्रधान मंत्री बन गया। भयंकर अकाल के कारण यूसुफ के भाइयों और पिता याकूब को सपरिवार मिस्र में जाकर बस जाना पड़ा। यूसुफ ने वहाँ उन्हें पूरी सुरक्षा देकर उनकी देखभाल की। 430 वर्ष बीत गए और इस्राएली गिनती में बहुत बढ़ गए। नए शासक आते रहे जिन्होंने इस्राएलियों को अपना गुलाम बना लिया था। मूसा की अगुआई में परमेश्वर ने उन्हें मिस्र की गुलामी से आज़ाद किया और फिर अगले 40 वर्षों तक वे मरुभूमि में भटकते रहे। मूसा की मृत्यु के पश्चात् यहोशू उनका अगुआ बना। यहोशू की अगुआई में उन्होंने यरदन पार किया और उस देश को अपने वश में कर लिया। यहोशू ने बारह गोत्रों को भूमि बाँट कर दी। इस प्रकार इस्राएल एक राष्ट्र बन गया। परमेश्वर के द्वारा दिए गए न्यायी इस्राएल का न्याय करते थे। कुछ समय के बाद उन्होंने एक राजा की मांग की। परमेश्वर ने कीश के पुत्र शाऊल को उनका राजा होने के लिए चुना।

प्रश्न :

1. याकूब ''इस्राएल'' कैसे बना?
2. याकूब के कितने पुत्र थे?
3. याकूब अपने परिवार को लेकर मिस्र में क्यों बस गया?
4. किसकी अगुआई में इस्राएली लोग मिस्र से निकले?
5. कौन उन्हें उस देश में ले गया जिसका वायदा परमेश्वर ने उनसे किया था?

6. इस्राएल का पहला राजा कौन था?

वचन पढ़ें :

सोम.	उत्पत्ति 12:1–9
मंगल.	उत्पत्ति 21:1–11
बुध.	उत्पत्ति 25:24–34
बृहस्पति.	उत्पत्ति 28:1–22
शुक्र.	उत्पत्ति 32:1–16
शनि.	उत्पत्ति 32:17–32

पाठ–2

याकूब - मिस्र में

उत्पत्ति 46; प्रेरितों. 7:5-15

मुख्य बिंदु :

क्या एसाव याकूब का भाई न था? तौभी मैंने याकूब से प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जाना। (मलाकी 1:2)।

याद करें :

यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, ''मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ, जिसको तुमने मिस्र आने वालों के हाथ बेच डाला था। परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिए मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है। (उत्पत्ति 45:4-5)।

पाठ :

याकूब के बारह पुत्र और एक पुत्री, उसकी दो पत्नियों और दो दासियों के द्वारा उत्पन्न हुए। वे थे–रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, दान, नप्ताली, गाद, आशेर, इस्साकार, जबूलून, यूसुफ और बिन्यामीन और पुत्री दीना। याकूब अपने बुढ़ापे के पुत्र यूसुफ से बहुत प्रेम करता था, और उसने उसके लिए एक रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। इस कारण उसके भाई उससे बैर करने लगे। उसके बाद जब उन्होंने यूसुफ के दो स्वप्नों के बारे में सुना तो वे उससे और भी द्वेष करने लगे। एक दिन याकूब ने अपने प्रिय पुत्र यूसुफ को उसके भाइयों के पास भेजा, जो भेड़-बकरियों को चराने के लिए शकेम गए हुए थे। इस्राएल ने यूसुफ से कहा, ''जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ, कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ।''

अत: उसने उसको हेब्रोन की तराई में विदा कर दिया, और वह शकेम में आया। परन्तु उसके भाई दोतान को चले गए थे, इसलिए यूसुफ उन्हें ढूंढ़ते हुए दोतान पहुँचा। उसके भाइयों ने उसे पकड़कर

उसका रंगबिरंगा अंगरखा उतार कर उसे एक सूखे गड्हे में डाल दिया। बाद में उन्होंने यूसुफ को चाँदी के बीस टुकड़ों में इश्माएलियों के हाथ बेच दिया, जिन्होंने उसे मिस्र ले जाकर फिरौन के एक अधिकारी, पोतीपर को बेच दिया। यूसुफ के कारण परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर आशीष दी। पोतीपर की पत्नी ने युसुफ से पाप करवाना चाहा, परन्तु यूसुफ उसके जाल में नहीं फँसा, क्योंकि वह धर्मी था। इस कारण क्रोधित होकर उसने यूसुफ को कैदखाने में डलवा दिया। परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ रहे। उन्हीं दिनों फिरौन ने एक स्वप्न देखा, जिसका अर्थ केवल यूसुफ ही बता सका। यूसुफ से प्रसन्न होकर फिरौन ने उसे मिस्र देश का प्रधान मंत्री बना दिया। सुकाल के सात वर्षों में यूसुफ ने हर नगर में बहुतायत से अन्न इकट्ठा करके रखा। उसके पश्चात पूरी दुनिया में सात वर्ष भयंकर अकाल के पड़े। सभी देशों के लोग अन्न खरीदने के लिए मिस्र देश आने लगे, जिनमें यूसुफ के भाई लोग भी थे। यूसुफ ने उनकी आवश्यकतानुसार उन्हें अन्न देकर भेज दिया। दूसरी बार जब यूसुफ के भाई लोग अन्न खरीदने आए, तब यूसुफ ने स्वयं को उन पर प्रकट कर दिया। फिर उसने अपने पिता याकूब और परिवार के अन्य सदस्यों को मिस्र लाने के लिए गाड़ियाँ भेजीं। जब याकूब को पता चला कि उसका प्रिय पुत्र जीवित है, तब वह बहुत आनंदित हुआ और अपने पूरे परिवार को लेकर, जो सत्तर लोग थे, याकूब मिस्र जाने के लिए निकल पड़ा और गोशेन देश में जाकर बस गया।

सत्रह वर्षों के बाद याकूब अपनी मृत्यु-शैय्या पर था, और उसके पुत्र उसके चारों ओर थे। याकूब ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके भविष्य के बारे में उन्हें बताया। यहूदा के विषय में याकूब ने कहा, ''जब तक शीलो* न आए, तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा।''

प्रभु यीशु का जन्म दाऊद के वंश में, यहूदा गोत्र में हुआ। जिस

---

*''शीलो'' अर्थात् उत्तराधिकारी। स्पष्टत: यह मसीहा के आगमन को दर्शाता है। जैसे लेवी गोत्र को याजक पद दिया गया, वैसे ही यहूदा गोत्र को राजपद दिया गया।

प्रकार यूसुफ को उसके भाइयों ने बेच दिया, उसी प्रकार प्रभु यीशु का उनके अपने ही लोगों ने तिरस्कार किया। जिस प्रकार यूसुफ ने अकाल से अपने लोगों को बचाया, उसी प्रकार प्रभु यीशु पाप और दण्ड से हमें बचाते हैं। युसुफ के पास जो भी खाली हाथ गए, वे बोरे भरकर अन्न लेकर लौटे। उसी प्रकार जो लोग प्रभु यीशु के पास जाते हैं; वे स्वर्गीय आशीषों की भरपूरी के साथ लौटते हैं। क्या आज आप प्रभु के पास आएँगे? प्रभु यीशु शीघ्र ही राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु होकर आएँगे।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों के गोत्र के मुखिया कौन बने? वे कितने थे?
2. यूसुफ कैसे मिस्र पहुँचा?
3. यूसुफ वहाँ का प्रधान मंत्री कैसे बना?
4. इस्राएली लोग कैसे मिस्र पहुँचे और वहाँ बस गए?
5. प्रभु यीशु और यूसुफ के बीच हम कैसे तुलना कर सकते हैं?

वचन पढ़ें :

सोम. उत्पत्ति 12:1-9

मंगल. उत्पत्ति 21:1-11

बुध. उत्पत्ति 25:24-34

बृहस्पति. उत्पत्ति 28:1-22

शुक्र. उत्पत्ति 32:1-16

शनि. उत्पत्ति 32:17-32

पाठ–3

मिस्र में दासता

निर्गमन 1:6–22

मुख्य बिंदु :

यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया। (1 तीमु. 1:15)।

याद करें :

तब उसने उनको कष्ट के द्वारा दबाया, वे ठोकर खाकर गिर पड़े, और उनको कोई सहायक न मिला। तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने सकेती से उनका उद्धार किया। (भजन 107:12–13)।

पाठ :

यूसुफ और उसके सब भाई और उस पीढ़ी के सब लोगों की मृत्यु हो गई। परन्तु इस्राएल की सन्तान फूलने–फलने लगी, और वे लोग अत्यंत सामर्थी बनते चले गए, और इतना अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया। तब एक नया राजा गद्दी पर बैठा, जो यूसुफ को नहीं जानता था। इस्राएलियों की सामर्थ्य के कारण मिस्री उनसे डरते थे। उन्हें लगा कि युद्ध होने पर वे शत्रु राजा से मिल जाएँगे। अतः उन्होंने इस्राएलियों से बेगारी करवाई और उन्हें दुःख दिया और पितोम और रामसेस नामक भण्डारवाले नगरों को बनवाया। जितना अधिक मिस्री उनको दुख देते गए, उतना अधिक वे गिनती में बढ़ते गए। परन्तु उनका जीवन बहुत दुःखी हो गया था।

मिस्र के राजा ने शिप्रा और पूआ नामक दो इब्री धाइयों को आज्ञा दी कि लड़कों को पैदा होते ही मार डाला करो और लड़कियों को जीवित रहने दो। परन्तु वे धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, इस कारण उन्होंने राजा की आज्ञा नहीं मानी। इसलिए इस्राएली लोग और

बढ़ गए और सामर्थी हो गए। परमेश्वर ने उन धाइयों को आशीष दी क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का भय माना। अब फिरौन ने एक नई आज्ञा निकाली कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों, वे सब नील नदी में डाल दिए जाएँ। इस आज्ञा से इस्राएलियों का जीवन और भी कष्ट से भर गया।

उन्होंने अपने पिता इब्राहीम के परमेश्वर की दोहाई दी और परमेश्वर ने उन्हें उनके कष्टों से छुड़ाया। इसी प्रकार परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र प्रभु यीशु को इस संसार में भेजा, ताकि जो पापी लोग शैतान की दासता में हैं उन्हें छुड़ाएँ।

फिरौन शैतान की तस्वीर है और मिस्र इस संसार को चित्रित करता है।

प्रश्न :

1. मिस्र का राजा फिरौन क्यों इस्राएलियों से भयभीत था?
2. फिरौन ने इस्राएलियों को किस प्रकार कष्ट दिए?
3. फिरौन ने उनकी संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए क्या उपाय किए?
4. फिरौन किसकी तस्वीर है?
5. मिस्र किसकी तस्वीर है?

पाठ–4

मूसा

निर्गमन, अध्याय 2

मुख्य बिंदु :

मूसा भी परमेश्वर के सारे घर में विश्वासयोग्य था। (इब्रा. 3:2)।

याद करें :

विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर, फिरौन को बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगना अधिक उत्तम लगा। (इब्रा. 11:24–25)।

पाठ :

फिरौन ने आज्ञा दी कि इस्राएलियों के लड़कों को पैदा होते ही नील नदी में फेंक दिया जाए। लेवी गोत्र के एक पुरुष अम्राम ने अपने ही गोत्र की योकेबेद से विवाह किया (निर्गमन 6:20)। उनके एक सुंदर पुत्र उत्पन्न हुआ और उन्होंने उसे तीन महीने तक छिपा कर रखा। जब वह उसे और छिपा न सके, तब उसके लिए सरकंडों की एक टोकरी लेकर उस पर चिकनी मिट्‌टी और राल लगाई, और उसमें बालक को रखकर नील नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़कर आए। उस बालक की बहिन (मरियम) दूर खड़ी रही कि देखें कि बालक के साथ क्या होगा। तब फिरौन की बेटी नहाने के लिए नदी के किनारे आई। जब उसने कांसों के बीच वह टोकरी देखी तो उसने अपनी दासी को उसे ले आने के लिए भेजा। जब उसने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है तब उसे तरस आया और उसने कहा, ''यह तो किसी इब्री का बालक होगा।'' तब बालक की बहिन ने फिरौन की बेटी से कहा, ''क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला कर लाऊँ, जो तेरे लिए बालक को दूध पिलाए?'' उसकी सहमति पाकर

मरियम गई और बालक की माता को बुला लाई। फिरौन की बेटी ने उससे कहा, ''तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिए दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी।'' तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। (कहा जाता है कि फिरौन की बेटी के पास अपनी संतान नहीं थी।) जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने लगा। और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, कि मैंने इसको पानी में से निकाला था।

मूसा अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में अपने ही घर में पला था, इस कारण उसका सच्चे परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास बना और उसने उन वायदों के बारे में जाना जो उसके अपने लोगों ने परमेश्वर से प्राप्त किए थे। बाद में मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह वचन और कर्म दोनों में सामर्थी हो गया। (प्रेरितों 7:22)।

जब मूसा 40 वर्ष का हुआ तब उसने अपने भाइयों के कष्टों को देखा और चाहा कि उनकी सहायता करे।

एक दिन उसने देखा कि एक मिस्री जन उसके एक इब्री भाई को मार रहा है, तो उसने उस मिस्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया। अगले दिन दो इब्री पुरुषों को आपस में मार पीट करते देखकर मूसा ने अपराधी से कहा, ''तू अपने भाई को क्यों मारता है?'' उसने कहा, ''किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस तरह तू ने मिस्री को मार डाला, उसी तरह क्या तू मुझे भी मार डालना चाहता है?'' तब मूसा यह सोचकर डर गया कि उसकी बात खुल गई है, और वह मिद्यान देश में जाकर रहने लगा। हम देखते हैं कि मूसा के लिए परमेश्वर का समय नहीं आया था कि वह इस्राएलियों को छुड़ाए। उसे मिद्यान के जंगलों में रहकर परमेश्वर की वाणी को सुनने और सीखने की आवश्यकता थी।

प्रश्न :

1. मूसा के माता-पिता कौन थे?

2. उन्होंने उसे क्यों छिपाया?

3. वह कैसे अपने परिवार में रहकर सच्चे परमेश्वर के बारे में सीख सका?

4. वह मिस्र छोड़कर क्यों भाग गया?

5. वह कहाँ जाकर रहा?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 2:1–17

मंगल. निर्गमन 6:14–30

बुध. गिनती 26:57–65

बृहस्पति. इब्रानियों 3:1–14

शुक्र. इब्रानियों 11:17–40

शनि. भजन 136

पाठ-5

मूसा - मिद्यान में

निर्गमन 2:15-25, प्रेरितों के काम 7:20-40

मुख्य बिंदु :

अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। (1 पतरस 5:7)।

याद करें :

इसलिए अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाऊँ। (निर्गमन 3:8)।

पाठ :

मिद्यान देश पहुँचकर मूसा वहाँ एक कुएँ के पास बैठ गया। तब मिद्यान के याजक रूएल की बेटियाँ वहाँ आकर कठौतों में जल भरने लगीं ताकि अपने पिता की भेड़-बकरियों को पिलाएँ। तब चरवाहे आकर उनको हटाने लगे। इस पर मूसा ने खड़े होकर उनकी सहायता की, और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। जब वे घर लौटीं तब उसने उनसे पूछा, ''क्या कारण है कि आज तुम इतनी जल्दी लौट आई हो?'' उन्होंने कहा, ''एक मिस्री पुरुष ने हमको चरवाहों के हाथ से छुड़ाया और हमारे लिए बहुत जल भर के भेड़-बकरियों को पिलाया।'' उनके पिता ने उनसे कहा कि जाओ और उसे भोजन के लिए बुला लाओ। फिर मूसा रूएल* के साथ रहने को तैयार हुआ। उसने अपनी बेटी सिप्पोरा का उससे विवाह कर दिया। उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मूसा ने यह कहकर, कि ''मैं अन्य देश में परदेशी हूँ'' उसका नाम गेर्शोम रखा। इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा की देखभाल की जो फिरौन के पास से भागा

*रूएल का अर्थ है ''परमेश्वर का मित्र''। उसका एक नाम यित्रो भी था। संभवत: यह एक उपाधि थी जो अपने गोत्र के मुखिया होने के कारण उसे मिली थी।

था। अगले 40 वर्षों तक मूसा अपने ससुर की भेड़-बकरियों की देखभाल करता रहा।

एक दिन झुण्ड को चराते हुए मूसा होरेब नामक पर्वत के पास गया। वहाँ उसने एक झाड़ी देखी जो जल रही थी, पर वह भस्म नहीं हो रही थी। मूसा झाड़ी के पास गया। उसने परमेश्वर की आवाज़ सुनी। जलती झाड़ी में से परमेश्वर ने उसे नाम लेकर पुकारा। परमेश्वर ने कहा, ''हे मूसा, इधर पास मत आ और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है!'' तब परमेश्वर ने उससे कहा, ''मैंने अपनी प्रजा के लोगों के कष्टों को देखा है, और परिश्रम करवाने वालों के कारण उनकी जो चिल्लाहट है, उसको भी मैंने सुना है। इसलिए अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ और उस देश से निकालकर एक अच्छे देश में पहुँचाऊँ जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।'' परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए उसे ही फिरौन के पास जाना होगा। जब मूसा ने कहा, कि वे लोग उसकी बात नहीं सुनेंगे तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''तेरे हाथ में जो लाठी है, उसे भूमि पर डाल दे'' जब मूसा ने अपनी लाठी भूमि पर डाली तब वह सर्प बन गई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''हाथ बढ़ा कर उसकी पूँछ पकड़ ले।'' जब मूसा ने उसकी पूँछ पकड़ी तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई। फिर परमेश्वर ने उससे कहा, ''अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप।'' तब मूसा ने वैसा ही किया, और जब उसे निकाला तब देखा कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान सफेद हो गया है। तब परमेश्वर ने कहा, ''अपना हाथ फिर से छाती पर रख कर ढाँप।'' तब मूसा ने फिर से अपना हाथ ढाँपा, और फिर जब उसे निकाला तब उसने देखा कि वह फिर से सारी देह के समान हो गया है। फिर परमेश्वर ने कहा, ''यदि वे इन दोनों चिह्नों का विश्वास न करें, और तेरी बात न मानें, तब तू नील नदी में से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना, और वह लहू बन जाएगा।'' मूसा ने परमेश्वर से कहा, ''हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ।'' उसने फिर कहा, ''हे

मेरे प्रभु, कृपया किसी और को तू भेज।'' तब यहोवा का क्रोध मूसा पर भड़का और उसने कहा, ''क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है? वह तुझ से मिलने के लिए निकला आता है। वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा।'' तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा ताकि उससे विदा ले सके। अपनी पत्नी और पुत्रों को लेकर मूसा मिस्र को लौट गया।

* क्या हम भी मूसा की तरह बहाने बनाते हैं, जब परमेश्वर अपनी सेवा के लिए हमें बुलाते हैं?

प्रश्न :

1. परमेश्वर के द्वारा नियुक्त समय से पहले मूसा ने जब अपने भाइयों को बचाना चाहा, तब क्या हुआ?
2. परमेश्वर ने मूसा की सहायता कैसे की जब वह मिस्र से भागा?
3. मूसा कितने वर्ष मिद्यान में रहा?
4. परमेश्वर ने मूसा को मिस्र भेजने के लिए कैसे बुलाया?
5. परमेश्वर ने मूसा को कौन-कौन से चिह्न दिए?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 2:15-25

मंगल. निर्गमन 3:1-22

बुध. निर्गमन 4:1-17

बृहस्पति. निर्गमन 4:18-31

शुक्र. प्रेरितों 7:1-19

शनि. प्रेरितों 7:20-48

पाठ-6

मिस्र पर विपत्तियाँ

निर्गमन, अध्याय 5-11

मुख्य बिंदु :

हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर के लिए, जैसा वह हमसे कहेगा, वैसा ही बलिदान करेंगे। (निर्ग. 8:27)।

याद करें :

इब्रियों का परमेश्वर तुम से इस प्रकार कहता है; मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि मेरी उपासना करें। (निर्गमन 9:1)।

पाठ :

मूसा और हारून ने फिरौन से कहा कि वह इस्राएलियों को जाने दे ताकि वे जंगल में परमेश्वर के लिए पर्ब्ब करें। फिरौन ने कहा, ''यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।''

फिर फिरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवाने वालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को यह आज्ञा दी, ''तुम जो अब ईंट बनाने के लिए लोगों को पुआल* दिया करते थे, वह आगे को न देना। वे आप ही जाकर अपने लिए पुआल इकट्ठा करें। तौभी जितनी ईंटें अब तक उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उनसे बनवाना। जब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी, तब वे जान गए कि उनके संकट के दिन आ गए हैं। उन्होंने मूसा और हारून से शिकायत की। मूसा और हारून इस विषय को परमेश्वर के पास ले गए।

परमेश्वर ने उनसे कहा, ''मैं यहोवा हूँ, और मैं तुमको मिस्रियों के अपनी बोझों के नीचे से निकालूँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर मिस्रियों

* मिट्टी के साथ पुआल मिलाने पर ईंटें अधिक मजबूत बनती थीं।

को भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा। और जिस देश के देने का वायदा किया था उसमें तुम्हें पहुँचाऊँगा।'' ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाईं, परन्तु उन्होंने मन की बेचैनी और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी न सुनी।

मूसा और हारून ने फिरौन के पास जाकर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया। हारून ने अपनी लाठी फिरौन के आगे डाल दी तब वह अजगर बन गई। तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी डाल दीं और वे भी अजगर बन गईं। परन्तु हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। परन्तु फिरौन का मन और हठीला हो गया और उसने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।

तब अपने वचन के अनुसार परमेश्वर ने न्याय भेजा। फिरौन तब माना जब मिस्रियों पर दस विपत्तियाँ आईं। सवेरे के समय मूसा और हारून अपनी लाठी लेकर नील नदी के किनारे खड़े हुए। जब फिरौन और उसके कर्मचारी वहाँ पहुँचे, तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार अपनी लाठी को उठाकर नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लहू बन गया। नील नदी में जो मछलियाँ थीं वे मर गईं। और लोग पानी पी न सके। मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया। फिरौन का मन फिर से कठोर हो गया और वह अपने घर चला गया।

एक सप्ताह के पश्चात् मूसा ने फिरौन के पास जाकर कहा कि वह इस्राएलियों को मिस्र से जाने दे। परन्तु राजा ने इंकार कर दिया। तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढ़कों से मिस्र देश भर गया। मिस्र के जादूगर भी अपने तंत्र-मंत्रों से उसी प्रकार मेंढ़क ले जाए। यह दूसरी विपत्ति थी। फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, ''यहोवा से विनती करो कि वह मेंढ़कों को दूर कर दें और मैं इस्राएलियों को जाने दूँगा।'' तब मूसा और हारून ने परमेश्वर की दोहाई दी, और सारे मेंढ़क मर गए। परन्तु जब फिरौन ने देखा कि विपत्ति टल गई है, तब उसने अपने मन को कठोर कर लिया और इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।

तीसरी विपत्ति के लिए हारून ने अपना हाथ बढ़ाया और लाठी से भूमि की धूल पर मारा और मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियाँ हो गईं। मिस्र के जादूगरों ने भी ऐसा करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे नहीं कर सके। फिर भी फिरौन ने अपने मन को कठोर किया और इस्राएलियों को जाने न दिया। चौथी विपत्ति में डांसों के झुण्ड से देश भर गया। परेशान होकर फिरौन ने कहा, कि तुम लोग इसी देश में रहकर अपने परमेश्वर के लिए बलिदान करो। परन्तु मूसा इस बात से सहमत नहीं हुआ।

पाँचवीं विपत्ति में मिस्रियों के सारे पशु मर गए परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा। छटवीं विपत्ति में मनुष्यों और पशुओं के शरीर पर फफोले और फोड़े हो गए। परन्तु फिरौन ने अपने मन को कठोर किया और उन्हें जाने न दिया। सातवीं विपत्ति में परमेश्वर ने मिस्र देश पर ऐसे ओले बरसाए जिनमें आग मिली हुई थी। मिस्र भर के खेतों में मनुष्य व पशु मर गए और सारी उपज नष्ट हो गई।

मूसा ने फिरौन को चेतावनी दी कि अगली विपत्ति में टिड्डियाँ आएँगी। फिरौन के कर्मचारियों ने भी फिरौन से विनती की, कि इस्राएलियों को जाने दे ताकि देश बचाया जाए। फिरौन ने कहा, ''केवल पुरुष ही जाकर परमेश्वर की उपासना करो।'' मूसा ने कहा, ''हम तो बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन् बच्चों से बूढ़ों तक सबके सब जाएँगे।'' इस कारण वे फिरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए। मूसा ने मिस्र के ऊपर अपनी लाठी बढ़ाई और परमेश्वर ने देश पर पुरवाई बहाई और उस पुरवाई में टिड्डियाँ आईं और वे सारी धरती पर छा गईं। उन्होंने मिस्र देश का सारा अन्न, वृक्षों के फल और जो कुछ ओलों से बचा था, सबको उन्होंने चट कर लिया। तब फिरौन ने तुरन्त मूसा और हारून को बुलवा के कहा, ''अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो कि वह मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे।'' मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने बहुत प्रचण्ड पश्चिमी हवा बहाकर टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया। तौभी, यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया, जिससे उसने इस्राएलियों को जाने न दिया।

नौवीं विपत्ति आई जब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया।

सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अंधकार छाया रहा। परन्तु सारे इस्राएलियों के घर में उजियाला रहा। फिरौन का मन फिर भी कठोर ही रहा। अपने लोगों को पूरी तरह से छुटकारा दिलवाने के लिए परमेश्वर ने मिस्र पर एक और महाविपत्ति भेजी। आधी रात को परमेश्वर के दूत ने निकलकर फिरौन के और मिस्र के हर एक परिवार के पहिलौठे को मार डाला। मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचा। फिरौन ने रात ही को मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, ''तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ।'' अत: इस्राएली जल्दी से निकल गए। उन्होंने अपने गुंधे-गुंधाए आटे को बिना खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बाँधकर अपने-अपने कन्धे पर डाल लिया। उन्होंने मिस्रियों से उनके सोने चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लिए और मिस्रियों ने वह सब उन्हें दे दिया। तब इस्राएली रामसेस से कूच करके चले और उनमें पुरुष ही छ: लाख थे।

बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर की वाणी को बार-बार सुनकर भी अपने मन को कठोर कर लेते हैं। ''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो'' (इब्रा. 3:8)।

प्रश्न :

1. मिस्र देश पर कौन-कौन सी विपत्तियाँ आईं?
2. फिरौन ने लोगों को जाने से कैसे रोका?
3. मिस्र के जादूगरों ने कौन-कौन से आश्चर्यकर्म किए?
4. मिस्रियों पर आया अंतिम न्याय कौन सा था?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन 6:1-30
मंगल.	निर्गमन 7:1-24
बुध.	निर्गमन 8:1-32
बृहस्पति.	निर्गमन 9:1-24
शुक्र.	निर्गमन 10:1-29
शनि.	निर्गमन 11:1-10

पाठ-7

फसह

निर्गमन, अध्याय 12

मुख्य बिंदु :

1. हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है। (1 कुरि. 5:7)।
2. बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं। (इब्रा. 9:22)।

याद करें :

जिन घरों में तुम रहोगे, उन पर वह लोहू तुम्हारे लिए चिह्न ठहरेगा, अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुमको छोड़ जाऊँगा। जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब विपत्ति तुम पर न पड़ेगी। (निर्गमन 12:13)

पाठ :

लोहू के द्वारा छुटकारा प्राप्त होना, नए नियम का एक सत्य है। पुराने नियम के इस अध्याय में हमें इस सत्य की तस्वीर मिलती है। अतः निर्गमन 12 ''छुटकारे का अध्याय'' कहलाता है। मिस्र में परमेश्वर का वचन मूसा और हारून के पास पहुँचा। परमेश्वर ने कहा, ''यह महीना तुम लोगों के लिए आरम्भ का महीना ठहरे। अर्थात् वर्ष का पहला महीना ठहरे। और इस्राएल की सारी मण्डली से कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने-अपने परिवार के अनुसार एक-एक मेम्ना ले रखो। और यदि किसी के परिवार में कम लोग हों तो अपने सबसे निकट रहने वाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे। तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और एक वर्ष का नर हो। उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रखना, और उस दिन शाम के समय इस्राएल की सारी मंडली के लोग उसे बलि करें। तब वे उसके लोहू में से कुछ लेकर अपने घर के द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएँ। वे उसके मांस को उसी रात आग में भूनकर अखमीरी रोटी और कड़वे साग पात के

साथ खाएँ। यदि उसमें से कुछ सवेरे तक रह जाए तो उसे आग में जला देना। उसके खाने की विधि यह है, कि कमर बाँधे, पाँव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना, वह तो यहोवा का पर्ब्ब होगा। क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊँगा और मनुष्य और पशुओं के पहिलौठों को मारूँगा। और तुम्हारे घरों पर वह लोहू तुम्हारे लिए चिह्न ठहरेगा। मैं उस लोहू को देखकर तुमको छोड़ जाऊँगा। वह दिन तुमको स्मरण दिलाने वाला ठहरेगा और तुम उसको यहोवा के लिए पर्ब्ब करके मानना, वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्ब्ब माना जाए।''

''वायदे के देश'' में पहुँचने के बाद भी इस्राएलियों को यह पर्ब्ब मनाना था। उन्हें अपने बच्चों को भी यह सिखाना था, कि किस प्रकार परमेश्वर ने मिस्रियों को दण्ड दिया परन्तु इस्राएलियों के घर लांघ गए। यह ''फसह का पर्व'' (लांघ जाने का पर्व) कहलाता है। फसह का मेम्ना मारा गया जिससे इस्राएलियों ने छुटकारा प्राप्त किया। फसह का मेम्ना, प्रभु यीशु की तस्वीर है (1 कुरि. 5:7)। क्रूस पर प्रभु यीशु की मृत्यु पर विश्वास करने वाले को दण्ड से छुटकारा प्राप्त होता है। परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7) अतः अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। (रोमियो 8:1)।

प्रश्न :

1. निर्गमन का कौन सा अध्याय ''छुटकारे का अध्याय'' कहलाता है?
2. फसह के मेम्ने में क्या गुण होने चाहिए थे?
3. उसको खाने की विधि क्या थी?
4. मृत्यु के दूत से बचने के लिए इस्राएलियों ने क्या किया?
5. हमारा फसह का मेम्ना कौन है?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 12:1-20

मंगल.	निर्गमन 12:21–51
बुध.	निर्गमन 13:1–10
बृहस्पति.	निर्गमन 13:11–22
शुक्र.	भजन 106:1–20
शनि.	भजन 106:21–48

पाठ-8

मिस्र से निर्गमन

निर्गमन 12:29-51

मुख्य बिंदु :

परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। (गलातियों 1:3-4)।

याद करें :

- उनके जाने से मिस्री आनंदित हुए। भजन (105:38)।
- यहोवा तुमको वहाँ से अपने हाथ के बल से निकाल लाया। (निर्गमन 13:3)।

पाठ :

मिस्र पर आई दसवीं विपत्ति सबसे भयंकर थी जिसमें फिरौन से लेकर बंधुए तक सभी के पहिलौठे मार डाले गए।

फिरौन समझ गया था कि यह दण्ड परमेश्वर की ओर से है। उसके अपने बेटे की मृत्यु इस बात का प्रमाण था। अत: उसने रात को ही मूसा और हारून को बुलवाया और लोगों को जाने की अनुमति दे दी। और कहा ''मुझे आशीर्वाद दे।'' (निर्गमन 12:32)।

परमेश्वर की आज्ञानुसार इस्राएली मिस्र से निकल गए और समुद्र के सामने डेरे खड़े किए।

जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि इस्राएली लोग भाग गए, तब फिरौन का मन बदल गया। उसने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना और छ: सौ रथों पर सरदारों सहित इस्राएलियों का पीछा किया। जब इस्राएलियों ने फिरौन और उसकी सेना को देखा तब वे अत्यंत डर गए और उन्होंने मूसा से कहा, ''क्या मिस्र में कब्रें नहीं थीं,

जो तू हमको वहाँ से मरने के लिए जंगल में ले आया है? मूसा ने लोगों से कहा, ''डरो मत, खड़े-खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिए करेगा। जिन मिस्रियों को आज तुम देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। यहोवा आप ही तुम्हारे लिए लड़ेगा, इसलिए तुम चुपचाप रहो।''

मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की। परमेश्वर ने कहा कि इस्राएलियों से कहो कि यहाँ से आगे बढ़ें। तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञानुसार अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और समुद्र दो भाग हो गया और उसके बीच सूखी भूमि हो गई। इस्राएली लोग समुद्र के बीच स्थल पर होकर चले। तब फिरौन के सब घोड़े, रथ और सवार उनका पीछा करते हुए समुद्र के बीच में चले गए। जब सारे इस्राएली पार उतर गए तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और समुद्र फिर ज्यों का त्यों हो गया। जल के पलटने से रथ और सवार और फिरौन की सारी सेना समुद्र में डूब गई। जब इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र तट पर मरे पड़े हुए देखा तब उन्होंने परमेश्वर का भय माना और परमेश्वर पर और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया। फिरौन और उसकी सेना से छुड़ाए जाने के कारण इस्राएली अत्यंत खुश थे। तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिए स्तुति का गीत गाया। इस्राएलियों को मिस्र से पूर्ण छुटकारा प्राप्त हो चुका था। उसी प्रकार उद्धार प्राप्त परमेश्वर के बच्चे को संसार से पूर्ण रूप से अलग होना चाहिए।

प्रश्न :

1. परमेश्वर क्यों चाहते थे कि इस्राएली लोग मिस्र को छोड़ दें?
2. मिस्र से निकलने के पश्चात् उन्होंने कहाँ डेरे खड़े किए? वहाँ कौन सी समस्या आई?
3. परमेश्वर ने उस संकट से उन्हें कैसे छुड़ाया?
4. इस्राएलियों के द्वारा लाल समुद्र को पार करना हमें कौन सा आत्मिक पाठ सिखाता है?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन 14:1–14
मंगल.	निर्गमन 14:15–31
बुध.	इब्रा. 11:1–12
बृहस्पति.	इब्रा. 11:13–40
शुक्र.	इब्रा. 12:1–17
शनि.	इब्रा. 12:17–29

पाठ-9

मारा और एलीम

निर्गमन 15:22-27

मुख्य बिंदु :

यहोवा का धन्यवाद करना भला है, हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना। (भजन 92:1)।

याद करें :

तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भाग वाले पहाड़ पर बसाएगा। यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तूने अपने निवास के लिए बनाया, और वही पवित्रस्थान है, जिसे हे प्रभु, तूने आप ही स्थिर किया है। (निर्गमन 15:17)।

पाठ :

इस्राएलियों ने आराधना के गीत तब गाए जब मिस्र से उनका छुटकारा हो गया। उसी प्रकार एक उद्धार पाया हुआ व्यक्ति ही प्रभु के लिए अर्थपूर्ण स्तुति गा सकता है। इस्राएलियों को छुटकारे का अद्‌भुत अनुभव प्राप्त हुआ और उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया। अत: उन्होंने विजय का गीत गया। ''यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है; फिरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया; उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए; हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है; देश-देश के लोग सुनकर काँप उठेंगे; यहोवा सदा-सर्वदा राज्य करता रहेगा।'' (निर्गमन 15:1-18)।

लाल समुद्र से आगे यात्रा करके इस्राएली लोग शूर नाम जंगल में पहुँचे। तीन दिन उस जंगल की यात्रा करने पर भी उन्हें पीने के लिए पानी नहीं मिला। उन्होंने मूसा के विरुद्ध बकबक करके पूछा, ''हम क्या पीएं?'' मारा नामक स्थान पर पानी मिला जो कड़वा था, और उसे वे पी न सके। इस कारण उस स्थान का नाम मारा (कड़वा) पड़ा। तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी और यहोवा ने उसे एक पौधा बता दिया,

जिसे मूसा ने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया।

मारा से चलकर इस्राएली लोग एलीम पहुँचे। वहाँ पर पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे। और वहाँ उन्होंने जल के पास डेरे खड़े किए। एलीम मात्र एक मरुद्यान है, जो वायदे का देश कनान नहीं था। उन्हें मारा के बाद एलीम का अनुभव प्राप्त हुआ। कष्ट के बाद अति आनंद का अनुभव होता है। इस संसार का जीवन आनंद और दुःख से भरपूर है। जब लाज़र की मृत्यु हुई थी तब मार्था और मरियम रोए थे। परन्तु जब प्रभु ने उसे जीवित किया तब वे अति आनंद से भर गए। तूफान आ सकते हैं परंतु उसके पश्चात् शांति आती है। ''विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।'' (रोमियों 1:17) हम प्रार्थना करें, ''हे प्रभु, हमारा विश्वास बढ़ा।'' (लूका 17:5)।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों ने विजय का गीत कब गाया?
2. इस्रालियों ने कहाँ पर मीठा पानी पीया? और पानी मीठा कैसे हुआ?
3. एलीम में उन्हें क्या मिला?
4. ''मारा के बाद एलीम'' हमें क्या पाठ सिखाता है?
5. एलीम का अनुभव हमें क्या शिक्षा देता है?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 15:1-14.

मंगल. निर्गमन 15:15-17

बुध. भजन 19:1-14

बृहस्पति. भजन 78:1-25

शुक्र. भजन 78:26-50

शनि. भजन 78:50-72.

पाठ-10

मन्ना

निर्गमन, अध्याय 16

मुख्य बिंदु :

और उनके लिए खाने को मन्ना बरसाया, और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। (भजन. 78:24)।

याद करें :

तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं। वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं। (भजन 119:103)।

पाठ :

मरुभूमि की यात्रा के दौरान इस्राएलियों का भोजन मन्ना था। सब्त के दिन को छोड़कर, हर सुबह, चालीस वर्षों तक उनके विश्वस्त परमेश्वर की ओर से वह आता रहा। इस्राएलियों के लगातार कुड़कुड़ाने के बावजूद उनके कनान पहुँचने तक उन्हें मन्ना प्राप्त होता रहा। जिस दिन उन्होंने उस देश की उपज में से खाया उसी दिन सवेरे मन्ना बन्द हो गया था। (यहोशू 5:12)। निर्गमन 16 में उस घटना का वर्णन है जब भोजन उपलब्ध न होने पर इस्राएली लोग मूसा और हारून के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे। इसके बावजूद भी उनके प्रति परमेश्वर का प्रेम कम नहीं हुआ। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वर्ग खोला और उनके लिए मन्ना बरसाया। भूमि पर छोटे-छोटे छिलके पाले के किनकों की तरह पड़े थे, जिन्हें देखकर उन्होंने आपस में कहा कि यह क्या है। फिर उन्होंने उसे मन्ना कहा अर्थात् ''यह क्या है?'' वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद शहद से बने पूए के समान था। बाद में इस मन्ना में से कुछ लेकर सोने के पात्र में रखकर वाचा के संदूक में रखा गया।

अपनी आवश्यकता के अनुसार हर एक इस्राएली ने मन्ना बटोरा। यह कार्य सुबह करना होता था क्योंकि सूरज निकलने पर यह पिघल

जाता था। उनसे कहा गया था कि वे 'मन्ना' को अगले दिन तक रखे न रहें। परन्तु जिन्होंने आज्ञा न मानकर उसे रखे रहे, तो उसमें कीड़े पड़ गए, और वह बसाने लगा। गिनती के ग्यारहवें अध्याय में हम पढ़ते हैं कि कैसे इस्राएलियों ने मन्ना को तुच्छ समझा। उन्होंने कहा, "हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे। और वे खीरे और खरबूजे, और गन्दने और प्याज और लहसुन भी। परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है। यहाँ पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी नहीं है।" (गिनती 11:5-6)। इस संसार में हमें प्रभु यीशु मसीह के अलावा और क्या चाहिए? वह जीवन की रोटी हैं। (यूहन्ना 6:35)।

गिनती 21:5 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों ने कहा, "यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु:खित हैं।" यद्यपि वे मिस्र से निकल चुके थे, फिर भी मिस्र उनके मनों में बसा हुआ था। इस कारण परमेश्वर का दण्ड उन पर आया। यहोवा ने उन लोगों में तेज विष वाले साँप भेजे; जो उनको डसने लगे। बहुत से इस्राएली मर गए। परमेश्वर के लोगों को संसार से प्रेम नहीं करना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो।" (1 यूहन्ना 2:15)।

"मन्ना" प्रभु यीशु की तस्वीर

मन्ना	प्रभु यीशु मसीह
• स्वर्ग से आया।	• स्वर्ग से आए।
• शारीरिक पोषण के लिए भोजन, आकार में छोटा।	• आत्मिक पोषण के लिए भोजन, एक नम्र सेवक।
• गोलाकार, धारदार किनारों के बगैर।	• पापरहित।
• भूमि पर बिखरा हुआ।	• पृथ्वी पर आए।
• स्वाद में मीठा, पाले के समान भूमि पर पड़ा हुआ, पीसा गया।	• अति प्रिय और मधुर, पवित्रात्मा के द्वारा उत्पन्न, मसीह ने दु:ख उठाया और मृत्यु सही।

• सुलभ और भूख मिटाने वाला।	• ढूँढ़ने वालों के निकट, और आत्मिक भूख मिटाने वाला।
• वायदे के देश में पहुँचने तक उनका भोजन।	• स्वर्ग पहुँचने तक परमेश्वर की संतानों का भोजन।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों का भोजन क्या था? आज परमेश्वर के लोगों का भोजन क्या है?
2. मन्ना का रंग, आकार और स्वाद कैसा था?
3. ''मन्ना'' शब्द का क्या अर्थ है?
4. परमेश्वर ने इस्राएलियों के डेरों में साँप क्यों भेजे?
5. ''मन्ना प्रभु यीशु की तस्वीर है'' इस पर टिप्पणी करें।

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 16:1–18

मंगल. निर्गमन 16:19–36

बुध. निर्गमन 11:1–15

बृहस्पति. निर्गमन 21:1–13

शुक्र. निर्गमन 119:97–112

शनि. निर्गमन 119:113–128

पाठ–11

चट्टान-जिसे मारा गया

निर्गमन 17:1-7; गिनती 20:1-13

मुख्य बिंदु :

और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। (1 कुरि. 10:4)।

याद करें :

हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूँगा। सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। (भजन 63:1)।

पाठ :

इस्राएलियों ने सीनै जंगल से कूच किया और रपीदीम पहुँचकर वहाँ अपने डेरे खड़े किए। परन्तु वहाँ उनको पीने का पानी न मिला। इसलिए वे मूसा से वाद-विवाद करके कहने लगे, ''हमें पीने का पानी दे।'' उन्होंने मूसा से कहा, ''तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिए मिस्र से क्यों ले आया है?'' तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी और यहोवा परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले, और जिस लाठी से तूने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल। देख, मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा, और तू उस चट्टान पर मारना। तब उसमें से पानी निकलेगा, जिस से यह लोग पीएँ।'' मूसा ने परमेश्वर की आज्ञानुसार किया। और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा क्योंकि उस स्थान पर इस्राएलियों ने वाद-विवाद किया और परमेश्वर की परीक्षा की।

मसीह वह चट्टान है जिसे मारा गया। चट्टान में से निकला पानी जीवन के जल का प्रतीक है। यदि चट्टान पर मारा न होता तो पानी नहीं आता। हमारा प्रभु भी मारा गया, और उसे यातनाएँ दी गईं और उसे पाप बलि बनाया गया। परन्तु प्रभु विजयी हुए, क्योंकि वे मृत्यु को हराकर जीवित हो गए। अब जीवन का जल हमारे लिए उपलब्ध है।

इस्राएलियों की यात्रा के अंतिम चरण में वे कादेश नामक स्थान पर आए। वहाँ पर भी उन्हें पीने के लिए पानी नहीं मिला। लोग मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए, और मूसा से झगड़ने लगे। उन्होंने कहा, ''तुम यहोवा की मंडली को इस जंगल में क्यों ले आए हो कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाएँ? यहाँ तो बीज, या अंजीर, या दाखलता या अनार, कुछ भी नहीं है। यहाँ तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।'' तब मूसा और हारून मिलापवाले तंबू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। यहोवा ने मूसा से कहा, ''उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी।'' मूसा और हारून ने मंडली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया। तब मूसा ने उससे कहा, ''हे दंगा करने वालों, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिए जल निकालना होगा?'' तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी; और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मंडली के लोगों ने अपने पशुओं समेत उसमें से पीया। परंतु मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी थी, क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि चट्टान से बातें करना, परंतु मूसा ने उसे दो बार मारा था। इस कारण परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा, ''तुमने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया; इसलिए तुम इस मंडली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे, जिसे मैंने उन्हें दिया है।'' इससे यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं कर सकते, चाहे वह हमारी दृष्टि में कितना भी छोटा हो।

पानी, पवित्र आत्मा का भी प्रतीक है। वचन कहता है ''जो मुझ पर विश्वास करेगा, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह

निकलेंगी। उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे।'' (यूहन्ना 7:37-39)।

पौलुस कहते हैं, ''और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे। (1 कुरि. 10:4)।

कादेश में परमेश्वर ने मूसा से कहा था कि चट्टान से बातें कर, और वह जल देगी। परन्तु मूसा ने अपने क्रोध में उस चट्टान पर दो बार मारा। चट्टान जिसे एक बार मारा गया था, उसे दोबारा मारे जाने की आवश्यकता नहीं थी। हमारे प्रभु ने हमारे लिए एक बार कष्ट उठाया, उसके बाद पवित्र आत्मा संसार में आए। प्रभु के वायदे के अनुसार पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा पृथ्वी पर आए। अब वे विश्वासियों को पोषण और सामर्थ देते हैं। पवित्र आत्मा के आने के लिए फिर से प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा सदैव हमारे साथ हैं, और हम सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होंगे जिसका जल कभी नहीं सूखता। (यशायाह 58:11)।

''यीशु युगों की चट्टान,
तू है उत्तम रक्षा स्थान,
तेरे छिदे पंजर से,
लहू, जल जो बहे थे,
मेरे पाप को धोते हैं,
हर कलंक को खोते हैं।''

प्रश्न :

1. रपीदीम में इस्राएलियों ने किस समस्या का सामना किया?
2. मूसा से झगड़ा करके उन्होंने उसके विरुद्ध क्या कहा?
3. प्रभु ने उन्हें पीने के लिए पानी कैसे दिया?
4. चट्टान किसका चित्रण है?
5. परमेश्वर ने मूसा और हारून को उस वायदे के देश में प्रवेश करने का सौभाग्य प्रदान क्यों नहीं किया?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन 17:1–16
मंगल.	निर्गमन 18:1–13
बुध.	निर्गमन 18:14–27
बृहस्पति.	निर्गमन 20:1–14
शुक्र.	निर्गमन 20:15–29
शनि.	1 कुरि. 10:1–17

पाठ–12

दस आज्ञाएं

निर्गमन, अध्याय 19–20; 32

मुख्य बिंदु :

क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिंब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती। (इब्रानियों 10:1)।

याद करें :

क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)।

पाठ :

रपीदीम से कूच करके इस्राएली लोग आगे चलकर सीनै पहुँचे। वहाँ सीनै पर्वत के आगे छावनी डाली। तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, ''इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना; कि तुमने देखा है कि मैंने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा जिन धन ठहरोगे। समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।'' तब मूसा ने आकर ये सब बातें उनको समझा दीं। और सब लोग मिलकर बोल उठे, ''जो कुछ यहोवा ने कहा है, वह सब हम नित करेंगे।'' तब परमेश्वर ने आज्ञा दी कि लोग अपने आप को पवित्र करें और तीसरे दिन तक तैयार हो जाएं। तीसरे दिन परमेश्वर आग में होकर सीनै पर्वत पर उतर आए। तीसरे दिन बादल गरजने और बिजली चमकने लगी। और पर्वत पर काली घटा छा गई। फिर नरसिंगे का बड़ा

भारी शब्द हुआ। सीनै पर्वत धूएँ से भर गया। परमेश्वर ने मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया, और मूसा ऊपर चढ़ गया। वहाँ परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएँ दीं। उसके अलावा परमेश्वर ने अन्य नियम भी दिए। परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएं लिखी हुई पत्थर की दो तख्तियाँ दीं, जो परमेश्वर का लिखा हुआ था। मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

दस आज्ञाएँ

1. **मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।**
2. **तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना।**
3. **तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।**
4. **तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।**
5. **तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।**
6. **तू खून न करना।**
7. **तू व्यभिचार न करना।**
8. **तू चोरी न करना।**
9. **तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।**
10. **तू लालच न करना।**

जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है, तब वे हारून के पास इकट्ठे होकर कहने लगे, ''अब हमारे लिए देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चले। क्योंकि उस पुरुष मूसा को, जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया है, हम नहीं जानते कि क्या हुआ।'' हारून ने उनसे कहा, ''तुम्हारी स्त्रियों और बेटे-बेटियों के कानों में जो बालियाँ हैं, उन्हें उतारो, और मेरे पास ले आओ।'' तब सब लोगों ने

बालियों को उतारा और हारून के पास ले आए। हारून ने उससे एक बछड़ा ढालकर बनाया, और टाँकी से गढ़ा। हारून ने उसके आगे एक वेदी बनवाई, और यह प्रचार किया, ''कल यहोवा के लिए 'पर्ब्ब होगा।'' लोगों ने खाया पीया और उठकर खेलने लगे। तब मूसा साक्षी देने वाली पत्थर की दोनों तख्तियों को लेकर पहाड़ से उतर गया। छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना दिखाई दिया। तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उसने तख्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला। फिर उसने उस बछड़े को लेकर आग में डालकर फूँक दिया। और पीसकर चूर-चूर कर दिया, और पानी में मिलाकर इस्राएलियों को पिला दिया। अपने विरोधियों के बीच उपहास का कारण बने इस्राएली लोग बहुत निरंकुश हो गए थे। उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा, ''जो कोई यहोवा की ओर का है, वह मेरे पास आए।'' तब सारे लेवीय उसके पास इकट्ठे हुए। मूसा की आज्ञानुसार लेवियों ने अपनी तलवार ली और छावनी के एक निकास से दूसरे निकास तक घूम घूमकर लोगों को घात किया। और उस दिन तीन हज़ार के लगभग इस्राएली मारे गए।

मिस्री लोग बछड़े की आराधना करते थे। उद्धार प्राप्त करने के पश्चात् जो लोग फिर से पाप में जीवन व्यतीत करते हैं वे सूअरनी के समान होते हैं जो कीचड़ पसंद करती है। (2 पतरस 2:22)। व्यवस्था के मिलने पर तीन हज़ार लोग मारे गए। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का संसार में आने पर तीन हज़ार लोगों ने उद्धार प्राप्त किया और कलीसिया में जोड़े गए। (प्रेरितों. 2:41)।

प्रश्न :

1. सीनै पहुँचने पर मूसा के द्वारा लोगों को क्या आज्ञा मिली?
2. लोगों ने क्या उत्तर दिया?
3. परमेश्वर के द्वारा दी गई दस आज्ञाएँ कौन सी हैं?
4. व्यवस्था किस काल के लिए दी गई थी?

5. जब मूसा को पर्वत से उतरने में विलंब हुआ तब इस्राएलियों की छावनी में क्या हुआ?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 19

मंगल. निर्गमन 20

बुध. निर्गमन 21

बृहस्पति. निर्गमन 22

शुक्र. निर्गमन 23

शनि. निर्गमन 24

पाठ–13

निवासस्थान–1

निर्गमन 27:1–19

मुख्य बिंदु :

देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमश्वेर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। (प्रका. 21:3)।

याद करें :

क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ। (मत्ती 18:20)।

पाठ :

जब मूसा सीनै पर्वत पर था, तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''वे मेरे लिए एक पवित्रस्थान बनाएँ कि मैं उनके बीच निवास करूँ।''

परमेश्वर ने मूसा को निवास स्थान बनाने के लिए विस्तृत निर्देश भी दिए। यह एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जा सकने वाला निवास स्थान था, क्योंकि इस्राएली लोग यात्रा कर रहे थे। सुलैमान के द्वारा परमेश्वर का मंदिर बनाए जाने तक यह अस्तित्व में रहा।

इस निवासस्थान (Tabernacle) का निर्माण, लोगों के द्वारा स्वेच्छा से दी गईं भेंटों से किया गया। आवश्यकता से अधिक भेंट मिलने के कारण मूसा ने लोगों से कहा कि अब वे लोग और भेंट न लाएँ। परमेश्वर की योजना और नमूने के अनुसार मूसा ने निवासस्थान बनाया। परमेश्वर ने बसलेल और ओहोलीआब को बुद्धि, प्रवीणता और ज्ञान से भर दिया कि वे निवासस्थान बनाने का कार्य कर सकें।

निवासस्थान के भीतरी भाग के परमपवित्र स्थान (Holiest place) और उसके ऊपर प्रायश्चित का ढकना (Mercy seat) रखा था। उसके

बाद पवित्र स्थान (Holy place) था, और फिर बाहरी आंगन (Outer Court) था।

आंगन : आंगन की लंबाई 100 हाथ की और चौड़ाई 50 हाथ की थी और उसमें 56 खम्भे थे। हर एक खम्भे के लिए पीतल के खाने और चाँदी के कुंडे और पट्टियाँ थीं। चाँदी के कुंडे पर्दों को लटकाने के लिए थे। भजन 84:10 में भजनकार कहता है, ''तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के हज़ार दिन से उत्तम है।'' भजन 64:4 में हम पढ़ते हैं ''क्या ही धन्य है वह, जिसको तू चुनकर अपने समीप आने देता है, कि वह तेरे आंगनों में वास करे।'' आंगन के द्वार के लिए एक पर्दा नीले, बैंजनी, लाल रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बना हुआ था। और वह चार खम्भों से बंधा हुआ था। निवास स्थान में प्रवेश करने के लिए केवल एक ही द्वार था।

द्वार पूर्व दिशा की ओर था। अमीर, गरीब, वृद्ध हो या जवान, सभी को इस द्वार से प्रवेश करना था। यह द्वार बीस हाथ चौड़ा और पाँच हाथ ऊँचा था। यूहन्ना 19:8 में हम पढ़ते हैं कि ''द्वार मैं हूँ, यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा।'' हज़ारों लोगों ने इस द्वार से, जो मसीह है, प्रवेश किया और उद्धार प्राप्त किया। इस द्वार के द्वारा हम मृत्यु से जीवन में प्रवेश करते हैं। अंधकार से ज्योति में प्रवेश करते हैं, और शैतान के राज्य से परमेश्वर की आशीषों में प्रवेश करते हैं।

आंगन में रखी वेदी बलिदान चढ़ाने का स्थान था। हमारा प्रभु वेदी और बलिदान दोनों बन गए। यह स्थान है जहाँ परमेश्वर पापी से मिलते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँचने के लिए वेदी आवश्यक है। वेदी पाँच हाथ लंबी, पाँच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊँची थी। इसके चार सींग थे जो पीतल से मढ़े हुए थे। बलि के पशु को इन सींगों से बांधा जाता था। इसके अतिरिक्त यदि किसी से हत्या हुई हो, तो वह दया पाने के लिए वेदी की सींगों को पकड़ सकता था। (1 राजा 1:50)।

वेदी पर से बलिदान के राख को पीतल की जाली के नीचे रखे

राख उठाने वाले पात्र में इकट्ठा करके छावनी के बाहर किसी पवित्र स्थान में डाला जाता था। ''इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया।'' (इब्रानियों 13:12)। प्रभु यीशु मर गए और गाड़े गए परन्तु तीसरे दिन वे जी उठे। छुटकारे के लिए आवश्यक सभी बातें पूर्ण हुईं। देवदार से बने अपने भव्य महल से भी अधिक राजा दाऊद की अभिलाषा परमेश्वर के भवन के आंगन की थी।

आंगन में रखी दूसरी वस्तु पीतल की हौदी थी। यह वेदी और पवित्र स्थान के बीच में रखी थी। निवासस्थान में प्रवेश करने से पहले याजक इस हौदी के पानी से अपने हाथ और पाँव धोते थे।

हौदी परमेश्वर के वचन की तस्वीर है जो एक दर्पण के समान हमारी अशुद्धताओं को प्रतिबिंबित करता है। जब हम इस संसार में जीवन व्यतीत करते हैं तब यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन रूपी जल से स्वयं को धोएँ। दाऊद की तरह ही हमारी भी प्रार्थना हो-''हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनंत के मार्ग में मेरी अगुआई कर!'' (भजन 139:23-24)

प्रश्न :

1. निवासस्थान बनाने के लिए आवश्यक वस्तुएँ कहाँ से प्राप्त हुई?
2. निवासस्थान के निर्माण में किसने सहायता की?
3. आंगन की लम्बाई और चौड़ाई क्या थी?
4. द्वार कहाँ था? उसका माप क्या था?
5. बलि वेदी के विषय में आपने क्या सीखा?
6. हौदी किस वस्तु की बनी थी?

वचन पढ़ें :

सोम. निर्गमन 25

मंगल.	निर्गमन 26
बुध.	निर्गमन 27
बृहस्पति.	निर्गमन 28
शुक्र.	निर्गमन 29
शनि.	निर्गमन 30

पाठ-14

निवासस्थान-2

(पवित्रस्थान) निर्गमन 30:17-21; 38:8; 40:7

मुख्य बिंदु :

तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। (1 पत. 2:5)।

याद करें :

क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। (इब्रानियों 9:13-14)।

पाठ :

निवासस्थान दो भागों में बँटा हुआ था। बड़ा भाग पवित्रस्थान कहलाता था और दूसरा भाग परमपवित्र स्थान कहलाता था। पवित्रस्थान में भेंट की रोटियों की मेज़, सोने का दीवट और धूप की वेदी रखी थी। मेज़ पर रखी बारह अखमीरी रोटियाँ प्रभु यीशु की तस्वीर है, जो हमारे जीवन की रोटी है। सोने को ढलवाकर दीवट बनाया गया उसकी एक अलंग से तीन डालियाँ और दूसरी अलंग से तीन डालियाँ निकली थीं। सातों डालियों के ऊपर तेल से जलने वाले दीवट थे। निवासस्थान में इसी दीवट का प्रकाश होता था। यह पवित्र आत्मा की तस्वीर है, जो मसीह की महिमा करता है। (यूहन्ना 16:14)। यह मसीह को दिखाता है, जो जगत की ज्योति हैं (यूहन्ना 8:12)। चोखा सोना भी मसीह के दिव्य स्वभाव को दिखाता है। धूप की वेदी बबूल की लकड़ी से बनी थी, जो प्रभु ने मनुष्यत्व और ईश्वरत्व को दिखाता है। 'धूप' प्रभु के व्यक्तित्व

की सुगंध को चित्रित करता है। यह उस आराधना को भी दिखाता है, जो सुखदायक सुगंध के रूप में परमेश्वर के पास पहुँचता है।

हारून के पुत्र प्रतिदिन यहाँ पर सेवाकार्य करते थे। याजक के अलावा और कोई भी वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता था। इस्राएली लोगों की पहुँच केवल आंगन तक ही थी। वे अपने बलिदान लेकर पीतल की वेदी तक आ सकते थे। परन्तु पवित्रस्थान में रखे धूप की वेदी तक नहीं जा सकते थे। आज विश्वासी लोग परमेश्वर के याजक हैं जिनकी पहुँच पवित्रस्थान तक है। इस्राएल में, मात्र लेवी गोत्र के लोगों को ही याजक पद प्राप्त होता था। लेवी गोत्र के लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी इस सौभाग्य का आनंद प्राप्त किया। नए नियम में, उद्धार प्राप्त करने के द्वारा जो परमेश्वर के परिवार में जन्म लेते हैं, उन्हें याजकपद का यह सौभाग्य प्राप्त होता है। पतरस कहते हैं-

''तुम एक चुना हुआ वंश, और राज पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।'' (1 पतरस 2:9)।

निवासस्थान के द्वार के पाँच खम्भे थे जो सोने से मढ़े हुए थे। द्वार पर नीले, बैंजनी, और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी वाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ पर्दा था। याजकों का उत्तरदायित्व था कि वे धूप की वेदी पर धूप जलाएँ, दीवट को जलाएँ और भेंट की रोटी खाएँ और उसके स्थान पर ताजी बनी रोटियाँ रखें। दाऊद ने चाहत भरे दिल से कहा, ''एक वर मैंने यहोवा से माँगा है उसी के यत्न में लगा रहूँगा, कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ।'' (भजन 27:4)।

हमारा शरीर परमेश्वर का मंदिर है। यह मिट्टी का बरतन है। हम जो परमेश्वर की संतान हैं, हमारी महान आशा और विश्वास है कि जब यह नाशवान शरीर नाश हो जाएगा, तब हमें एक आत्मिक शरीर प्राप्त होगा जो अविनाशी होगा। (2 कुरिन्थियों 5:1)।

प्रश्न :

1. पवित्र स्थान में क्या-क्या वस्तुएँ थीं?
2. उनमें हम नए नियम के कौन से सत्यों के विषय में सीखते हैं?
3. पवित्रस्थान में प्रवेश करने की अनुमति किसे थी?
4. नए नियम के युग में कौन लोग याजक हैं? और उनके क्या उत्तरदायित्व हैं?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन 31
मंगल.	निर्गमन 32
बुध.	निर्गमन 33
बृहस्पति.	निर्गमन 34
शुक्र.	निर्गमन 35
शनि.	निर्गमन 36

पाठ–15

पवित्रस्थान

निर्गमन 30: 1-10; 25:23-40

मुख्य बिंदु :

तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। (1 पतरस 2:5)।

याद करें : क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू, जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। (इब्रानियों 9:13-14)।

पाठ :

पवित्रस्थान में रखी वस्तुओं में से एक ''धूप की वेदी'' भी थी। यह बबूल की लकड़ी से बनी थी और इसके चारों ओर सोने की बाड़ बनी हुई थी। बलि की वेदी बबूल की लकड़ी और पीतल से बनी हुई थी परन्तु धूप की वेदी बबूल की लकड़ी और सोने से बनी हुई थी। पीतल की वेदी पर लगातार बलि चढ़ाई जाती थी और धूप की वेदी पर धूप अनवरत जलाया जाता था। पीतल की वेदी इस बात का प्रतीक है कि हमारे प्रभु ने स्वयं को हमारे लिए बलिदान स्वरूप दे दिया। धूप की वेदी हमें जी उठे प्रभु का स्मरण दिलाती है। बबूल दिखाता है कि प्रभु यीशु मनुष्य हैं, और सोना प्रदर्शित करता है कि प्रभु यीश मसीह परमेश्वर का पुत्र हैं जो अपनी स्वर्गीय महिमा में हैं। निवासस्थान में, सोना कभी भी बाहर नहीं रखा गया। प्रभु यीशु मसीह इस संसार में मनुष्य के रूप में दास बनकर रहे। परन्तु उसी समय वे सामर्थी परमेश्वर भी थे। धूप

की वेदी के चारों तरफ सोने की एक बाड़ बनी हुई थी। ''पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठारने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं।'' (इब्रानियों 2:9)। हर सुबह हारून धूप की वेदी पर सुगंधित धूप जलाया करता था। (निर्गमन 30:7)। ''इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।'' (इब्रा. 13:15)।

धूप की वेदी पर सुगंधित धूप जलाया जाता था। परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार चार प्रकार के सुगंध द्रव्य तैयार किए जाते थे। उसके अलावा किसी और प्रकार का धूप जलाने की अनुमति नहीं थी, और न ही कोई व्यक्ति अपने उपयोग के लिए उस प्रकार का धूप बना सकता था। यदि कोई ऐसा करता तो उसे मृत्यु दंड मिलता था। धूप जलाने के लिए बलि वेदी पर की आग का उपयोग किया जाता था। उसी प्रकार, नए नियम के विश्वासियों की आराधना में मसीह का क्रूस ही केंद्र बिंदु होना चाहिए। मनुष्यों के द्वारा बनाए गए रीति रिवाज़ों का कोई स्थान नहीं।

दूसरी वस्तु भेंट की रोटी की मेज़ थी। यह दो हाथ लंबी, एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची थी। यह बबूल की लकड़ी की बनी थी। यह सोने से मढ़ी हुई थी और इसके चारों ओर सोने की पटरी बनी हुई थी। और इस पटरी के चारों और सोने की एक बाड़ बनी हुई थी। भेंट की रोटियाँ प्रतिदिन इस पर रखी जाती थीं जो मैदे से बनी होती थीं। प्रति विश्राम दिन को उसे ताज़ी रोटियों से बदल दिया जाता था। जो रोटियाँ हटाई जाती थीं, वह याजकों को खाना होता था। ''पराए कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाने पाए।'' (लैव्यव्यवस्था 22:10)। प्रत्येक सब्त के दिन याजक लोग मेज़ के पास इकट्ठे होकर पुरानी रोटियों को हटाते और ताज़ी बनी रोटियों को मेज़ पर रखते थे। प्रभु यीशु के शिष्य भी सप्ताह के पहले दिन इकट्ठे होकर रोटी तोड़ते और प्रभु को स्मरण करते थे। पवित्रस्थान में रखी तीसरी वस्तु दीवट था। सोना ढलवाकर वह दीवट पाये और डण्डी सहित बना था। उसके पुष्पकोष, गाँठ और फूल सब एक ही टुकड़े से बने थे। उसकी एक अलंग से तीन डालियाँ और

दूसरी अलंग से तीन डालियाँ और बीच में एक डाली बनी थी। एक-एक डाली में बादाम के फूल के समान तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गाँठ और एक-एक फूल बने हुए थे। उसके गुलतराश और गुलदान सब चोखे सोने से बने हुए थे।

प्रभु यीशु मसीह ''जीवन'' हैं। वह ''प्रकाश'' भी हैं। हम ज्योति की संतान हैं। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के सदस्यों और प्रभु के बीच के पवित्र संबंध को यह दीवट प्रकट करता है। यह संबंध अटूट और अनंतकाल तक का है। इस दीवट में जलपाई का निर्मल तेल डाला जाता था। यह विश्वासियों का पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूर्ण होने को प्रकट करता है। अंधकार से भरे इस संसार में दीवट का स्थान महत्वपूर्ण है। हमें इस अंधकारपूर्ण संसार में प्रकाश फैलाना है।

प्रश्न :

1. पवित्र स्थान में कौन-कौन सी वस्तुएँ रखी थीं?
2. धूप की वेदी किससे बनी थी?
3. धूप की वेदी से हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?
4. भेंट की रोटी की मेज़ किसे चित्रित करती है?
5. दीवट में डाला जाने वाला जलपाई का निर्मल तेल किसे चित्रित करता है?
6. चोखे सोने को ढालकर बनाया गया दीवट किसके बीच के संबंध को दिखाता है?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन 37
मंगल.	निर्गमन 38
बुध.	निर्गमन 39
बृहस्पति.	निर्गमन 40
शुक्र.	लैव्यव्यवस्था 1
शनि.	लैव्यव्यवस्था 2

पाठ–16

परमपवित्रस्थान

निर्गमन 25:10–22; 26:31–33

मुख्य बिंदु :

सो हे भाइयो, जबकि हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उस ने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है। और ऐसा इसलिए कि हमारा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है तो आओ हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलाकर परमेश्वर के समीप जाएँ। (इब्रानियों 10:19–22)।

याद करें :

मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे। (इब्रानियों 9:24)

पाठ :

परमेश्वर की उपस्थिति वाला परमपवित्र स्थान एक परदे के द्वारा पवित्रस्थान से अलग किया हुआ था। यह परदा बटी हुई सनीवाले और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बना हुआ था। यह सोने से गढ़े हुए बबूल की लकड़ी के चार खंभों पर लटका हुआ था।

परमपवित्र स्थान में साक्षीपत्र का सन्दूक और प्रायश्चित का ढकना था। यह संदूक बबूल की लकड़ी से बना था और भीतर–बाहर चोखे सोने से मढ़ा हुआ था। सन्दूक के ऊपर चारों ओर सोने की बाड़ बनी हुई थी। इसके चारों कोनों में एक–एक कड़े लगे हुए थे। बबूल की लकड़ी के बने, सोने से मढ़े हुए दो डण्डे थे जिन्हें इन कड़ों में

डालकर सन्दूक को उठाया जाता था। उन्हें कभी भी कड़ों में से निकाला नहीं जाता था। व्यवस्था की पटियाएँ और हारून की छड़ी और मन्ना से भरा एक पात्र इस संदूक के भीतर रखे गए। बबूल की लकड़ी प्रभु यीशु की मानवता को, सोना प्रभु के ईश्वरत्व को दिखाता है। साक्षीपत्र का संदूक, वाचा का संदूक भी कहलाता है।

इस संदूक का ऊपरी ढकना चोखे सोने से बना हुआ था जिसे प्रायश्चित का ढकना कहते हैं। उसके ऊपर दो करूब सोने को ढालकर बनाए गए, जिनके मुख आमने सामने प्रायश्चित के ढकने की ओर थे। प्रायश्चित के ढकने ने साक्षीपत्र के संदूक को ढाँप रखा था। इस ढकने के ऊपर परमेश्वर की उपस्थिति थी। संदूक में रखी वस्तुएँ हमें इस्राएलियों के अपराध, बुड़बुड़ाने और विद्रोह का स्मरण दिलाती हैं। और जिस प्रकार प्रायश्चित के ढकने ने उन सबको ढाँप रखा था उसी प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापों और अपराधों को ढाँप देता है।

पर्दे के फटने तक परमेश्वर की उपस्थिति महायाजकों से भी छिपी हुई थी। वर्ष में एक बार महायाजक अपने और लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए पापबलि का लहू लेकर परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था। हमारे प्रभु ने भी जब छावनी से बाहर दुख उठाया, और ''पूरा हुआ'' कहकर अपने प्राण त्यागे, तब मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया। आज संतों को यह स्वतंत्रता मिली है कि हियाव के साथ परमपवित्र स्थान में प्रवेश करें और परमेश्वर की आराधना करें।

प्रश्न :

1. परमपवित्र स्थान, पवित्रस्थान से किस प्रकार अलग किया गया था?
2. पर्दा किस वस्तु से बनाया गया था?
3. मंदिर का परदा कब फटा? यह किस बात का संकेत था?
4. साक्षीपत्र का संदूक कैसे बनाया गया था? उसके अंदर क्या-क्या वस्तुएँ थीं?
5. प्रायश्चित का ढकना किस प्रकार बनाया गया था? महायाजक कब और कैसे परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता था?

वचन पढ़ें :

सोम.	लैव्य.	3
मंगल.	लैव्य.	4
बुध.	लैव्य.	5
बृहस्पति.	लैव्य.	6
शुक्र.	लैव्य.	7
शनि.	लैव्य.	8

पाठ-17

पुराने नियम के याजकपद

गिनती अध्याय 4, 8

मुख्य बिंदु :

सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। (इब्रानियों 4:14)।

याद करें :

परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं। और बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (इब्रानियों 9:11-12)।

पाठ :

निवासस्थान का निर्माण समाप्त होने पर परमेश्वर ने अपनी याजकीय सेवा के लिए लेवी गोत्र को चुना। लेवी गोत्र क्यों चुना गया? जब मूसा सीनै पर्वत पर से वाचा की पटियाएँ लेकर उतरा, तब उसे सोने के बछड़े की आराधना का कोलाहल सुनाई दिया। उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा, ''जो कोई यहोवा की ओर का हो, वह मेरे पास आए।'' तब सारे लेवीय उसे पास इकट्ठे हुए। उन्होंने मूसा की आज्ञा के अनुसार उन लोगों को मार डाला जो मूर्तिपूजा में निरंकुश हो गए थे। उस दिन तीन हज़ार लोग मारे गए। लेवीयों ने परमेश्वर के लिए तत्परता दिखाई। परमेश्वर ने उन्हें याजकीय सेवा के लिए चुन लिया। तथापि, केवल हारून के पुत्र ही याजक थे। अन्य लोग ''लेवीय'' थे जो निवासस्थान के अन्य कार्य करते थे।

1 पतरस 2:9 में हम पढ़ते हैं कि विश्वासी लोग राजपदधारी याजकों का समाज है। अतः प्रभु की सेवा के लिए हमें स्वयं को पवित्र रखना है। पौलुस कहते हैं, ''हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।'' (2 कुरि. 7:1)। पुराने नियम के याजक हारून के क्रम के अनुसार होते थे। प्रभु यीशु के आगमन से वह क्रम समाप्त हो गया। प्रभु हमारे महायाजक हैं (इब्रा. 6:20)।

प्रभु यीशु का याजकपद मलिकिसिदक के क्रम में है (भजन 110:4; इब्रा. 6:20; 7:17)। हमारे प्रभु का जन्म यहूदा के गोत्र में हुआ था, लेवी गोत्र में नहीं। अतः उनका याजकपद पूरी तरह से एक नए क्रम में है। विश्वासी लोग प्रभु की संतान होने के कारण याजक हैं। ''तुम एक चुना हुआ वंश और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।'' (1 पतरस 2:9)।

प्रश्न :

1. लेवी गोत्र, याजक पद के लिए क्यों चुना गया?
2. प्रभु यीशु का याजकपद किस के क्रम अनुसार है?
3. हारून के क्रम के अनुसार जो याजकपद था कब समाप्त हुआ?
4. हमारा महायाजक कौन है?
5. नए नियम के अनुसार याजक के रूप में हमारा सेवाकार्य क्या है?

वचन पढ़ें :

सोम.	लैव्यव्यवस्था	9
मंगल.	लैव्यव्यवस्था	10
बुध.	लैव्यव्यवस्था	11
बृहस्पति.	लैव्यव्यवस्था	12
शुक्र.	लैव्यव्यवस्था	13
शनि.	लैव्यव्यवस्था	14

पाठ-18

जंगल के युद्ध

निर्गमन 17:8-16; गिनती 21:21-35

मुख्य बिंदु :

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और माँस से नहीं परंतु प्रधानों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:12.)।

याद करें :

प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत बनो। (इफि. 6:10)।

पाठ :

अमालेकियों से युद्ध :

एलीम में इस्राएली लोग शांति का आनंद उठा रहे थे। परंतु उन्हें आगे बढ़ना ही था। अपनी आगे की यात्रा में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब वे रपीदीम पहुँचे तब अमालेकी लोग आकर उनसे लड़ने लगे। अमालेकी एसाव के वंशज थे और इसलिए इस्राएलियों से उनका रिश्ता था। तब मूसा ने यहोशू से कहा, ''हमारे लिए कई पुरुषों को चुनकर छाँट ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिए हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।'' मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा। और मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था, तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था, परन्तु जब-जब वह उसे नीचे करता, तब तब अमालेक प्रबल होता था। पर जब मूसा के हाथ थक गए, तब उन्होंने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया और हारून और हूर एक एक अलंग में उसके हाथों को सम्भाले रहे, और उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे। और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के

बल से हरा दिया। तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम ''यहोवा निस्सी'' (ईश्वर सहाय) रखा।

एमोरियों से युद्ध :

इस्राएलियों के द्वारा कनान पर कब्जा कर लेने से पहले वहाँ कनानी और एमोरी लोग बसे हुए थे। एमोरी लोग पहाड़ी क्षेत्र में रहते थे जो यरदन के पूर्व की ओर था और कनानी लोग पश्चिम में बसे हुए थे। अर्नोन से यब्बोक नदी तक अम्मोनियों की सीमा थी। एमोरियों का राजा सीहोन था और हेशबोन, राजा का नगर था। इस्राएलियों ने सीहोन से कहा, ''हमें अपने देश में से होकर जाने दे। हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में न जाएँगे, न किसी कुएँ का पानी पीएँगे। और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ, तब तक सड़क ही से चले जाएँगे।'' परंतु सीहोन अपनी सेना को इकट्ठा करके इस्राएलियों से युद्ध करने निकल आया। तब इस्राएलियों ने उनको तलवार से मार दिया और उनके देश को अपने अधिकार में कर के उसमें बस गए।

बाशान के राजा ओग से युद्ध :

अगला राजा जो इस्राएलियों से युद्ध करने आया, वह था बाशान का राजा ओग। इस्राएलियों ने ओग को और उसके सभी पुत्रों को और सेना को मार डाला। (गिनती 21)

मोआबियों से युद्ध :

इस्राएली लोग यात्रा करके अब मोआब पहुँचे और वहाँ उन्होंने अपने डेरे खड़े किए। मोआबी और मिद्यानी लोग अत्यंत भयभीत थे। मोआबी राजा बालाक ने बिलाम के पास यह कहने के लिए दूत भेजे कि आकर इस्राएलियों को शाप दे। राजा बालाक के दूत बिलाम के लिए दक्षिणा लेकर पहुँचे। बिलाम ने उनसे कहा, ''आज रात को यहाँ टिको, और जो बात यहोवा मुझ से कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुमको उत्तर दूँगा।'' परमेश्वर ने बिलाम से कहा, ''तू इनके संग मत जा, उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं।'' सवेरे बिलाम ने मोआबी हाकिमों को वापस भेज दिया।

फिर राजा बालाक ने बिलाम के पास और भी अधिक हाकिम भेजे। बिलाम ने उनसे कहा, ''आज रात यहीं टिके रहो।'' उस रात परमेश्वर ने बिलाम से कहा, ''उठकर उनके संग जा, परंतु जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी के अनुसार करना।'' बिलाम सुबह उठा और अपनी गदही पर काठी बाँधकर, मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा। तब गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिए हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा, तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई। कारण जाने बिना ही बिलाम ने गदही को मारा। यहोवा का दूत फिर एक सकरे स्थान पर खड़ा हुआ, जहाँ से आगे बढ़ने की जगह न थी। अतः गदही बिलाम को लेकर बैठ गई। बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही को लाठी से मारा। तब यहोवा ने गदही का मुँह खोला और वह बिलाम से कहने लगी, ''मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?'' तब परमेश्वर ने बिलाम की आँखें खोली, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिए हुए मार्ग में खड़ा दिखाई दिया। तब वह झुक गया, और मुँह के बल गिरके दण्डवत् की। उसने कहा, ''मैंने पाप किया है, और मैं लौट जाता हूँ।'' यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, ''इन पुरुषों के संग तू चला जा, परन्तु केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँगा।'' तब बिलाम, बालाक के हाकिमों के साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर उसने वेदियाँ बनवाईं और बलि चढ़ाए। फिर इस्राएली लोगों की ओर देखकर बिलाम ने अपनी बात आरंभ की और कहा, ''जिन्हें परमेश्वर ने शाप नहीं दिया उन्हें मैं क्यों शाप दूँ? वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी रहेगी और अन्यजातियों से अलग गिनी जाएगी।'' इस पर बालाक बिलाम से बहुत क्रोधित हुआ। यद्यपि बिलाम ने इस्राएलियो को शाप नहीं दिया, परंतु उसने बालाक को यह सिखाया कि किस प्रकार इस्राएलियों से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करवाए। परिणामस्वरूप बिलाम तलवार से मार डाला गया। (गिनती, अध्याय 22-25; गिनती 31:8,16)। नए नियम में बिलाम का उल्लेख मिलता है : (2 पतरस 2:15-16, यहूदा 11 और प्रकाशितवाक्य 2:14)।

इस्राएलियों को हार और जीत का मिला-जुला अनुभव था। जब भी

वे परमेश्वर के वचन से दूर हुए तब उन्हें असफलता प्राप्त हुई। परन्तु जब भी उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास करके उनके वचन का पालन किया, उन्होंने विजय प्राप्त की। विश्वासियों को अपने शत्रु से युद्ध करने के लिए परमेश्वर के हथियार बाँधना होगा। (इफि 6:11)।

प्रश्न :

1. अमालेकियों का इस्राएलियों से क्या रिश्ता था?
2. अमालेकियों को हराने के लिए मूसा ने क्या तरीका अपनाया?
3. इस्राएलियों का दूसरा और तीसरा युद्ध किसके साथ था?
4. किन दो राजाओं को इस्राएलियों ने पराजित किया?
5. बिलाम ने इस्राएिलयों को शाप देने के बदले आशीष क्यों दी?

वचन पढ़ें :

सोम.	गिनती 20
मंगल.	गिनती 21
बुध.	गिनती 22
बृहस्पति.	गिनती 23
शुक्र.	गिनती 24
शनि.	गिनती 25

पाठ–19

मूसा के अंतिम दिन

गिनती 12; 20:1; 23–29; व्यवस्थाविवरण 34:1–3

मुख्य बिंदु :

यहोवा ने उससे कहा, ''जिस देश के विषय में मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूँगा, वह यही है। मैंने इसको तुझे साक्षात् दिखला दिया है, परन्तु तू पार होकर वहाँ जाने न पाएगा।'' (व्यवस्था. 34:4)।

याद करें :

मूसा पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। (गिनती 12:3)।

पाठ :

गिनती के अंतिम कुछ अध्यायों में इस्राएलियों की यात्रा के अंतिम दिनों का वर्णन है। मूसा और हारून की बहन मरियम की मृत्यु कादेश की मरुभूमि में ही हो गई थी, और वह वायदे के देश में न जा सकी। अपने लोगों की तरह ही आरंभ में उसका व्यवहार सही था, परंतु कुछ समय के पश्चात् मूसा के विरुद्ध बोलने वालों में वह आगे थी। उसके ऊपर दण्ड आया और वह कोढ़ से पीड़ित हो गई। उसे सात दिनों के लिए छावनी से बाहर रहना पड़ा।

कादेश पहुँचने पर इस्राएलियों को पीने के लिए पानी नहीं मिला। तब उन्होंने मूसा और हारून के विरुद्ध बलवा किया। मूसा और हारून ने परमेश्वर से प्रार्थना की, और परमेश्वर ने उत्तर दिया, ''तुम और हारून हाथ में उस छड़ी को ले लेना और प्रजा को इकट्ठा कर लेना। लोगों के देखते, तुम उस चट्टान से बातें करना, तब वह अपना जल देगी। इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिए जल निकाल कर मंडली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।'' यहोवा की इस आज्ञा

के अनुसार मूसा ने परमेश्वर के सम्मुख रखी लाठी को ले लिया।

परंतु मूसा ने क्रोध से भरकर लाठी दो बार चट्टान पर मारी और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मंडली के लोगों ने अपने पशुओं समेत पीया। परन्तु मूसा और हारून से परमेश्वर ने कहा कि उनके गलत कार्य के कारण वे उस देश में प्रवेश नहीं कर पाएँगे, जिसका वायदा परमेश्वर ने अपनी प्रजा से किया था उस स्थान का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि यह वह स्थान था जहाँ इस्राएलियों ने परमेश्वर से झगड़ा किया था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया। (भजन 106:33)। यद्यपि मूसा ने परमेश्वर से विनती की, कि उसे यरदन के पार जाने दे, परन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''तू उस यरदन के पार जाने न पाएगा।'' परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यहोशू इन लोगों की अगुआई करेगा और उन्हें पार ले जाएगा। परमेश्वर अपनी सन्तानों को दण्ड देते हैं, यदि वे परमेश्वर की आज्ञा तोड़ते हैं।

इस्राएली लोगों ने कादेश से कूच किया और होर नामक पहाड़ के पास पहुँचे। वहाँ परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''हारून और उसके पुत्र एलीआज़ार को होर पहाड़ पर ले चल; और हारून के वस्त्र उतार के उसके पुत्र एलीआज़ार को पहिना; तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में जा मिलेगा।'' यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया, और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब इस्राएल के सब घराने के लोग उसके लिए तीस दिन तक रोते रहे। महायाजक के रूप में हारून, प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक था। क्योंकि प्रभु यीशु मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। (इब्रानियों 7:17)।

फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर जो पिसगा की एक चोटी है, चढ़ गया; और यहोवा ने उसको वहाँ से कनान देश दिखाया और कहा, ''जिस देश के विषय में मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर कहा था कि मैं इसे तेरे वंश को दूँगा, वह यही है। मैंने इसको तुझे साक्षात् दिखला दिया है, परन्तु तू पार होकर वहाँ जाने न पाएगा।'' तब यहोवा का दास मूसा वहीं मोआब देश में मर गया। और

परमेश्वर ने उसे मोआब के देश में बेतपोर के सामने एक तराई में मिट्टी दी, और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहाँ है। मूसा अपनी मृत्यु के समय 120 वर्ष का था, परन्तु न तो उसकी आँखें धुंधली पड़ीं, और न उसका शरीर कमज़ोर हुआ था। इस्राएलियों ने तीस दिन तक मूसा के लिए विलाप किया।

नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे। उसी ने आगे को इस्राएलियों की अगुआई की। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंत में लिखा गया है-"मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिससे यहोवा ने आमने-सामने बातें कीं।"

यहोशू ने इस्राएलियों की अगुआई की, और उन्हें उस देश में पहुँचाया जिसका वायदा परमेश्वर ने उनसे किया था। यहोशू प्रभु यीशु का प्रतीक है। हम विश्वासी लोग अभी वायदे के देश में हैं। हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष प्राप्त है। प्रभु यीशु वह कार्य करने के लिए आए, जो व्यवस्था के द्वारा संभव नहीं था। पुराने नियम के विश्वासियों ने वायदे की पूर्ति को नहीं देखा। उन्होंने उसे केवल दूर से देखा और विश्वास किया। (इब्रानियों 11:13)।

प्रश्न :

1. मरियम का पाप क्या था? उसकी मृत्यु कहाँ पर हुई?
2. हारून की मृत्यु कहाँ हुई? उसके पश्चात् कौन महायजक बना?
3. मूसा वायदे के देश में क्यों नहीं जा सका?
4. मूसा ने कहाँ से कनान देश देखा? मूसा को कहाँ दफनाया गया? किसने मूसा को दफनाया?
5. कौन इस्राएलियों को वायदे के देश में ले गया?
6. यहोशू किसका प्रतीक है?

वचन पढ़ें :

सोम.	व्यवस्थाविवरण 29
मंगल.	व्यवस्थाविवरण 30
बुध.	व्यवस्थाविवरण 31
बृहस्पति.	व्यवस्थाविवरण 32
शुक्र.	व्यवस्थाविवरण 33
शनि.	व्यवस्थाविवरण 34

पाठ-20

परमेश्वर की देखभाल

निर्गमन 13:21-22; 14:19.20; गिनती 9:15-23

मुख्य बिंदु :

उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया। उसने उस के चारों ओर रहकर उस की रक्षा की। और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। (व्यवस्था. 32:10-11)।

याद करें :

सबने एक ही आत्मिक भोजन किया, और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। (1 कुरि. 10:3-4)।

पाठ :

पापियों को उद्धारकर्ता की, गुलामों को छुड़ानेवाले की, और यात्रियों को पथप्रदर्शक की आवश्यकता होती है। हमारे परमेश्वर ने उद्धारकर्ता, छुड़ानेवाला और पथप्रदर्शक के रूप में हमें अपना एकलौता पुत्र दे दिया। हमारी अगुआई करने के लिए उन्होंने हमें पवित्र आत्मा दिया। साथ ही परमेश्वर का वचन हमारे पाँवों के लिए दीपक और हमारे मार्ग के लिए उजियाला है। (भजन 119:105)।

इस्राएली लोगों ने सुक्कोत से कूच करके जंगल की छोर पर एताम में डेरा किया। और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिए मेघ के खंभे में, और रात को उजियाला देने के लिए आग के खम्भे में होकर उनके आगे-आगे उनका अगुआ होकर चलता था। उनकी जंगल यात्रा के 40 वर्षों में परमेश्वर उनके रक्षक और अगुआ रहे। उनकी देखभाल और अगुआई की। इस्राएलियों के साथ मिली-जुली भीड़ भी थी। सब मिलकर कहने लगे, ''हमें मांस खाने को कौन देगा?'' मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की। परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''मैंने लोगों का बुड़बुड़ाना सुना

है। लोगों से कहो, कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे, और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे, और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।'' मूसा ने लोगों से कहा, ''यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना। फिर तुम एक दिन, या दो, या पाँच, या दस, या बीस दिन ही नहीं, परन्तु महीने भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुमको उससे घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है, तुच्छ जाना है।'' तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आंधी आई और वह समुद्र से बटेरें उड़ाकर छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गए। और लोग उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी बटेरों को बटोरते रहे। जिस ने कम से कम बटोरा, उसने दस होमेर बटोरा, और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। मांस उनके मुँह ही में था कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उन को बहुत बड़ी मार से मारा। और उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा पड़ा, जिसका अर्थ है तृष्णा की कबरें। क्योंकि जिन लोगों ने पाप किया था, उनको वहाँ मिट्टी दी गई।

यद्यपि इस्राएलियों ने जंगल में 40 वर्ष बिताए, फिर भी न उनके तन पर वस्त्र पुराने हुए, और न उनकी जूतियाँ पुरानी हुईं। यह परमेश्वर की देखभाल को प्रकट करता है।

फिर इस्राएली लोगों ने लाल समुद्र का मार्ग लिया ताकि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएँ। और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया। इसलिए वे परमेश्वर के और मूसा के विरुद्ध बात करने लगे। अतः यहोवा ने उन लोगों में तेज विष वाले साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। तब मूसा ने उनके लिए प्रार्थना की। यहोवा ने मूसा से कहा, ''एक तेज विष वाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।'' जिस प्रकार मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे

पर चढ़ाया जाए, ''ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन प्राप्त करे।'' (यूहन्ना 3:16)।

प्रश्न :

1. मरुभूमि की यात्रा में परमेश्वर ने किस प्रकार इस्राएलियों की अगुआई की?
2. परमेश्वर ने लालची लोगों को कैसे दण्ड दिया?
3. मरुभूमि की यात्रा में परमेश्वर ने कैसे इस्राएलियों की आवश्यकतापूर्ति की?
4. परमेश्वर ने उनके बीच में ज़हरीले साँपों को क्यों भेजा?
5. साँप से डसे लोगों को बचने के लिए क्या करने को कहा गया?

वचन पढ़ें :

सोम.	निर्गमन–13
मंगल.	निर्गमन–14
बुध.	गिनती–19
बृहस्पति.	गिनती–20
शुक्र.	गिनती–21
शनि.	व्यवस्था–29

पाठ-21

प्रभु यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा

मत्ती 3:13-27

मुख्य बिंदु :

क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके, वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। (इब्रा. 4:15)।

याद करें :

दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'' (यूहन्ना 1:29)।

पाठ :

यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए प्रभु यीशु गलील से यरदन नदी के किनारे पर आए। परन्तु यूहन्ना प्रभु को रोकने लगा, और कहा, ''मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।'' तब यूहन्ना ने प्रभु की बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और यह आकाशवाणी हुई, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।'' चारों सुसमाचारों में प्रभु यीशु के बपतिस्मे का विवरण दिया गया है। (मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22; यूहन्ना 1:29-34) अपने सार्वजनिक सेवाकार्य के लिए प्रभु यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए। प्रभु ने अपने पिता की इच्छा और सेवा को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित किया। बपतिस्मा लेने के द्वारा प्रभु ने यह प्रकट किया कि वे हमारे कुटुंबी हैं। प्रभु पाप रहित थे, परन्तु उन्होंने हमारे पापों को

अपने ऊपर ले लिया और हमारे लिए स्वयं को बलिदान के रूप में दे दिया। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए यह आवश्यक था कि प्रभु यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर हमारे समान बनें।

प्रभु यीशु की परीक्षा

पढ़ें : मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-14; लूका 4:1-13

हमें अंतिम आदम प्रभु यीशु मसीह की परीक्षा की तुलना, प्रथम आदम से करनी चाहिए। प्रथम आदम अपनी महिमा की महान ऊँचाई पर था जहाँ उसे सब जीवित प्राणियों पर अधिकार था, और वह बगीचे के सभी वृक्षों के फल अपनी इच्छानुसार खा सकता था, परन्तु उसे 'भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष' का फल खाना वर्जित था। परन्तु आदम को उसकी पत्नी ने वह फल दिया और उसने वह खाया और उस ऊँचाई से गिर गया। उसने अपनी सभी आशीषें खो दीं। प्रभु यीशु मसीह पाप के अलावा और सब बातों में हमारी तरह बने। वह अपने पिता के आज्ञाकारी थे और सभी परीक्षाओं में विजयी रहे। शैतान चाहता था कि प्रभु यीशु मसीह से ऐसा कार्य करवाए जो परमेश्वर के विरुद्ध हो। पहली परीक्षा पत्थर को रोटी बनाने की थी, जो प्रभु की भूख को तृप्त करने के लिए थी। दूसरी परीक्षा एक आश्चर्यकर्म के द्वारा अपने प्राण की रक्षा करने के लिए थी। तीसरी परीक्षा में शैतान का लक्ष्य था कि प्रभु यीशु मसीह, इस संसार के सरदार को परमेश्वर का स्थान दे। परन्तु प्रभु यीशु ने परमेश्वर के वचन में से उत्तर देकर शैतान को हरा दिया। दूसरी परीक्षा में शैतान ने भी परमेश्वर के वचन में से उद्धृत किया था, परन्तु उसका प्रसंग गलत था। परमेश्वर का वचन उन्हीं लोगों के लिए प्रभावकारी होता है जो उसको मानते हैं। परमेश्वर का वचन हमें प्रेरित करता है कि हम परमेश्वर के जीवित वचन के द्वारा, जो दोधारी तलवार है, शैतान की परीक्षाओं का सामना करें।

हमारे प्रभु यीशु ने तीन प्रकार की परीक्षाओं का सामना किया, जो हैं-शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड। हम भी इस संसार की किसी भी परीक्षा का सामना करने के लिए उस

तरीके का उपयोग कर सकते हैं जो हमारे प्रभु ने किया। ''धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों से की है।'' (याकूब 1:12.)।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु का बपतिस्मा चारों सुसमाचारों में दिया गया है। यह क्या दर्शाता है?
2. प्रभु यीशु का बपतिस्मा हमें क्या दिखाता है?
3. प्रभु ने कौन सी तीन परीक्षाओं का सामना किया?
4. प्रभु यीशु ने उनका सामना कैसे किया?

वचन पढ़ें :

सोम.	मत्ती 3
मंगल.	मत्ती 4
बुध.	लूका 3
बृहस्पति.	लूका 4
शुक्र.	मरकुस 1
शनि.	यूहन्ना 1

पाठ-22

प्रभु यीशु और चेले

मत्ती 4:19-21; लूका 5:1-11; मरकुस 1:16-20; यूहन्ना 1:45-51

मुख्य बिंदु :

यीशु ने उनसे कहा, ''मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुमको मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।'' (मत्ती 4:19)।

याद करें :

हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है, जो उससे प्रेम रखते हैं?'' (याकूब 2:5)।

पाठ :

शैतान ने प्रभु यीशु की परीक्षा की, परन्तु प्रभु पूर्ण रूप से विजयी रहे। अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरंभ में प्रभु ने गलील के तट से कुछ मछुआरों को बुलाया, कि उसके पीछे हो लें। पतरस और उसका भाई अंद्रियास समुद्र में जाल डाल रहे थे। तब प्रभु ने उनसे कहा, ''गहरे में ले चल, और मछलियाँ पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।'' शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, ''हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा, तौभी तेरे कहने से जाल डालूँगा।'' जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछलियाँ घेर लाए, और उनके जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया कि आकर हमारी सहायता करो, और उन्होंने आकर दोनों नावें यहाँ तक भर लीं कि वे डूबने लगीं। यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पाँवों पर गिरा और कहा, ''हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।'' प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''मत डर; अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा।'' और वे अपना सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। कुछ आगे बढ़कर, प्रभु ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना

को, नाव पर जालों को सुधारते देखा और उन्हें बुलाया। वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिए। दूसरे दिन प्रभु यीशु गलील को जा रहे थे और वह फिलिप्पुस से मिले और उससे कहा, ''मेरे पीछे हो ले।'' फिलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। फिलिप्पुस नतनएल से मिला और उससे कहा, ''जिसका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हमको मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र यीशु नासरी है।'' नतनएल ने उससे कहा, ''क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?''

फिलिप्पुस ने उससे कहा, ''चलकर देख ले।'' यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, ''देखो, यह सचमुच इस्राएली है; इसमें कपट नहीं।'' नतनएल ने उससे कहा, ''तू मुझे कैसे जानता है?'' यीशु ने उस को उत्तर दिया, ''इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था।'' नतनएल ने उसको उत्तर दिया, ''हे रब्बी, तू परमेश्‍वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है।'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''मैंने जो तुझ से कहा, कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिए विश्‍वास करता है? तू इससे भी बड़े-बड़े काम देखेगा।'' फिर उससे कहा, ''मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्‍वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।'' (कहा जाता है कि नतनएल ही वह शिष्य था जो बरतुल्मै कहलाता था।)

मत्ती का बुलाया जाना :
(मत्ती 9:9; मरकुस 2:14; लूका 5:27-29)

समुद्र के किनारे एक बड़ी भीड़ से बातें करके प्रभु वापस लौट रहे थे, और लेवी नामक एक चुंगी लेनेवाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, ''मेरे पीछे हो ले।'' तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया। तब लेवी ने अपने घर में उसके लिए

एक बड़ा भोज दिया; और चुंगी लेनेवालों की और अन्य लोगों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे, एक बड़ी भीड़ थी। इस पर फरीसी और उनके शास्त्री उसके चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, ''तुम चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?'' यीशु ने उनको उत्तर दिया, ''वैद्य भले चंगों के लिए नहीं, परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूँ।'' इस लेवी ने अपना नाम मत्ती रखा, और वही पहले सुसमाचार का लेखक है।

इस सेवाकार्य के लिए जिन्हें बुलाया गया, वे विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए थे, जिन्हें छोड़कर वे प्रभु के पीछे हो लिए। उनका जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है, कि प्रभु की बुलाहट पर अपना कार्य छोड़कर प्रभु के पीछे हो लें। उन दिनों में प्रभु यीशु लोगों को व्यक्तिगत रूप से बुलाते थे। आज प्रभु अपने वचन के द्वारा हमें बुलाते हैं, जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं। कभी-कभी परमेश्वर के वचन की शिक्षा के द्वारा अथवा परमेश्वर के दासों के संदेश के द्वारा भी हम परमेश्वर की वाणी सुनते हैं।

यदि हम परमेश्वर की वाणी सुनकर आज्ञा मानते हैं तब परमेश्वर हमारी अगुआई करते हैं। मछुआरे मनुष्यों को पकड़ने वाले बन गए। हमें प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए, और सीखना चाहिए कि किस प्रकार दूसरों को प्रभु के पास लाएँ। प्रत्येक परमेश्वर की संतान को चाहिए कि दूसरों को प्रभु के पास लाए। तथापि, कुछ ही लोग हैं, जिन्हें पूर्ण-कालिक सेवाकार्य के लिए बुलाया गया है। प्रभु हमारी सहायता करें कि हम अपने स्वामी की सेवा में आज्ञाकारी और विश्वस्त पाए जाएँ। (2 पतरस 1:10)।

प्रश्न :

1. प्रभु ने चेलों को क्यों बुलाया?
2. पतरस और उसके भाई अंद्रियास को प्रभु ने कब बुलाया?

3. प्रभु ने नतनएल से क्या कहा?

4. मत्ती प्रभु का शिष्य कैसे बना?

वचन पढ़ें :

सोम.	मत्ती–4
मंगल.	मरकुस–1
बुध.	लूका–5
बृहस्पति.	यूहन्ना–1
शुक्र.	यूहन्ना–2
शनि.	यूहन्ना–3.

पाठ - 23

रोगों पर अधिकार-1

मुख्य बिंदु :

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया, और हमारे ही दुखों को उठा लिया। (यशायाह 53:4)।

याद करें :

जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया। ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया। (मत्ती 8:16-17)।

पाठ :

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में मनुष्यों के साथ घुल-मिल कर रहे, और परमेश्वर को उन पर प्रकट किया। उन्होंने लोगों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी और अपने आश्चर्यकर्मों के द्वारा उन पर परमेश्वर की देखभाल और प्रेम को प्रकट किया। प्रभु यीशु ने कहा, ''मेरे पास जो गवाही है, वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।'' (यूहन्ना 5:36)।

प्रभु यीशु ने अनेकों को चंगा किया और लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाला। यहाँ तक कि प्रभु के वस्त्र के छोर को छूने से एक स्त्री स्वस्थ हो गई। चारों सुसमाचारों में इन आश्चर्यकर्मों का वर्णन दिया गया है। अगले चार पाठों में हम उनके विषय में सीखेंगे।

1. पतरस की सास

पढ़ें : मरकुस 1:29-34

(मत्ती 8:14-15 और लूका 4:38-41)

एक सब्त के दिन प्रभु यीशु कफरनहूम में आए और आराधनालय

में जाकर शिक्षा देने लगे। वहाँ से निकलकर प्रभु याकूब और यूहन्ना के साथ पतरस के घर गए। वहाँ पतरस की सास ज्वर से पीड़ित थी। उन लोगों ने प्रभु को इसके बारे में बताया। प्रभु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उनकी सेवा टहल करने लगी।

2. अधिकारी का पुत्र :

पढ़ें : यूहन्ना 4:46-54

कफरनहूम में राजा का एक कर्मचारी था, जिसका पुत्र बीमार था। वह यह सुनकर कि यीशु गलील में आ गया है, उसके पास गया, और उससे विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे, क्योंकि वह मरने पर था। यीशु ने उससे कहा, ''जा, तेरा पुत्र जीवित है!'' उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया। वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है। उसने उनसे पूछा, कि किस घड़ी वह अच्छा होने लगा? उन्होंने उस से कहा, कल सातवें घंटे में उसका ज्वर उतर गया। जब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ, जिस घड़ी यीशु ने उससे कहा, तेरा पुत्र जीवित है। और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

इस घटना से हम सीखते हैं कि प्रभु यीशु रोगों पर भी अधिकार रखते हैं, चाहे वह रोगी से दूर हों।

3. अड़तीस वर्ष से बीमार मनुष्य :

पढ़ें : यूहन्ना 5:2-14

प्रभु यीशु एक पर्ब्ब के समय यरूशलेम को गए। यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पाँच ओसारे हैं। इनमें बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे। (क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता, वह चंगा हो

जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।) वहाँ एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था। यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' उस बीमार ने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे कुण्ड में उतारे, परन्तु मेरे पहुँचते-पहुँचते दूसरा मुझसे पहले उतर पड़ता है।'' यीशु ने उससे कहा, ''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।'' वह मनुष्य तुरंत चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने-फिरने लगा। फिर एक दिन वह यीशु को मंदिर में मिला, तब प्रभु ने उससे कहा, ''देख, तू तो चंगा हो गया है, फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।''

4. स्त्री, जिसने प्रभु को छुआ :

पढ़ें : मरकुस 5:25-35 (मत्ती 9:20-22; लूका 8:43-48 भी पढ़ें)

प्रभु यीशु आराधनालय के सरदार याईर के घर जा रहे थे क्योंकि उसकी बेटी बहुत बीमार थी। एक बड़ी भीड़ प्रभु के पीछे हो ली। एक स्त्री, जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था, यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया। क्योंकि वह कहती थी, कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी। और तुरंत उसका लहू बहना बंद हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई। यीशु ने तुरंत अपने में जान लिया, कि मुझमें से सामर्थ निकली है, और भीड़ के पीछे फिरकर पूछा, ''मेरा वस्त्र किसने छुआ?'' उसके चेलों ने उससे कहा, ''तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है, कि किसने मुझे छुआ।'' तब उसने उसे देखने के लिए जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच सच कह दिया। उसने उससे कहा, ''पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।''

मसीह पर किया हुआ विश्वास ही बचा सकता है। भीड़ में अनेक लोगों ने अनेक बार प्रभु को छुआ होगा, परन्तु इस स्त्री ने विश्वास के साथ प्रभु को छुआ क्योंकि वह चंगी होना चाहती थी, और वह चंगी हो गई।

प्रश्न :

1. पतरस की सास को क्या हुआ था? स्वस्थ होने पर उसने क्या किया?
2. प्रभु ने अधिकारी के पुत्र को कैसे चंगा किया?
3. अड़तीस वर्ष से बीमार व्यक्ति कैसे स्वस्थ हुआ?
4. विश्वास के द्वारा चंगी होने वाली स्त्री की घटना सुनाएँ।

वचन पढ़ें :

सोम.	यूहन्ना	4
मंगल.	यूहन्ना	5
बुध.	मत्ती	9
बृहस्पति.	लूका	6
शुक्र.	मरकुस	3
शनि.	मरकुस	5

पाठ-24
रोगों पर अधिकार-2

मुख्य बिंदु :

तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह सकेती से उनका उद्धार करता है। वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है। (भजन संहिता 107:19-20)।

याद करें :

तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ। (याकूब 5:16)।

पाठ :

5. कुबड़ी स्त्री :

पढ़ें - लूका 13:10-17

एक सब्त के दिन प्रभु एक आराधनालय में उपदेश कर रहे थे। और एक स्त्री थी, जिसमें अठारह वर्ष से एक दुर्बल करने वाली दुष्टात्मा थी, वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। प्रभु यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, ''हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।'' तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरंत सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। इसलिए कि प्रभु यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, ''छः दिन हैं, जिनमें काम करना चाहिए, सो उन ही दिनों में आकर चंगे होओ, परन्तु सब्त के दिन में नहीं।'' यह सुनकर प्रभु ने उत्तर देकर कहा, ''हे कपटियों, क्या सब्त के दिन तुममें से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? और क्या उचित न था, कि यह स्त्री, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बंधन से छुड़ाई जाती?'' जब प्रभु ने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी भीड़

उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनंदित हुई।

6. एक कोढ़ी :

पढ़ें- मरकुस 1:40-45 (लूका 5:12-14 भी पढ़ें)

प्रभु यीशु जब इस संसार में थे, तब उन्होंने अनेक कोढ़ियों को रोगमुक्त किया। भयंकर रोगों से पीड़ित लोगों को भी प्रभु ने चंगा किया। एक बार एक कोढ़ी ने प्रभु के पास आकर उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर, उससे कहा, ''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।'' प्रभु ने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, ''मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।'' और तुरंत ही उसका कोढ़ दूर हो गया। और वह शुद्ध हो गया। तब प्रभु ने उसे चिताकर उससे कहा, ''देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है, उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो।'' परन्तु वह बाहर जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने और यहाँ तक फैलाने लगा, कि प्रभु यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सके, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहे। और चारों ओर से लोग प्रभु के पास आते रहे।

कोढ़, पाप का प्रतीक है। संपूर्ण मनुष्यजाति इस पाप के कोढ़ से ग्रसित है। केवल प्रभु यीशु ही उन्हें रोगमुक्त कर सकते हैं, क्योंकि वही महान वैद्य हैं। ''परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

7. लकवाग्रस्त मनुष्य :

पढ़ें - मत्ती 9:2-7 (मरकुस 2:3-12; लूका 5:18-26 भी पढ़ें)।

एक बार प्रभु यीशु गलील के एक शहर कफरनहूम में आए। जब लोगों ने सुना कि वह एक घर में है, तो इतने लोग इकठ्ठे हुए कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली। और प्रभु उन्हें वचन की शिक्षा दे रहे थे। और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर प्रभु के पास लाए। परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उस छत को जहाँ प्रभु बैठे थे, खोल दिया, और जब उसे उधेड़

चुके, तो उस खाट को जिस पर वह लकवाग्रस्त मनुष्य पड़ा था, लटका दिया। प्रभु यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस रोगी से कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।'' तब कई शास्त्री जो वहाँ बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे, कि यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निंदा करता है। परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है? यीशु ने तुंरत अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं। प्रभु ने उनसे कहा, ''तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर? परन्तु तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, (उसने उस रोगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा।'' तब वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने से निकलकर चला गया। इस पर सब लोग चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमने ऐसा कभी नहीं देखा।

यदि प्रभु किसी घर में हैं, तो आस-पास के लोगों को इसका पता चलना चाहिए। हमारा जीवन ही प्रभु के प्रति हमारी गवाही होनी चाहिए। विश्वास के द्वारा पापों की क्षमा और उद्धार प्राप्त करने के बाद हमें प्रभु के साथ नया जीवन जीना चाहिए।

प्रश्न :

1. 18 वर्षों से कुबड़ी रही स्त्री कैसे रोगमुक्त हुई? आराधनालय के सरदार क्यों नाराज़ हुए?
2. कोढ़ी व्यक्ति कैसे स्वस्थ हुआ?
3. कफरनहूम के घर में भीड़ क्यों लगी थी?
4. लकवाग्रस्त रोगी किस प्रकार प्रभु के पास पहुँचाया गया?
5. इस आश्चर्यकर्म से हम क्या सीखते हैं?

वचन पढ़ें :

सोम.	लूका–13
मंगल.	लूका–14
बुध.	लूका–15
बृहस्पति.	मरकुस–1
शुक्र.	मत्ती–8
शनि.	मरकुस–2.

पाठ-25

रोगों पर अधिकार-3

मुख्य बिंदु :

वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता और तेरे सब रोगों को चंगा करता है। (भजन 103:3)।

याद करें :

यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा, और मिस्र की बुरी-बुरी व्याधियाँ, जिन्हें तू जानता है, उन में से किसी को भी तुझे लगने न देगा। (व्यवस्थाविवरण 7:15)।

पाठ :

8. दो अंधे :

पढ़ें-मत्ती 9:27-31

किसी अधिकारी की पुत्री मर गई थी, परन्तु प्रभु यीशु ने उसे जीवित कर दिया। (मत्ती 9:18-26)। उसके घर से निकलकर प्रभु आगे बढ़े, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। जब वह घर पहुँचा, तो वे अंधे उसके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, ''क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?'' उन्होंने उससे कहा, ''हाँ प्रभु।'' तब प्रभु ने उनकी आँखें छूकर कहा, ''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।'' और उनकी आँखें खुल गईं, और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा, ''सावधान, कोई इस बात को न जाने।'' परन्तु उन्होंने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया।

9. अंधा बरतिमाई :

पढ़ें-मरकुस 10:46-52

(मत्ती 20:29-34, लूका 18:35-43 भी पढ़ें)

प्रभु यीशु और उनके शिष्य यरीहो में आए। और एक बड़ी भीड़

उनके साथ थी। तिमाई का पुत्र बरतिमाई नाम का एक अंधा सड़क के किनारे बैठा था। वह यह सुनकर यीशु नासरी आ रहे हैं, पुकार-पुकार कर कहने लगा, ''हे दाऊद की संतान, मुझ पर दया कर।'' बहुतों ने उसे डाँटा, कि चुप रहे, पर वह और भी पुकार कर कहने लगा कि हे दाऊद की संतान, मुझ पर दया कर। तब प्रभु यीशु ने ठहरकर कहा, ''उसे बुलाओ।'' तब लोगों ने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा कि ढाढ़स बाँध, उठ, वह तुझे बुलाता है। वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया। इस पर प्रभु यीशु ने उससे कहा ''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?'' अंधे ने उससे कहा ''हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।'' यीशु ने उससे कहा, ''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।'' और वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में प्रभु के पीछे हो लिया।

पापी लोग जो आत्मिक रूप से अंधे हैं, उन्हें प्रभु के पास जाना चाहिए कि दृष्टि पाएँ। प्रभु जब हमें दृष्टि देते हैं तब हमें अपने गुरु के पीछे हो लेना चाहिए।

10. जन्म का अंधा :

पढ़ें-यूहन्ना 9:1-7

प्रभु यीशु मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहे थे, वहाँ यहूदी सरदारों के साथ उनका वाद-विवाद हो गया। प्रभु के शब्दों पर नाराज होकर उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिए। प्रभु तब मंदिर से निकलकर चले गए। रास्ते में उन्हें एक मनुष्य मिला, जो जन्म से अंधा था। उसके चेलों ने उससे पूछा, ''हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अंधा जन्मा? इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने?'' यीशु ने उत्तर दिया, ''न तो इसने पाप किया था और न इसके माता पिता ने। परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों। जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है। वह रात आनेवाली है, जिसमें कोई काम नहीं कर सकता। जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।'' यह कहकर प्रभु ने भूमि पर थूका और उस थूक

से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अंधे की आँखों पर लगाकर उससे कहा, ''जा, शीलोह* के कुण्ड में धो ले। (शीलोह का अर्थ है–भेजा हुआ।) सो उसने जाकर धोया और देखता हुआ लौट आया।

यह आश्चर्यकर्म प्रभु के वचनों को सिद्ध करता है कि ''जगत की ज्योति मैं हूँ, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा'' (यूहन्ना 8:12)।

---

* शीलोह वह जलाशय है, जो यरूशलेम की शहरपनाह के भीतर बना हुआ है। हिजकिय्याह राजा ने यह जलाशय बनवाया था और एक नाले के द्वारा पानी शहर तक पहुँचता था। (2 राजा 20:20)। हिजकिय्याह ने गीहोन नाम नदी के ऊपर के सोते को पाटकर उस नदी को नीचे की ओर, दाऊदपुर की पश्चिम अलंग को सीधा पहुँचाया। (2 इतिहास 32:30)।

प्रश्न :

1. प्रभु ने दो अंधों को कैसे चंगा किया?
2. प्रभु यीशु ने बरतिमाई को कैसे चंगा किया?
3. उसके अंधा पैदा होने का कारण क्या था? प्रभु ने इस विषय में क्या कहा?
4. इन आश्चर्यकर्मों से हम क्या आत्मिक पाठ सीखते हैं?

वचन पढ़ें :

सोम.	मत्ती–9
मंगल.	मत्ती–15
बुध.	मरकुस–6
बृहस्पति.	मरकुस–10
शुक्र.	लूका–18
शनि.	यूहन्ना–9

पाठ-26

दुष्टात्माओं पर अधिकार

मुख्य बिंदु :

यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। (मत्ती 4:23)।

याद करें :

क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं? क्या उसमें कोई वैद्य नहीं? यदि है, तो मेरे लोगों के घाव क्यों चंगे नहीं हुए? (यिर्मयाह 8:22)।

पाठ :

प्रभु यीशु ने अनेक दुष्टात्माओं से ग्रसित लोगों को अद्‌भुत रीति से छुटकारा दिया। मत्ती 8:16 में लिखा है, ''जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया; और सब बीमारों को चंगा किया। प्रभु यीशु ने अनेक स्थानों पर जाकर ऐसा किया। उनमें से कुछ घटनाओं के बारे में हम सीखेंगे।

1. सेना से ग्रसित मनुष्य :

पढ़ें : मरकुस 5:1-20; लूका 8:26-40

एक बार प्रभु यीशु नाव पर गलील की झील के पास पहुँचे। नाव से उतरते ही एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला। वह कब्रों में रहा करता था, और कोई उसे साँकलों से भी न बाँध सकता था। क्योंकि वह बार-बार बेड़ियों और साँकलों से बाँधा गया था, पर उसने साँकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने को पत्थरों से घायल

करता था। वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, उसे प्रणाम किया और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, ''हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे।'' क्योंकि प्रभु ने उससे कहा था, ''हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!'' उसने उससे पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' उसने उत्तर दिया, ''मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।'' फिर उसने प्रभु से विनती की, ''हमें इस देश से बाहर मत भेज।''

वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उन्होंने प्रभु से विनती करके कहा, ''हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएँ।'' अतः प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं, और झुण्ड, जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील मे जा पड़ा और डूब मरा। उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गाँवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। यीशु के पास आकर वे उसको जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहने और सचेत बैठे देखकर डर गए। देखने वालों ने उसका, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया। तब वे उससे विनती करके कहने लगे, कि हमारी सीमा से चला जा।

जब प्रभु नाव पर चढ़ने लगे, तो वह, जिसमें पहले दुष्टात्माएँ थीं, उससे विनती करने लगा, ''मुझे अपने साथ रहने दे।'' परन्तु प्रभु ने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, ''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।''

2. गूँगा मनुष्य
पढ़ें : मत्ती 9:32-33

एक दिन कुछ लोग एक गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, प्रभु यीशु के पास लाए। जब प्रभु ने दुष्टात्मा को निकाल दिया, तब गूँगा बोलने लगा। इस पर भीड़ ने अचम्भा करके कहा, ''इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।'' परन्तु फरीसियों ने कहा, ''यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की

सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।''

3. कनानी स्त्री की पुत्री

पढ़ें : मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30

प्रभु यीशु सूर और सैदा के प्रदेश की ओर गए। वहाँ से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी, ''हे प्रभु! दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।'' प्रभु ने उसे कुछ उत्तर न दिया। तब उसके चेलों ने आकर उससे विनती की, ''इसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है।'' उसने उत्तर दिया, ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया।'' पर वह आई, और यीशु को प्रणाम करके कहने लगी, ''हे प्रभु, मेरी सहायता कर।'' प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।'' उसने कहा, ''सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं जो उनके स्वामियों की मेज़ से गिरते हैं।'' इस पर प्रभु यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है। जैसा तू चाहती है, तेरे लिए वैसा ही हो।'' और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।

4. अशुद्ध आत्मा :

पढ़ें : मरकुस 1:23-28; लूका 4:31-37

एक बार प्रभु कफरनहूम में आए, और वह सब्त के दिन आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगे। और लोग उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था। उसी समय, उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी। उसने चिल्लाकर कहा, ''हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!'' यीशु ने उसे डाँट कर कहा, ''चुप रह, और उसमें से निकल जा।'' तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उसमें से निकल गई। इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे, ''यह क्या बात है?

यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।'' और उसका नाम तुरन्त गलील के आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया।

यहाँ हम यह सीखते हैं कि शैतान के सेवक ये दुष्टात्माएँ अच्छी तरह जानती हैं कि प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं और वे जानती हैं कि अंत में प्रभु उनका नाश करेंगे। प्रभु ने उन्हें डाँटा और प्रभु की आज्ञा मानते हुए वे निकल गईं।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को कैसे चंगा किया जिसके अंदर ''सेना'' थी?
2. उस स्थान के लोगों ने प्रभु से क्यों वितनी की कि वहाँ से चले जाएँ?
3. वह संदर्भ बताएँ जब प्रभु यीशु ने कहा, ''लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।''
4. प्रभु यीशु ने गूँगे व्यक्ति को कैसे चंगा किया?

वचन पढ़ें :

सोम.	मत्ती 12
मंगल.	मत्ती 17
बुध.	मरकुस 3
बृहस्पति.	मरकुस 7
शुक्र.	लूका 8
शनि.	लूका 9

पाठ–27
मृत्यु पर अधिकार

मुख्य बिंदु :

वह मृत्यु को सदा के लिए नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा। (यशायाह 25:8)।

याद करें :

क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सबसे अंतिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। (1 कुरिन्थियों 15:25–26)।

पाठ :

यशायाह ने अपनी भविष्यवाणी में मसीह का वर्णन किया है। (यशा. 9:6)। यहाँ कहा गया है कि ''उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला'' रखा जाएगा। जो अद्‌भुत है वह अद्‌भुत कार्य करेगा। प्रभु यीशु ने मरे हुओं को जीवित किया क्योंकि वे ही सच्चा जीवन हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (यूहन्ना 1:4; 11:25 आदि)। हम सीखेंगे कि कैसे प्रभु ने कुछ लोगों को जीवित किया जिनकी मृत्यु हो गई थी।

याईर की बेटी :

मत्ती 9:23–25 मरकुस 5:21–24
पढ़ें : लूका 8:40–42; 49–56

याईर आराधनालय का सरदार था। वह प्रभु यीशु के पाँवों पर गिरा और उस से बहुत विनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है; तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे। तब वह उसके साथ चला और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और लोग उस पर गिरे पड़ते थे। रास्ते में ही सरदार के घर के लोगों ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरु को क्यों दुःख देता है? प्रभु ने याईर से

कहा, ''मत डर, केवल विश्वास रख।'' उसके घर पहुँचकर प्रभु ने पतरस और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़ और किसी को अपने साथ आने न दिया। उसने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखकर उनसे कहा, ''तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।'' वे उसकी हँसी करने लगे, परन्तु उसने सबको निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने तीन चेलों को लेकर भीतर गया जहाँ लड़की पड़ी थी। और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, ''तलीता कूमी''; (जिसका अर्थ है कि 'हे लड़की मैं तुझसे कहता हूँ, उठ।') और लड़की तुरंत उठकर चलने-फिरने लगी। (वह बारह वर्ष की थी) इस पर लोग बहुत चकित हो गए। फिर उसने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।

विधवा का पुत्र : पढ़ें : लूका 7:11-17

एक दिन प्रभु यीशु नाईन नाम के एक नगर को गए, और उसके चेले और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी। जब वह नगर के फाटक के पास पहुँचे, तब लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे, जो अपनी माँ का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी, और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। उसे देखकर प्रभु को तरस आया, और उससे कहा, ''मत रो''। तब प्रभु ने पास आकर उस अर्थी को छूआ, और उठाने वाले ठहर गए। तब प्रभु ने कहा, ''हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ।'' तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा, और उसने उसे उसकी माँ को सौंप दिया। इससे सब पर भय छा गया, और वे परमेश्वर की बड़ाई करने लगे।

लाजर : पढ़ें : यूहन्ना 11:1-46

इस संसार में प्रभु यीशु का अपना कोई घर नहीं था। एक बार उन्होंने एक व्यक्ति से कहा था, ''मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।'' (लूका 9:58b) तथापि, बैतनिय्याह में एक ऐसा घर था, जो प्रभु के लिए खुला रहता था। वहाँ पर तीन लोग रहते थे, जो प्रभु से बहुत प्रेम करते थे। वे थे-मार्था, और उसकी बहन मरियम और उसका

भाई लाजर। प्रभु भी इस परिवार से बहुत प्रेम करते थे। ''एलीआज़र'' नाम का लघु रूप है ''लाजर'', जिसका अर्थ है ''यहोवा मेरा सहायक है।'' एक दिन लाजर बीमार पड़ गया। अत: उसकी बहिनों ने प्रभु को कहला भेजा ''प्रभु, जिससे तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।'' तथापि, यह सुनकर भी, जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया। दो दिन के बाद प्रभु ने चेलों से कहा, ''आओ, हम फिर से यहूदिया को चलें।'' चेले वहाँ जाना नहीं चाहते थे, तब प्रभु ने उनसे कहा, ''हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।'' चेलों को यह बात समझ नहीं आई। तब प्रभु ने उनसे स्पष्ट कह दिया, कि लाजर मर गया है।

जब प्रभु यीशु आए, तब तक लाजर को कब्र में रखे चार दिन हो चुके थे। बहुत से यहूदी मार्था और मरियम को शांति देने के लिए आए थे। प्रभु यीशु के आने का समाचार सुनकर मार्था प्रभु से मिलने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही। मार्था ने प्रभु से कहा, ''हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई कदापि न मरता। और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।'' यीशु ने उससे कहा, ''तेरा भाई जी उठेगा।'' मार्था ने उत्तर दिया, ''मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।''

यीशु ने उससे कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?'' मरथा ने कहा, ''हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह, जो जगत में आने वाला था, तू ही है।'' यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, ''गुरु यहीं है और तुझे बुलाता है।'' यह सुनते ही मरियम तुरन्त उठकर उसके पास आई। प्रभु यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँच थे, परन्तु उसी स्थान पर थे, जहाँ मरथा ने उससे भेंट की थी।

जब मरियम प्रभु के पास पहुँची, तो उसके पाँवों पर गिर के कहा, ''हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई न मरता।''

जब प्रभु यीशु ने मरियम को, और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत उदास होकर पूछा, ''तुमने उसे कहाँ रखा है?'' उन्होंने उससे कहा, ''हे प्रभु, चलकर देख ले।'' यीशु के आंसू बहने लगे। तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उससे कैसी प्रीति रखता था। परन्तु उनमें से कितनों ने कहा, क्या यह, जिसने अंधे की आँखें खोलीं, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता? यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आए। वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था। यीशु ने कहा, पत्थर को उठाओ। मरथा ने कहा, ''हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गंध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।'' प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।'' तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया। फिर यीशु ने आँखें उठाकर कहा, ''हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस-पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें, कि तूने मुझे भेजा है।'' यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ! जो मर गया था, वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अंगोछे से लिपटा हुआ था; यीशु ने उनसे कहा, ''उसे खोलकर जाने दो।'' तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और उसका यह काम देखा था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

हमने तीन लोगों के विषय में सुना जिन्हें प्रभु यीशु ने जीवित किया। याईर की पुत्री को उसकी मृत्यु के तुरंत बाद ही प्रभु ने जीवित किया था। विधवा स्त्री के पुत्र को तब जीवित किया जब लोग उसे उठाकर दफनाने के लिए ले जा रहे थे। लाजर को उसकी मृत्यु और दफनाने के चार दिनों के पश्चात् प्रभु ने जीवित किया। प्रभु यीशु जीवन का स्रोत

हैं। इसी कारण वे मुर्दों को जीवित कर सके। यह इस बात का भी प्रमाण है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं। प्रभु ने लाजर की कब्र पर आंसू बहाए। वह मनुष्य के मन की पीड़ा को समझते हैं। वह हमारा महायाजक है जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी हो सकता है। (इब्रा. 4:15)। प्रभु यीशु सिद्ध मनुष्य और सिद्ध परमेश्वर हैं। इसी लिए वे परमेश्वर और मनुष्यों के बीच बिचवई हैं। इसी कारण वे अपनी मृत्यु के द्वारा मनुष्य जाति को उद्धार प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न :

1. मरथा, मरियम और लाजर कहाँ रहते थे?
2. लाजर की बीमारी का समाचार सुनकर प्रभु यीशु ने क्या किया?
3. एक अविश्वासी और एक विश्वासी की मृत्यु में क्या फर्क है?
4. प्रभु ने कब कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ''? इस बात को उन्होंने कैसे प्रमाणित किया?
5. लाजर को जीवित करने वाले आश्यचर्यकर्म के द्वारा आप कैसे प्रमाणित कर सकते हैं, कि प्रभु यीशु सिद्ध मनुष्य एवं सिद्ध परमेश्वर हैं?

---

* यहूदी रिवाज़ के अनुसार दफनाने से पहले मृत देह को कपड़े में लपेटा जाता था। हाथों और पाँवों को कपड़े की पट्टी से लपेटा जाता था, और सिर को एक अंगोछे से लपेटा जाता था।

पाठ–28
प्रकृति पर अधिकार

मुख्य बिंदु :

मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं। मैं ही ईश्वर हूँ। जब मैं काम करना चाहूँ तब कौन मुझे रोक सकेगा। (यशायाह 43:11,13)।

याद करें :

वह आँधी को थाम देता है, और तरंगें बैठ जाती हैं। (भजन 107:29)।

पाठ :

1. प्रभु यीशु पानी को दाखरस में परिवर्तित करते हैं : यूहन्ना 2:1-11 पढ़ें

गलील के काना नामक स्थान में किसी का विवाह था। प्रभु यीशु और उनकी माता और उनके शिष्य भी उस विवाह में नेवते गए थे। जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, कि उनके पास दाखरस नहीं रहा। यीशु ने उससे कहा, ''हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।'' उसकी माता ने सेवकों से कहा, ''जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।'' वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे थे, जिनमें दो-दो, तीन-तीन मन समाता था। यीशु ने उनसे कहा, ''मटकों में पानी भर दो।'' सो उन्होंने मटकों को मुँहामुँह भर दिया। तब प्रभु यीशु ने उनसे कहा, ''अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।'' वे ले गए। जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है, तो उसने दूल्हे को बुलाकर उससे कहा, ''हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है, और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है। परन्तु तूने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।'' प्रभु यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला आश्चर्यकर्म दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की, और उसके चेलों ने उस

पर विश्वास किया।

2. पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाना :

मत्ती 14:15-21; मरकुस 6:30-44; लूका 9:10-17; यूहन्ना 6:1-14 पढ़ें।

इस आश्चर्यकर्म का उल्लेख चारों सुसमाचारों में पाया जाता है। लूका के अनुसार यह आश्चर्यकर्म बैतसैदा के आसपास के स्थान पर हुआ था। यह जानकर कि प्रभु वहाँ पर हैं, एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और वह आनंद के साथ उनसे मिला, और उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा। और जो लोग चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया। जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने आकर उससे कहा, भीड़ को विदा कर, कि चारों ओर के गाँवों और बस्तियों में जाकर टिकें, और भोजन का उपाय करें। प्रभु यीशु ने फिलिप्पुस से कहा, ''हम इनके भोजन के लिए कहाँ से रोटी मोल लाएँ?'' प्रभु ने यह बात उसे परखने के लिए कही, क्योंकि वह जानते थे कि वह क्या करने वाले हैं। फिलिप्पुस ने प्रभु को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी उनके लिए पूरी भी न होंगी कि उनमें से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए। उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उससे कहा ''यहाँ एक लड़का है, जिसके पास जव की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं।'' प्रभु ने अपने चेलों से कहा, ''उन्हें पचास-पचास करके पांति-पांति बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी; तब वे लोग जो गिनती में लगभग पाँच हज़ार के थे, बैठ गए। तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें। सो सब खाकर तृप्त हुए। तब प्रभु ने अपने चेलों से कहा, ''बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए।'' सो उन्होंने बटोरा, और बारह टोकरियाँ भर गईं।

एक अन्य अवसर पर प्रभु ने चार हज़ार पुरुषों को और साथ ही स्त्रियों और बच्चों को भी भोजन खिलाया। तब सात रोटियों और कुछ छोटी मछलियों से लोगों को तृप्त किया और चेलों ने बचे हुए भोजन से सात टोकरे भरे थे।

3. प्रभु यीशु पानी पर चले :
मत्ती 14:22-23; मरकुस 6:45-56 पढ़ें।

पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने के तुरंत बाद ही प्रभु ने अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उससे पहले पार चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया, और सांझ को वहाँ अकेला था। उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। और प्रभु रात के चौथे पहर* झील पर चलते हुए उनके पास आए। चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए। और कहने लगे, ''वह भूत है!'' और डर के मारे चिल्ला उठे। प्रभु यीशु ने तुरंत उनसे बातें कीं और कहा, ''ढाढ़स बाँधो, मैं हूँ, डरो मत।'' पतरस ने उसको उत्तर दिया, ''हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।'' प्रभु ने पतरस से कहा, आ। तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। परन्तु हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा, ''हे प्रभु, मुझे बचा।'' यीशु ने तुरंत हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, ''हे अल्प-विश्वासी, तूने क्यों संदेह किया?'' जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। तब जो लोग नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत् करके कहा, ''सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है!''

4. प्रभु ने तूफान को शांत किया :
मत्ती 8:23-26; मरकुस 4:36-41 लूका 8:22-25 पढ़ें।

एक दिन प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव में गलील की झील के पास जा रहे थे। तभी झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढ़ंपने लगी। प्रभु सो रहे थे। तब चेलों ने उनके पास आकर उन्हें जगाया और कहा, ''हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।'' प्रभु ने उनसे कहा, ''हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो?'' फिर प्रभु ने

---

* सुबह के तीन बजे

उठकर आँधी और पानी को डाँटा, और सब शांत हो गया। और लोग अचम्भा करके कहने लगे, ''यह कैसा मनुष्य है, कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं!''

इस संसार रूपी समुद्र की यात्रा में प्रभु हमारे साथ हैं। वे हमें सुरक्षित उस पार ले जाएँगे। हम यह गीत गा सकते हैं :

''स्वर्गीय पिता हमारी अगुआई करें,
दुनियारूपी तूफानी समुद्र में,
रक्षा करें, संभालें और अगुआई करें,
हमारी सुरक्षा है केवल तुझ में,
हर एक आशीषों से होंगे भरपूर,
यदि पिता मिलें हमें, हमारे परमेश्वर में।''

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु का पहला आश्चर्यकर्म क्या था, और वह कहाँ पर हुआ?
2. प्रभु ने घर के सेवकों को क्या करने की आज्ञा दी?
3. नए दाखरस को चखने के बाद भोज के प्रधान की क्या प्रतिक्रिया थी?
4. प्रभु ने पाँच हज़ार लोगों को कैसे भोजन खिलाया?
5. अपने शिष्यों को झील के पार भेजने के पश्चात् प्रभु कहाँ गए? और क्यों?
6. प्रभु यीशु को पानी पर चलते देखकर नाव में बैठे शिष्यों ने क्या सोचा?
7. ''हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं!'' इसका संदर्भ दें।
8. ''हमारा प्रभु प्रकृति पर अधिकार रखते हैं'' इस बात के दो उदाहरण इस पाठ में से दें।

पाठ-29

प्रभु यीशु के दृष्टांत-1

मुख्य बिंदु :

वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा, और एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई। और वह उन्हें दृष्टांतों में बहुत सी बातें सिखाने लगा। (मरकुस 4:1-2)।

याद करें :

जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो कि मैं दृष्टांत कहने को अपना मुँह खोलूँगा; मैं उन बातों को, जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं, प्रगट करूँगा। (मत्ती 13:35)।

पाठ :

हमारे प्रभु के वचन उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता को प्रकट करते हैं। उनके वचन अनुग्रह से परिपूर्ण होते थे। किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं। (लूका 4:22; यूहन्ना 7:46)। गहरे स्वर्गीय सत्यों को समझाने के लिए उन्होंने दिन प्रतिदिन के जीवन से जुड़े उदाहरणों और दृष्टांतों का प्रयोग किया। हम अपने प्रभु के कुछ दृष्टांतों के विषय में सीखेंगे जो सुसमाचारों में दिए गए हैं। दृष्टांत की परिभाषा है- ''स्वर्गीय अर्थ के साथ सांसारिक कहानी''।

1. दस कुंवारियाँ :
पढ़ें : मत्ती 25:1-13

प्रभु ने दस कुंवारियों के दृष्टांत के द्वारा स्वर्ग के राज्य के बारे में सिखाया। स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा, जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उनमें से पाँच मूर्ख और पाँच समझदार थीं। मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया? परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने

लगीं और सो गईं। आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे भेंट करने के लिए चलो। तब वे सब कुंवारियाँ उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। तब मूर्खों ने समझदारों से कहा, ''अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं।'' परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया, ''कदाचित् हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न पड़े। अच्छा होगा कि तुम बेचने वालों के पास जाकर अपने लिए मोल ले लो।'' जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बंद किया गया। इसके बाद वे दूसरी कुंवारियाँ भी आकर कहने लगीं, ''हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे।'' उसने उत्तर दिया, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।''

प्रभु ने कहा, ''इसलिए, जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र आएगा।''

2. राजा के पुत्र का विवाह :
पढ़ें: लूका 14:16-24

किसी मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया। जब भोजन तैयार हो गया तो उसने अपने दास के हाथ नेवताहारियों को कहला भेजा, कि आओ, अब भोजन तैयार है। पर वे सब के सब क्षमा माँगने लगे। पहले ने उससे कहा, ''मैंने खेत मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे देखूँ, मैं तुझसे विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।'' दूसरे ने कहा, ''मैंने पाँच जोड़े बैल मोल लिए हैं, और उन्हें परखने जाता हूँ; मैं तुझे से विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।'' एक और ने कहा, ''मैंने ब्याह किया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।'' उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें कह सुनाईं। तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, ''नगर के बाजारों और गलियों में तुरंत जाकर लोगों को बरबस ले आ, ताकि मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार को न चखेगा।''

3. दस मुहरें :

पढ़ें : लूका 19:11-27

एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर फिर आए। और उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और उनसे कहा, मेरे लौट आने तक लेन-देन करना। परन्तु उसके नगर के रहने वाले उससे बैर रखते थे। और उसके पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य करे। जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलवाया ताकि मालूम करे कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाया। तब पहले ने आकर कहा, ''हे स्वामी, तेरे मोहर से दस और मोहरें कमाई हैं।'' उसने उससे कहा, ''धन्य हे उत्तम दास, तू धन्य है। तू बहुत ही थोड़े में विश्वासी निकला, अब दस नगरों पर अधिकार रख।'' दूसरे ने आकर कहा, ''हे स्वामी तेरी मोहर से पाँच और मोहरें कमाई हैं।'' उसने उससे भी कहा, ''तू भी पाँच नगरों पर हाकिम हो जा।'' तीसरे ने आकर कहा, ''हे स्वामी, देख, तेरी मोहर यह है, जिसे मैंने अंगोछे में बाँध रखी। क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिए कि तू कठोर मनुष्य है। जो तूने नहीं रखा, उसे उठा लेता है, और जो तूने नहीं बोया, उसे काटता है।'' उसने उससे कहा, ''हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुँह से तुझे दोषी ठहराता हूँ। तू मुझे जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने नहीं रखा, उसे उठा लेता, और जो मैंने नहीं बोया, उसे काटता हूँ, तो तूने मेरे रुपए कोठी में क्यों नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?'' और जो लोग निकट खड़े थे, उसने उनसे कहा, ''वह मोहर उससे ले लो, और जिसके पास दस मोहरें हैं, उसे दे दो।'' उन्होंने उससे कहा, ''हे स्वामी, उसके पास दस मोहरें तो हैं।'' उसने कहा, ''मैं तुमसे कहता हूँ, कि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। परन्तु मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूँ, उनको यहाँ लाकर मेरे सामने घात करो।''

हमारा प्रभु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। जो उनके

प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करते वे नाश होंगे।

प्रश्न :

1. दस कुंवारियों का दृष्टांत सुनाओ।
2. भोज में न आने के लिए नेवताहारियों ने क्या बहाने बनाए?
3. नेवताहारियों के न आने पर स्वामी ने क्या किया?
4. धनी मनुष्य दूर देश को क्यों गया? क्या उसे वह मिला जो वह चाहता था?
5. उसने अपने दस दासों को बुलाकर उन्हें क्या दिया?
6. ''हे दुष्ट दास'' यह किसने किससे कहा, और क्यों कहा?

पाठ-30

प्रभु यीशु के दृष्टांत-2

मुख्य बिंदु :

तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी आज्ञा यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। (मरकुस 12:30-31)।

याद करें :

प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है। (रोमियों 13:10)।

पाठ :

अच्छे सामरी का दृष्टांत :
पढ़ें : लूका 10:30-37

एक व्यवस्थापक ने प्रभु यीशु से पूछा, ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' इसके उत्तर में प्रभु यीशु ने यह दृष्टांत कहा :

एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए, और मार पीटकर उसे अधमरा छोड़कर चले गए। और उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था, परन्तु उसे देखकर कतराकर चला गया। उसी तरह एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख कर कतराकर चला गया। परन्तु एक सामरी यात्री वहाँ आया, और उसे देखकर तरस खाया। और उसके पास आकर उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियाँ बाँधीं, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया। और उसकी सेवा टहल की। दूसरे दिन उसने दो दीनार निकालकर भटियारे को दिए, और कहा, ''इसकी सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूँगा।'' प्रभु ने उस व्यवस्थापक से पूछा, ''अब तेरी समझ में जो डाकुओं में

घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?'' उसने उत्तर दिया, ''वही, जिसने उस पर तरस खाया।'' यीशु ने उससे कहा, ''जा, तू भी ऐसा ही कर।''

दो देनदारों का दृष्टांत :

पढ़ें : लूका 7:36-50

किसी फरीसी ने उस से विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर। अत: प्रभु उस फरीसी के घर भोजन करने बैठे। तब उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि प्रभु फरीसी के घर पर हैं, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई। और उसके पाँवों के पास पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पाँवों को आंसुओं से भिगाने और अपने सिर के बोलों से पोंछने लगी। और उसके पाँव बार-बार चूमकर उन पर इत्र मला। यह देखकर वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता, तो जान जाता, कि यह, जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है। क्योंकि वह तो पापिनी स्त्री है। प्रभु यीशु ने यह जानकर उससे कहा, ''हे शमौन, मुझे तुझसे कुछ कहना है।'' वह बोला, ''हे गुरु, कह।'' प्रभु ने कहा, कि एक महाजन के दो देनदार थे। एक पांच सौ और दूसरा पचास दीनार धारता था। जबकि उनके पास उधार चुकाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। अत: उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा? शमौन ने उत्तर दिया, ''मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।'' प्रभु ने उससे कहा ''तूने ठीक विचार किया है।'' उस स्त्री की ओर फिरकर प्रभु ने शमौन से कहा, कि क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया, परन्तु तूने मेरे पाँव धोने के लिए पानी न दिया। पर इसने मेरे पाँव आंसुओं से भिगाए। और अपने बालों से पोंछा। तूने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ, तब से इसने मेरे पाँवों को चूमना न छोड़ा। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है। इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ, कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया। पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है। और उसने स्त्री से कहा, ''तेरे पाप क्षमा हुए।'' तब जो लोग उसके साथ

भोजन करने बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? पर प्रभु ने स्त्री से कहा, ''तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।''

इस दृष्टांत से हम यह सीख सकते हैं कि प्रभु यीशु मनुष्य के विचारों तक को जानते हैं। दो देनदारों के दृष्टांत से हम यह सीखते हैं कि सब मनुष्य पापी हैं, और सभी को एक समान क्षमा प्राप्त होती है। यही परमेश्वर का अनुग्रह है।

खोई हुई भेड़ का दृष्टांत :

पढ़ें : लूका 15:4-7

फरीसी और सदूकी लोग पापियों को तुच्छ समझते थे। वे चुंगी लेने वालों को भी पापी ही मानते थे और उनके साथ कोई वास्ता नहीं रखते थे। तथापि, चुंगी लेने वाले और पापी लोग प्रभु के वचन सुनने के लिए उनके पास आते थे। अतः फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है, और उनके साथ खाता भी है। तब प्रभु ने उनसे यह दृष्टांत कहा।

तुममें से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हो, और उनमें से एक खो जाए; तो, निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को, जब तक मिल न जाए, खोजता न रहे? और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनंद से उसे कांधे पर उठा लेता है। और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहता है, मेरे साथ आनंद करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। मैं तुमसे कहता हूँ, कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनंद होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।

''एक छोटी भेड़ खो गई थी-2
वह मैं, मैं, मैं-2 चिल्लाती थी-3
चरवाहा आया उसके पास-2
उसमें आई जीवन की आस-2
वह मैं, मैं, मैं-2 चिल्लाती थी-3''

सब मनुष्य भटक गए हैं। सबको अच्छे चरवाहे की आवश्यकता है। प्रभु भटके हुओं को खोजता है। प्रभु कहते हैं : ''और मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ।'' (यूहन्ना 10:28)

प्रश्न :

1. उस मनुष्य के साथ क्या हुआ जो यरूशलेम से यरीहो जा रहा था?
2. उसकी ज़रूरत की घड़ी में किसने उसे अनदेखा किया?
3. किसने उसकी सहायता की? और कैसे?
4. इस दृष्टांत से हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?
5. दो देनदार कौन थे?
6. प्रभु का अतिथि सत्कार करने में शमौन किन बातों में चूक गया था?
7. पापिनी स्त्री ने प्रभु के साथ क्या किया था?
8. क्षमा के विषय में प्रभु ने शमौन को क्या शिक्षा दी?
9. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत बताएं? और उससे कौन सा आत्मिक पाठ हम सीखते हैं?

पाठ-31

प्रभु यीशु के दृष्टांत-3

मुख्य बिंदु :

उसने हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला दिया है। (भजन 103:10)।

याद करें :

जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है, और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है। (भजन 103:13-14)।

उड़ाऊ पुत्र :

पढ़ें : लूका 15:11-32

फरीसी और शास्त्री प्रभु यीशु के विरुद्ध कुड़कुड़ाते थे और कहते थे कि वह चुंगी लेने वालों और पापियों से मिलता है। वास्तव में वे ऐसे लोग थे जिन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी। प्रभु यीशु इस संसार में आए ताकि खोए हुओं को ढूँढ़ें और उनका उद्धार करें। इस सत्य को समझाने के लिए उन्होंने उड़ाऊ पुत्र का यह दृष्टांत कहा। किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा, ''हे पिता, संपत्ति में से जो भाग मेरा है वह मुझे दे दीजिए।'' स्पष्टत: वह एक बलवा करने वाला पुत्र था। वह अपने पिता की मृत्यु तक रुक न सका। प्रेमी पिता ने उनको अपनी संपत्ति बाँट दी। बहुत दिन न बीते थे, कि छोटा पुत्र अपना सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया। वहाँ पहुँचकर अपनी सारी संपत्ति कुकर्म में उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। फिर वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ गया। उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और वह चाहता था कि उन फलियों से, जिन्हें सूअर खाते थे, अपना पेट भरे। और उसे कोई कुछ न देता था।

जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, कि पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊँ। मुझे अपने एक मजदूर की तरह रख ले। तब वह उठकर अपने पिता के पास चला। वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, ''पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।'' परंतु पिता ने अपने दासों से कहा, ''झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूतियाँ पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएँ और आनंद मनाएँ। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है। खो गया था, अब मिल गया है।'' और वे आनंद करने लगे। परंतु उसका जेठा पुत्र खेत में था। और जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने-बजाने और नाचने का शब्द सुना। और उसने एक दास को बुलाकर पूछा, ''यह क्या हो रहा है?'' उसने उससे कहा, ''तेरा भाई आया है, और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, क्योंकि उसे भला चंगा पाया है।'' यह सुनकर वह क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा। परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। उसने पिता को उत्तर दिया, ''देख, मैं इतने वर्षों से तेरी सेवा कर रहा हूँ, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनंद करता। परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया तो उसके लिए तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया।'' उस ने उस से कहा, ''पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है, और जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा ही है। परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए, क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था, फिर जी गया है, खो गया था, अब मिल गया है।''

उड़ाऊ पुत्र एक पापी की तस्वीर है। जब वह पश्चाताप् करके वापस आया, यह एक उद्धार पाए हुए व्यक्ति की तस्वीर है। उड़ाऊ पुत्र ने तब पश्चाताप् किया जब उसका सब कुछ खो गया। सभोपदेशक में उपदेशक कहता है, ''अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएँ, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमें नहीं लगता।'' (सभो. 12:1)

फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत :
पढ़ें : लूका 18:10-14

प्रभु यीशु ने फरीसियों के स्वभाव को प्रकट करने के लिए यह दृष्टांत कहा। फरीसी बड़े कपटी स्वभाव के होते थे। दो मनुष्य मंदिर में प्रार्थना करने के लिए गए। एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि मैं और मनुष्यों की तरह अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं; और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूँ। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ, मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूँ।'' परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, परन्तु अपनी छाती पीट-पीटकर कहा, ''हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।''

प्रभु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूँ, कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया। क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।''

दुष्ट दास का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 18:23-35

पतरस ने प्रभु यीशु से पूछा, ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक? संभवत: उसने सोचा कि सात बार क्षमा करना काफी होगा। तथापि, प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''सात बार नहीं; बल्कि सात बार के सत्तर गुने तक।'' इसे

समझने के लिए प्रभु ने यह दृष्टांत कहा।

स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया, जो दस हज़ार तोड़े धारता था। जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इसका है, सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया और कहा, ''हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूँगा।'' तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका धार क्षमा किया। परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था। उसने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा, ''जो कुछ तू धारता है, भर दे।'' इस पर उसका संगी दास गिरकर उससे विनती करने लगा, कि धीरज धर, मैं सब भर दूँगा। परन्तु उसने न माना, और जाकर उसे बंदीगृह में डाल दिया, कि जब तक कर्ज को भर न दे तब तक वहीं रहे। उसके संगी दास यह जो हुआ था, देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, ''हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। सो जैसा मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?'' और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे। इसी प्रकार यदि तुममें से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा नहीं करेगा, तो मेरा पिता, जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।

प्रश्न :

1. उड़ाऊ पुत्र अपने आपे में कब आया? तब उसने क्या निर्णय लिया?
2. इस दृष्टांत का आत्मिक अर्थ क्या है?

3. फरीसी ने किस प्रकार प्रार्थना की?
4. चुंगी लेने वाले ने किस प्रकार प्रार्थना की?
5. उन दोनों में कौन धर्मी ठहराया गया, और क्यों?
6. राजा के दास पर कितना कर्जा था?
7. अपने दास की विनती पर राजा ने क्या किया?
8. उस दास ने अपने संगी दास से कैसा बर्ताव किया?
9. इस दृष्टांत से हम क्या पाठ सीखते हैं?

पाठ-32
प्रभु यीशु के दृष्टांत-4

मुख्य बिंदु :

परमेश्वर का वचन पवित्र है, उस चाँदी के समान जो भट्ठी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो। (भजन 12:6)

याद करें :

मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ। (भजन 119:11)।

पाठ :

बुद्धिमान और मूर्ख मनुष्य :
पढ़ें : मत्ती 7:24-27

प्रभु यीशु ने कहा, कि बुद्धिमान मनुष्य वह है जो परमेश्वर के वचन सुनकर उनको मानता भी है। जो मनुष्य परमेश्वर का वचन सुनकर उनको नहीं मानता वह निर्बुद्धि मनुष्य है। इस बात को समझाने के लिए प्रभु ने यह दृष्टांत कहा।

जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य की तरह ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं; और आंधियाँ चलीं; और उस घर पर टक्करें लगीं; परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है, और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की तरह ठहरेगा, जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियाँ चलीं; और उस घर पर टक्करें लगीं, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।

अंगूर की बारी में लगा अंजीर का पेड़ :
पढ़ें : लूका 13:6-9

प्रभु यीशु मन फिराने के विषय में शिक्षा रहे थे। उन्होंने कहा, ''यदि

तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।'' फिर प्रभु ने उनसे यह दृष्टांत कहा।

किसी मनुष्य की अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था। वह उसमें फल ढूँढ़ने आया, परन्तु न पाया। तब उसने बारी के रखवाले से कहा, ''देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के पेड़ में फल ढूँढ़ने आता हूँ, परन्तु नहीं पाता। इसे काट डाल कि यह भूमि को भी क्यों रोके रहे।'' उसने उसको उत्तर दिया, ''हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो और रहने दे, कि मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूँ। सो आगे को फले तो भला, नहीं तो उसे काट डालना।''

अंजीर का पेड़ इस्राएल का प्रतीक है, जो परमेश्वर की बारी रूपी संसार में लगा है। परमेश्वर स्वामी हैं और प्रभु यीशु बारी के रखवाले के समान हैं। परमेश्वर ने उनसे फल की आस रखी पर नहीं पाया। प्रभु यीशु ने उनके बीच रहकर सार्वजनिक सेवा कार्य किया, परन्तु उन्होंने प्रभु के वचनों पर ध्यान नहीं दिया और न अपने जीवनों से फल लाए। अंत में इस्राएल राष्ट्र नाश हो गया। यह दृष्टांत हमें यह भी सिखाता है कि हर एक व्यक्ति परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। व्यर्थ जीवन व्यतीत करने का परिणाम भयंकर हो सकता है।

दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 20:1-16

पतरस ने प्रभु से प्रश्न पूछा, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं, तो हमें क्या मिलेगा?'' यीशु ने उससे कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा, और वह अनंत जीवन का अधिकारी होगा। परन्तु बहुतेरे जो पहले हैं, पिछले होंगे।''

इस बात को समझाने के लिए प्रभु ने यह दृष्टांत कहा।

स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मज़दूरों को लगाए। और उसने मज़दूरों से एक दीनार रोज पर ठहराकर उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। फिर पहर एक दिन चढ़े, निकलकर और लोगों को बाज़ार में बेकार खड़े देखकर उनसे कहा, ''तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूँगा।'' सो वे भी गए। फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, ''तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार खड़े रहे?'' उन्होंने उससे कहा, ''इसलिए कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।'' उसने उनसे कहा, ''तुम भी दाख की बारी में जाओ।'' सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, मज़दूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहलों तक उन्हें मज़दूरी दे दे। सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक-एक दीनार मिला। जो पहले आए, उन्होंने यह समझा कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही दीनार मिला। जब मिला, तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा कर कहने लगे, कि इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धाम सहा? उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता। क्या तूने मुझ से एक दीनार न ठहराया? जो तेरा है, उसे उठा ले और चला जा। मेरी इच्छा यह है, कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूँ। क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है? इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पिछले होंगे।

हमारा प्रतिफल उस रवैए पर निर्भर करता है, जिससे हम प्रभु की सेवा करते हैं। ''जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिए पिलाए, कि तुम मसीह के हो, तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह अपना प्रतिफल

किसी रीति से न खोएगा।'' (मरकुस 9:41)

प्रश्न :

1. बुद्धिमान मनुष्य कौन है?
2. चट्टान किसका प्रतीक है?
3. निर्बुद्धि मनुष्य के घर का क्या होता है?
4. दाख की बारी में लगे अंजीर के वृक्ष का दृष्टांत सुनाएँ।
5. पहले काम पर लगाए गए मज़दूरों को क्या शिकायत थी?
6. गृहस्थ ने उन्हें क्या उत्तर दिया?
7. हमारा प्रतिफल किस बात पर निर्भर करता है?

पाठ-33

प्रभु यीशु के दृष्टांत-5

मुख्य बिंदु :

सो आओ, हम उत्सव में आनंद मनावें, न तो पुराने खमीर से, और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से। (1 कुरिन्थियों 5:8)।

याद करें :

जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। (यूहन्ना 12:24)।

पाठ :

मत्ती के तेरहवें अध्याय में हम नौ दृष्टांतों को देखते हैं। एक अच्छे शिक्षक की तरह प्रभु ने उदाहरण दे-देकर अज्ञानी लोगों को स्वर्ग के सत्यों के बारे में समझाया।

जंगली पौधे का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 13:24-30; 36-43

स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी दिखाई दिए। इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उससे कहा, ''हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उसमें कहां से आए?'' उसने उनसे कहा, ''यह किसी बैरी का काम है।'' दासों ने उससे कहा, ''क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें?'' उसने कहा, ''ऐसा नहीं, न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो। कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूँगा, पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिए उनके गट्ठे

बाँध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।''

प्रभु ने अपने चेलों को इस दृष्टांत का अर्थ समझाया। अच्छे बीज का अर्थ समझाया। अच्छे बीज का बोने वाला मनुष्य का पुत्र है। खेत संसार है। अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के संतान हैं। जिस बैरी ने उनको बोया, वह शैतान है। कटनी जगत का अंत है, और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं; वैसा ही जगत के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे।

राई के दाने और खमीर का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 13:31-34

स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो होता है, पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है। और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं। प्रभु ने एक और दृष्टांत उन्हें सुनाया, कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीर हो गया।

सुसमाचार, जो परमेश्वर का वचन है वह जीवित बीज की तरह है। बीज में जीवन होता है और उसमें से निकला पौधा, बढ़ता ही जाता है। सुसमाचार कुछ ही शब्दों में बताया जा सकता है, वह राई के दाने के समान छोटा होता है, परन्तु जब वह बढ़ता है तो समस्त संसार में हज़ारों लोगों तक पहुँच जाता है। बाइबल में खमीर पाप अथवा बुराई को दर्शाता है। और उससे बचने की सलाह देता है। (निर्गमन 12:15-19; 13:7)। यहाँ प्रभु खमीर का उदाहरण मात्र यह बताने के लिए कर रहे हैं कि सुसमाचार कैसे बढ़ता और फैलता है।

छिपे हुए धन और बहुमूल्य मोती का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 13:44-46

स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनंद के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया। फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला, तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।

छिपे हुए धन के इस दृष्टांत में, वह मनुष्य प्रभु यीशु हैं। धन, इस्राएल राष्ट्र का प्रतीक है। खेत, समस्त संसार को दिखाता है। बहुमूल्य मोती के दृष्टांत में व्यापारी हमारा प्रभु यीशु हैं। बहुमूल्य मोती कलीसिया का प्रतीक है। प्रभु ने अपना सर्वस्व देकर कलीसिया को खरीद लिया। एक ही कलीसिया है, जो बहुमूल्य मोती के समान है।

बड़े जाल का दृष्टांत :
पढ़ें : मत्ती 13:47-48

स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। और जब भर गया, तो उसको किनारे पर खींच लाए। और बैठकर अच्छी-अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा किया और बेकार-बेकार फेंक दीं। जगत के अंत में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

प्रश्न :

1. गेहूं और जंगली पौधे किसका प्रतीक हैं?
2. शत्रु कौन है? उसने क्या किया?
3. गृहस्थ ने जंगली दाने के पौधों को गेहूं के साथ बढ़ने क्यों दिया?
4. अंत में जंगली पौधों का क्या हुआ?

5. राई के दाने और खमीर के दृष्टांत का वर्णन करें, और उनके आत्मिक अर्थ बताएँ।
6. खेत में छिपे हुए धन को पाने पर उस मनुष्य ने क्या किया?
7. बहुमूल्य मोती किसका प्रतीक है?
8. बड़े जाल के दृष्टांत में अच्छी मछलियाँ और बेकार मछलियाँ किसके प्रतीक हैं? जगत के अंत में स्वर्गदूत क्या करेंगे?

पाठ–34
उदाहरण और चेतावनियाँ

मुख्य बिंदु :

यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? (मत्ती 16:26)।

याद करें :

संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं; पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा। (1 यूहन्ना 2:17)।

पाठ :

धनवान मनुष्य और लाजर :
लूका 16:19–31

परमेश्वर के बगैर जीवन जीने के परिणामों के बारे में प्रभु अक्सर लोगों को चेतावनी दिया करते थे। प्रभु यीशु मसीह ने एक धनवान मनुष्य के बारे में बताया जिसे परमेश्वर की बातों की परवाह नहीं थी।

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रतिदिन सुख–विलास और धूम–धाम के साथ रहता था। और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुँचाया। और वह धनवान भी मरा, और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उसने पुकार कर कहा, ''हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं

इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'' परन्तु इब्राहीम ने कहा, ''हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है, जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।'' उसने कहा, ''तो हे पिता, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।'' इब्राहीम ने उससे कहा, ''उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं; वे उनकी सुनें।'' उसने कहा, ''नहीं, हे पिता इब्राहीम, पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, जो वे मन फिराएँगे।'' उसने उससे कहा, ''जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे, तौभी उसकी नहीं मानेंगे।''

इस घटना को दृष्टांत के रूप में नहीं कहा गया। लाज़र एक वास्तविक व्यक्ति था। धनवान मनुष्य अधोलोक की पीड़ा में इसलिए नहीं पहुँचाया गया था, क्योंकि वह धनवान था। हम देखते हैं कि उसने स्वयं ही कहा कि मेरे भाई मन फिराएँगे, यदि लाजर मरे हुओं में से उनके पास पहुँचे। अतः यह स्पष्ट है कि संसार में अपने जीवन काल में उस धनवान मनुष्य ने अपने पापों से मन नहीं फिराया था। लाजर के विश्वास की तरह धनवान मनुष्य का विश्वास नहीं था। इब्राहीम की गोद आनंद के स्थान का प्रतीक है। इब्राहीम ने धनवान मनुष्य को ''पुत्र'' कहा, जिससे यह समझ आता है कि वह यहूदी था और इब्राहीम का वंशज था।

धनी मूर्ख :

पढ़ें : लूका 12:13-21

प्रभु यीशु के चारों तरफ हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती थी। एक दिन भीड़ में से एक ने उससे कहा, ''हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की संपत्ति मुझे बाँट दे। प्रभु ने उससे कहा, ''हे मनुष्य, किसने

मुझे तुम्हारा न्यायी या बाँटनेवाला नियुक्त किया है?'' और उसने भीड़ से कहा, ''चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो। क्योंकि किसी का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता।'' फिर प्रभु ने उनसे एक दृष्टांत कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूँ। क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूँ। और उसने कहा, मैं यह करूँगा; मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊँगा। और वहाँ अपना सब अन्न और संपत्ति रखूँगा। और अपने प्राण से कहूँगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत संपत्ति रखी है। चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ''हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया जाएगा। तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किसका होगा?'' ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परंतु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।

यहाँ पर ध्यान देने योग्य कुछ बातें हैं।

a. धनी मनुष्य की मूर्खता यह थी कि उसने सोचा कि उसकी संपत्ति से उसके प्राण को चैन मिलेगा।

b. निश्चित रूप से वह अच्छी योजना का बनाने वाला था, परन्तु उसने मृत्यु के विषय में नहीं सोचा।

c. उसके जीवन की कल्पना में उस परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था, जो सब बातों का नियंत्रण करते हैं।

d. जीवन का मकसद धन प्राप्ति नहीं; परन्तु धन, जीवन का जरिया होना चाहिए। धन नहीं बल्कि धन का लोभ सब बुराई की जड़ होती है।

e. परमेश्वर की दृष्टि में धनी होने का अर्थ है कि परमेश्वर के द्वारा दी जाने वाली आशीषों को प्राप्त करना। यह भी मानना कि हमारे पास जो कुछ भी है, दूसरों की भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए उसका उपयोग करें।

जॉन बन्यन के यात्रा स्वप्नोदय नामक पुस्तक में चरवाहे बालक का यह गीत इस संदर्भ में सटीक बैठता है :

''जो नीचा है उसे गिरने का भय नहीं;
और जो नम्र है, उसे घमंड नहीं।
ऐसा व्यक्ति माने केवल,
अपना अगुआ, परमेश्वर को ही।।
जो है मेरे पास उससे मैं तृप्त हूँ,
चाहे हो कम, या फिर हो ज्यादा,
जीवन में अपने तृप्ति ही चाहता हूँ,
दिया तूने ऐसों को बचाने का वादा।।
ऐसों को भरपूरी, पर जो बोझ है,
जो मुसाफिर और यात्री है,
यहाँ कुछ कम, वहाँ आनंद है,
पीढ़ी दर पीढ़ी सर्वोत्तम है।।

प्रश्न :

1. क्यों हम धनवान मनुष्य और लाजर की घटना को वास्तविक मानते हैं? दृष्टांत नहीं?
2. धनवान मनुष्य का जीवन कैसा था?
3. लाजर का सांसारिक जीवन कैसा था?
4. मृत्यु के पश्चात् लाजर और धनवान मनुष्य कहाँ गए?
5. धनी मनुष्य अधोलोक में क्यों गया?
6. भीड़ में से एक व्यक्ति ने अपनी संपत्ति के विषय में प्रभु से क्या कहा?
7. प्रभु यीशु ने उसे क्या उत्तर दिया?
8. धनवान मनुष्य की क्या समस्या थी, और उसने उसे सुलझाने के लिए क्या योजना बनाई?
9. उसी रात उसके साथ क्या हुआ?
10. इस दृष्टांत से हम क्या पाठ सीखते हैं?

पाठ-35

नया जन्म

मुख्य बिंदु :

यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। (यूहन्ना 3:3)।

याद करें :

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)।

नीकुदेमुस :
पढ़ें : यूहन्ना 3:1-21

फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। वह अन्य फरीसियों की तरह कपटी नहीं था, बल्कि सत्य को जानना चाहता था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, ''हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है। क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।'' प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस की बातों का उत्तर नहीं दिया, परन्तु नए जन्म के विषय में बातें करने लगे, जो कि यहूदी शिक्षक के लिए बिल्कुल नया विषय था। प्रभु ने कहा, ''मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' नीकुदेमुस को प्रभु की बातें समझ में नहीं आईं। प्रभु आत्मिक जन्म की बात कर रहे थे, परन्तु वह शारीरिक जन्म की बात ही सोच रहा था। अत: प्रभु ने उसे समझाया कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। यहाँ पर जल, परमेश्वर के वचन का प्रतीक है (इफिसियों 5:25; 1 पतरस 1:28, याकूब 1:18; यूहन्ना

17:17)। प्रभु ने यह स्पष्ट किया कि नया जन्म आवश्यक है, क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। कोई व्यक्ति इसलिए मसीही नहीं होता क्योंकि उसके माता-पिता मसीही हैं। उदाहरण के लिए एक डॉक्टर का बेटा डॉक्टर बनकर पैदा नहीं होता। उसे उसकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। प्रभु ने आगे कहा, ''जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे, उस में अनन्त जीवन पाए।'' यहाँ पर प्रभु यीशु उस घटना का उल्लेख कर रहे हैं, जो जंगल की यात्रा में इस्राएलियों के साथ हुआ। (गिनती 21:4-9)। यह घटना परमेश्वर के न्याय और अनुग्रह और विश्वास के द्वारा उद्धार के बारे में बताती है। (इफिसियों 2:8-10) हम जानते हैं कि हमारे प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि मनुष्यजाति को उद्धार प्राप्त हो सके। जो कोई प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानता है उसका उद्धार हो जाता है।

आरंभ में नीकुदेमुस प्रभु यीशु को एक शिक्षक के रूप में ही जानता था। तथापि, गुरु के साथ इस वार्तालाप से वह समझ गया था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे नया जन्म पाना आवश्यक है। जंगल में ऊँचे पर उठाए गए पीतल के सर्प का उदाहरण उसके मन मे तब से ही था जब प्रभु ने उसे यह बताया था। अत: जब उसने प्रभु को क्रूस पर उठाए हुए देखा, तब उसे निश्चय हो गया, कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र और उद्धारकर्ता है। उसने प्रभु पर विश्वास किया और उद्धार का अनुभव प्राप्त किया। इसी कारण वह सार्वजनिक रूप से सामने आया और उसने प्रभु यीशु के मृत देह को दफनाने में अरिमतियाह के यूसुफ की सहायता की।

प्रश्न :

1. नीकुदेमुस कौन था? उसने प्रभु को किस नाम से पुकारा?
2. कोई भी स्वर्ग के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है?
3. नया जन्म क्या है?

4. ''जल'' किसका प्रतीक है? बाइबल मे से दो पद बताएँ जो यह स्पष्ट करता है।

5. पीतल का सर्प क्या चित्रित करता है?

6. नीकुदेमुस ने कैसे समझा कि प्रभु यीशु ही उद्धारकर्ता हैं?

पाठ-36

प्रभु यीशु और सामरी स्त्री

मुख्य बिंदु :

प्रभु यीशु ने कहा, ''जो कोई उस जल में से पीएगा, जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।'' (यूहन्ना 4:14)।

याद करें :

वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे। (यूहन्ना 4:23)।

पाठ :

सामरी स्त्री :

पढ़ें : यूहन्ना 4:6-42

प्रभु यीशु मसीह के जीवन काल में पलिश्तीन तीन भागों में बँटा हुआ था। गलील, सामरिया और यहूदिया। यहूदी लोग सामरियों से घृणा करते थे, अत: वे अपनी यात्रा के दौरान सामरिया से होकर जाने से कतराते थे। परन्तु प्रभु यीशु गलील जाने के लिए सामरिया से होकर गए।

प्रभु सामरिया के एक नगर सूखार तक आए जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। और याकूब का कुआं भी वहीं था। अत: प्रभु यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों ही बैठ गए। और यह बात छठे घंटे के लगभग हुई। इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई। यीशु ने उस से कहा, ''मुझे पानी पिला।'' क्योंकि उस के चेले तो नगर में भोजन मोल लेने के लिए गए थे। उस सामरी स्त्री ने प्रभु से कहा, ''तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?'' (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का

व्यवहार नहीं रखते थे)। यीशु ने उत्तर दिया, ''यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है, जो तुझ से कहता है। 'मुझे पानी पिला', तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।'' स्त्री ने उससे कहा, ''हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं और कुआं गहिरा है। तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कुआं दिया? और आप ही अपने सन्तान और पशुओं समेत उस में से पीया?'' प्रभु यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर से प्यासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा, जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न होगा। परन्तु जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।'' स्त्री ने उससे कहा, ''हे प्रभु, वह जल मुझे दे, ताकि मैं प्यासी न होऊँ, और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।''

प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।'' स्त्री ने उत्तर दिया, ''मैं बिना पति की हूँ। प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''तू ठीक कहती है, कि मैं बिना पति की हूँ। क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है, वह भी तेरा पति नहीं।'' स्त्री ने उस से कहा, ''हे प्रभु मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ भजन करना चाहिए वह यरूशलेम में है।'' यीशु ने उससे कहा, ''हे नारी, मेरी बात पर विश्वास कर कि वह समय आता है, कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे, न यरूशलेम में। तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं, उसका भजन करते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे। क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसका भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' स्त्री ने उससे कहा, ''मैं जानती हूँ कि मसीह, जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है, जब वह

आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।'' यीशु ने उससे कहा, ''मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।'' तब वह स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, ''आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?'' तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उस से विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह। सो वह वहां दो दिन तक रहा। और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया। और उस स्त्री से कहा, कि अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते, क्योंकि हमने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।

विद्वान नीकुदेमुस से प्रभु ने नए जन्म के विषय में बात की। परन्तु इस स्त्री से प्रभु ने ''जीवन के जल'' की बात की, जो जल भरने कुंए पर आई थी। हमारा प्रभु सर्वोत्तम शिक्षक है। इस घटना में हम देखते हैं कि सामाजिक रीति रिवाजों की परवाह न करते हुए प्रभु ने उस पापिनी स्त्री से बातें की। इस से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रभु किसी का भी उद्धार कर सकते हैं, चाहे वह कितना ही घोर पापी क्यों न हो।

प्रश्न :

1. यहूदी लोग सामरिया से होकर यात्रा करने में क्यों कतराते थे?
2. प्रभु यीशु विश्राम करने कहाँ बैठे, जब चेले भोजन लेने गए?
3. सामरी स्त्री वहाँ कब और क्यों आई?
4. प्रभु यीशु और सामरी स्त्री के बीच के संवाद क्या थे?
5. उसने कैसे पहचाना कि यीशु ही ''मसीहा'' हैं? तब उसने क्या किया?
6. ''जीवन जल'' का दाता कौन है? एक व्यक्ति के जीवन में यह कार्य कैसे होता है?
7. सच्चे आराधक कौन हैं?

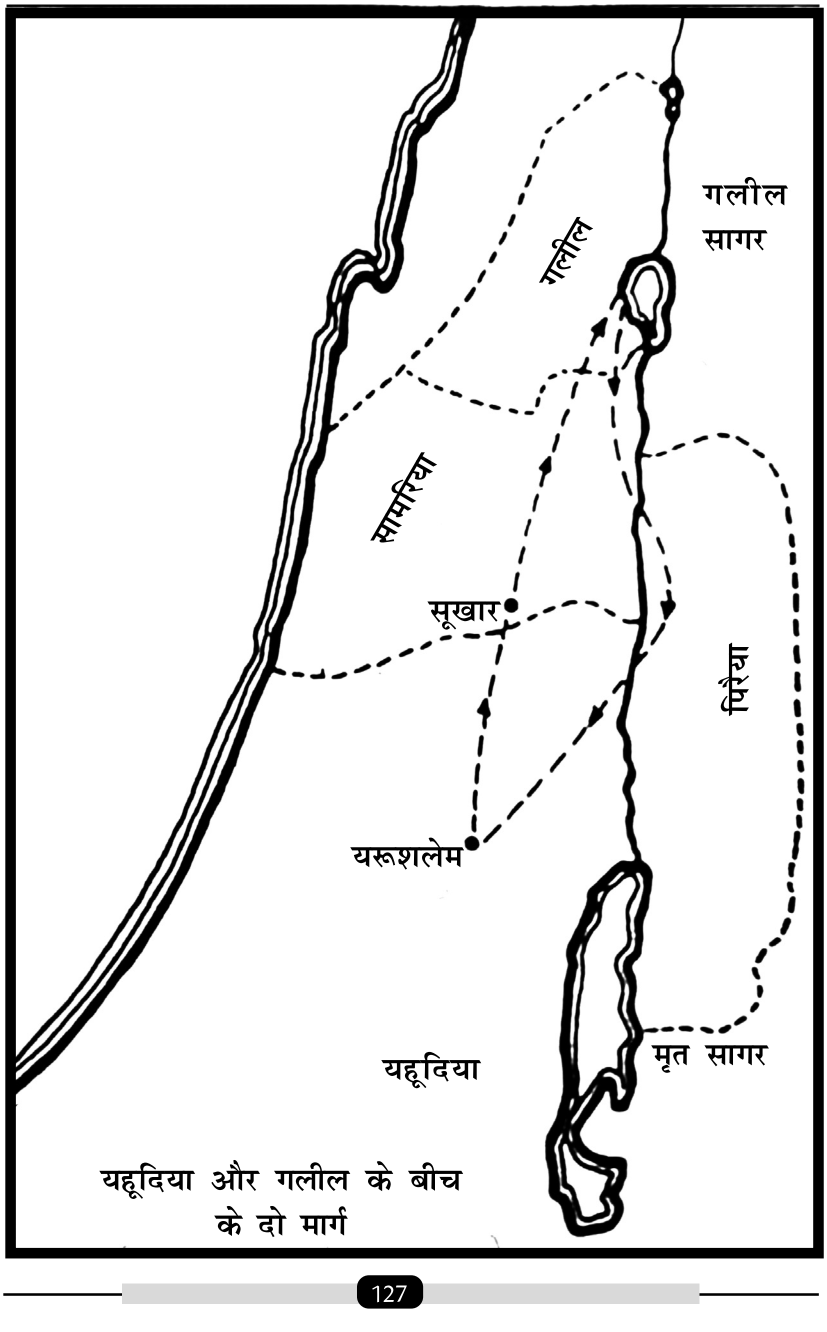

यहूदिया और गलील के बीच
के दो मार्ग

पाठ–37

उद्धार का मार्ग

मुख्य बिंदु :

क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। (लूका 19:10)।

याद करें :

जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई, और उनका मुँह कभी काला न होने पाया। (भजन 34:5)।

पाठ :

जक्कई

पढ़ें : लूका 19:1-10

यहूदी लोग चुंगी लेने वालों को नीचा समझते थे। जक्कई एक चुंगी लेने वाला था जो यरीहो में रहता था। जक्कई नाम का अर्थ है ''धर्मी व्यक्ति''।

यद्यपि वह धनी था, परन्तु वह खुश नहीं था क्योंकि यहूदी समाज उसे तुच्छ समझता था। एक दिन उसने सुना कि प्रभु यीशु यरीहो से होकर जा रहे हैं। जक्कई प्रभु को देखना चाहता था, परन्तु भीड़ के कारण देख न सका, क्योंकि वह नाटा था। अत: वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, ताकि वह प्रभु को देख सके। जब प्रभु उस गूलर के पेड़ के पास पहुँचे, तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, ''हे जक्कई, झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।'' वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, कि वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है। परंतु जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, ''हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ। और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो उसे चौगुना वापस कर देता हूँ।'' तब

प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''आज इस घर में उद्धार आया है। क्योंकि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।

प्रभु को देखने के लिए जक्कई पेड़ पर चढ़ गया था, परन्तु उसने सोचा भी न होगा कि प्रभु उसे देख लेंगे। बिना बुलाए ही प्रभु उसके घर पर गए। जक्कई ने अपना घर और अपना दिल भी प्रभु के लिए खोल दिया। अब प्रभु उसके जीवन के स्वामी बन गए। कुड़कुड़ाने वाले यहूदियों के मुँह बंद हो गए जब प्रभु ने कहा, ''मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।''

प्रभु यीशु और डाकू
पढ़ें : लूका 23:39-43.

जब उन्होंने प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, तब उन्होंने प्रभु के दाएं और बाएं एक-एक डाकू को भी क्रूस पर चढ़ाया। उन्होंने ऐसा किया क्योंकि वे प्रभु को भी अपराधी साबित करना चाहते थे। तथापि, यह परमेश्वर की योजना थी कि उनका पुत्र अपराधियों के संग गिना जाए। (यशायाह 53:12)।

लोग खड़े हुए देख रहे थे, और सरदार भी ठठ्ठा उड़ा रहे थे। सिपाही और उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए डाकू भी प्रभु का मजाक उड़ा रहे थे। तथापि कुछ समय के बाद उन डाकुओं में से एक ने पश्चाताप् किया।

जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निंदा करके कहा, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा।'' इस पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; परन्तु इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।'' तब उसने कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।'' प्रभु ने उससे कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''

दूसरे डाकू का क्या हुआ? उसने पश्चाताप् नहीं किया और अनंत विनाश में चला गया। दोनों ही डाकुओं के पास एक समान मौका था। जिसका सदुपयोग केवल एक ने ही किया। ध्यान दें, कि उद्धार, विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से है और वह तुरंत, और व्यक्तिगत और अनंतकाल के लिए सुरक्षित होता है।

प्रश्न :

1. जक्कई कौन था? वह कहाँ रहता था?
2. उसकी बड़ी इच्छा क्या थी?
3. उसने प्रभु को देखने के लिए क्या किया?
4. गूलर के पेड़ के पास आकर प्रभु ने क्या किया?
5. प्रभु के वचनों के प्रति लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी? प्रभु ने उत्तर में क्या कहा?
6. अपने घर पहुँचकर जक्कई ने प्रभु से क्या कहा?
7. जिस डाकू ने पश्चाताप् किया उसने प्रभु से क्या कहा? उसने ऐसा क्यों कहा?
8. जिस डाकू ने पश्चाताप् नहीं किया था, उसने प्रभु से क्या कहा?
9. उनका अंत क्या था? उनके अंत से हम उद्धार के विषय में क्या सीखते हैं?

पाठ–38

प्रभु यीशु पर आरोप और मुकदमा

मुख्य बिंदु :

जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर। पीलातुस ने उनसे कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। (यूहन्ना 19:6)।

याद करें :

वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया। (यशायाह 53:5)।

पाठ :

बड़ी अटारी में फसह खाने के पश्चात् प्रभु यीशु और उनके शिष्य किद्रोन के नाले के पार गतसमनी के बगीचे में गए। प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा, ''यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।'' और वह पतरस याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया और उदास और व्याकुल होने लगा। तब उस ने उनसे कहा, ''मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।'' फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ, वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा, क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।'' फिर उसने दूसरी बार जाकर उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। तब उसने आकर उन्हें फिर से सोते पाया। फिर उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की। तब स्वर्ग से

एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था। तब उसने चेलों के पास आकर उनसे कहा, ''अब सोते रहो, और विश्राम करो; देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो चलें, देखो मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुँचा है! वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियाँ लिए हुए आ पहुँची। और यहूदा ने यीशु के पास आकर उसको चूमा। यह प्रभु को पकड़वाने का चिन्ह था, जो यहूदा इस्करियोती ने अपने साथियों को दिया था। तुरंत ही उन्होंने प्रभु को पकड़कर बंदी बना लिया।

फिर वे प्रभु को पहले हन्ना के पास ले गए। वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। (यूहन्ना 18:13)। और लोगों के पुरनिए और महायाजक और शास्त्री इकट्ठे हुए। वे प्रभु के विरुद्ध गवाही ढूँढ़ रहे थे ताकि उसे मार डाले। परन्तु उन्हें कुछ दोष न मिला। बहुतेरे उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, परन्तु उन की गवाही एक सी न थी। तब कितनों ने उठकर उस पर यह झूठी गवाही दी कि हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा, जो हाथ से न बना हो। इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली। प्रभु बिल्कुल चुपचाप खड़े रहे। तब महायाजक ने उससे कहा, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे।'' यीशु ने उससे कहा, ''तूने आप ही कह दिया। वरन मैं तुम से यह भी कहता हूँ, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।'' तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इसने परमेश्वर की निंदा की है। अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुमने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो? उन्होंने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है। तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूंसे मारे और उसकी निंदा की।

तब फिर वे प्रभु को पीलातुस के पास ले गए। पीलातुस ने प्रभु यीशु से पूछा, ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' उसने उसको उत्तर

दिया, ''तू आप ही कह रहा है।'' और महायाजक उस पर बहुत ही बातों का दोष लगा रहे थे। पीलातुस ने उस से फिर पूछा, ''क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता? देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं।'' यीशु ने फिर कुछ उत्तर न दिया। यहां तक कि पीलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।

पीलातुस ने प्रभु यीशु को हेरोदेस राजा के पास भेजा क्योंकि वह जान गया था कि प्रभु गलील से है, और गलील हेरोदेस की रियासत में था। हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उस को देखना चाहता था। इसलिए कि उसके विषय में सुना था, और उसका कुछ चिह्न देखने की आशा रखता था। वह उससे बहुत सी बातें पूछता रहा, पर उस ने उस को कुछ भी उत्तर न दिया। और महायाजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके ठठ्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया। उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए। इसके पहले वह एक दूसरे के बैरी थी।

पीलातुस ने महायाजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उनसे कहा ''तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकाने वाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैंने तुम्हारे सामने उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैंने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है। इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूँ।''

हाकिम की यह रीति थी कि प्रतिवर्ष फसह के पर्ब्ब के समय किसी एक कैदी को जिसे वे चाहते थे, उनके लिए छोड़ दिया करता था। और बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी। और भीड़ उस से विनती करने लगी कि जैसा तू हमारे लिए करता आया है, वैसा ही कर। पीलातुस ने उनको यह उत्तर दिया, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ? क्योंकि वह जानता था कि महायाजकों ने उसे

डाह से पकड़वाया था। परन्तु महायाजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उनके लिए छोड़ दे। यह सुनकर पीलातुस ने उनसे फिर पूछा, ''तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उस को मैं या करूँ?'' वे फिर चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। पीलातुस ने उनसे कहा, ''क्यों? इसने क्या बुराई की है?'' परन्तु वे और भी चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। तब पीलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने के लिए बरअब्बा को उनके लिए छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

इस प्रकार यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हुई : ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा, और अपना मुँह न खोला। जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय, वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला।'' (यशायाह 53:7)।

''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।'' (2 कुरि. 5:21)।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु को किस स्थान पर बंदी बनाया गया था?
2. प्रभु को पहले कहाँ ले जाया गया?
3. महायाजकों के प्रश्नों के प्रति प्रभु यीशु की क्या प्रतिक्रिया थी?
4. प्रभु के प्रति सिपाहियों का क्या रवैया था?
5. पीलातुस ने प्रभु यीशु को हेरोदेस के पास क्यों भेजा?
6. हेरोदेस ने प्रभु से कैसा व्यवहार किया?
7. बरअब्बा कौन था?
8. वह कैद से कैसे छूटा?
9. प्रभु यीशु के क्रूस की मृत्यु के बारे में हुई भविष्यवाणी के दो पद बताएँ।

पाठ–39

प्रभु यीशु का क्रूसीकरण

मुख्य बिंदु :

वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं। उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। (1 पतरस 2:24)।

याद करें :

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा। (रोमियों 5:8)।

मुख्य पद :

मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना, भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है। परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। (यूहन्ना 12:24)।

जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनंत जीवन पाए। (यूहन्ना 3:14-15)।

पाठ :

पढ़ें : मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23; यूहन्ना 19-20

सिपाही प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले गए। गुलगुता अर्थात् खोपड़ी के स्थान तक प्रभु स्वयं अपना क्रूस उठाकर ले चले। भारी होने के कारण प्रभु क्रूस को और आगे न उठा सके। तब शिमौन* नाम का एक कुरेनी मनुष्य, (कुरैन, उत्तरी अफ्रीका में था जो आधुनिक युग में लीबिया कहलाता है।) गाँव से आ रहा था कि यरूशलेम पहुंचकर फसह का पर्ब्ब मनाए। उसे रोमी सिपाहियों ने बेगार में पकड़ा, कि उसका क्रूस उठा ले चले। और लोगों की बड़ी भीड़ उसके पीछे हो

ली। और बहुत सी स्त्रियाँ भी जो उसके लिए विलाप करती थीं। जब वे गुलगुता पहुंचे तो उन्होंने उसे मुर्र मिला हुआ दाखरस दिया। जिससे दोषी बेहोशी की अवस्था में रहे, और उसे अधिक पीड़ा न हो। तथापि, प्रभु यीशु ने वह नहीं पीया, क्योंकि वे पीड़ा और दर्द की तीव्रता को सहना चाहते थे।

वहाँ उन्होंने प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया, और उनके दाएं व बाएं एक-एक डाकुओं को क्रूस पर चढ़ा दिया। तब प्रभु यीशु ने कहा, '' **हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं**'' **(लूका 23:34)।** पीलातुस ने एक दोषपत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, और उसमें लिखा हुआ था, ''यीशु नासरी, यहूदियों का राजा''। यह दोषपत्र, इब्रानी, लतीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा हुआ था। अतः इसे बहुत से लोगों ने पढ़ा। तब सिपाहियों ने प्रभु यीशु के कपड़े लेकर चार भाग किए, हर एक सिपाही के लिए एक भाग लिया। कुरता बिन सीअन के ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। इस लिए उन्होंने कहा, ''हम इसको न फाड़ें। परन्तु इस पर चिठ्ठी डालें कि वह किस का होगा।'' यह इसलिए हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो, कि ''उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर चिठ्ठी डाली।'' (भजन 22:18)। मार्ग में जाने वाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निंदा कर रहे थे। महायाजक और शास्त्री भी उसका ठठ्ठा उड़ाकर कहते थे, ''यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा।''

जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस की निंदा करके कहा, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा।'' इसपर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं। परन्तु इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।'' तब उसने प्रभु से कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।'' प्रभु ने उस से कहा, **''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' (लूका 23:43)।**

प्रभु यीशु ने क्रूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था, पास खड़े देखकर, अपनी माता से कहा, **''हे नारी, देख यह तेरा पुत्र है।''** तब उसने चेले से कहा, **''यह तेरी माता है।''** और उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया।

दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, **''एली, एली, लमा शबक्तनी''** अर्थात् **हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?** (मत्ती 27:46)। जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, ''वह तो एलिय्याह को पुकारता है।''

प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं पियासा हूँ''। (यूहन्ना 19:28)। एक व्यक्ति तुरंत दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकंडे पर रखकर उसे चुसाया। औरों ने कहा, ''रुक जाओ, देखते हैं कि एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।''

जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, **''पूरा हुआ''** (यूहन्ना 19:30)। फिर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, **''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'' (लूका 23:46)।** और यह कहकर सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए। और तब मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया; और धरती डोल गई, और चट्टाने तड़क गईं। और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लाशें जी उठीं। और प्रभु के जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए। तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यंत डर गए, और कहा, ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।''

यह सब्त के एक दिन पहले, तैयारी का दिन था। इस कारण यहूदियों ने पीलातुस से विनती की, कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें। क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन

था। अतः सिपाहियों ने आकर पहिले की टाँगें तोड़ीं, तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टाँगें न तोड़ीं। परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरंत लोहू और पानी निकला। इन बातों से वचन की बातें पूरी हुईं कि ''वह उसकी हड्डी-हड्डी की रक्षा करता है। और उन में से एक भी टूटने नहीं पाती।'' (भजन 34:20)। ''तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है।'' (जकर्याह 12:10)।

इस प्रकार प्रभु ने अपनी मृत्यु से वचन को पूरा किया। परमेश्वर की अनंत योजना के अनुसार प्रभु ने पापी मनुष्य जाति के लिए अपना प्राण दिया। प्रभु ने अपनी मृत्यु के द्वारा पापों का दण्ड चुकाया। और इस प्रकार समस्त संसार के लिए उद्धार के कार्य को पूरा किया। तथापि परमेश्वर ने एक शर्त रखी है, कि जो कोई उद्धार प्राप्त करना चाहता है, उसे प्रभु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानना होगा।

अंतरा :

1. मुहब्बत खुदा की दिखाने के लिए,
   सलीब पर चढ़ गया यीशु,
   पहना काँटों का था ताज
   कि बच जाएं गुनाहगार,
   यीशु ने दी सलीब पर अपनी जान

स्थाई :

यीशु ने दी सलीब पर अपनी जान (2)
कि बच जाऊँ मैं बदकार,
पाऊँ शिफा मैं लाचार,
यीशु ने दी सलीब पर अपनी जान

2. यह सच है कि यीशु गुनाहगारों के लिए,

अपनी कीमती खून बहाने आया था,
उसने खाई कोड़ों की मार,
कि बच जाएँ गुनाहगार,
यीशु ने दी सलीब पर अपनी जान

3. क्रूस पर से उतार कर उसे
दफन कर दिया,
और कब्र पर बैठा दिया पहरा,
यीशु फतहमंद है आज,
क्योंकि मौत की हुई हार,
यीशु ख्रीस्त अब जलाल में आएगा, (3)
देखो कैसा उसका प्यार,
और हो जाओ तुम तैयार,
यीशु ख्रीस्त अब जलाल में आएगा।

प्रश्न :

1. सिपाहियों ने प्रभु यीशु से कैसा व्यवहार किया?
2. प्रभु का क्रूस उठाने के लिए सिपाहियों ने किसे पकड़ा?
3. प्रभु यीशु के साथ और कौन क्रूस पर चढ़ाए गए?
4. सिपाहियों ने यीशु के वस्त्रों के साथ क्या किया?
5. क्रूस पर से कहे गए प्रभु के अंतिम वचन कौन से थे?
6. व्याख्या करें : ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''
7. प्रभु यीशु की मृत्यु पर कौन से आश्चर्यकर्म हुए?
8. मसीह की मृत्यु का क्या महत्व है?

पाठ–40

प्रभु यीशु जी उठे!

मुख्य बिंदु :

उसकी कब्र दुष्टों के संग ठहराई गई; और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ। (यशायाह 53:9)।

याद करें :

यीशु ने उससे कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। (यूहन्ना 11:25)।

मुख्य पद :

हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। (रोमियों 1:3–4)।

पाठ :

पढ़ें : मत्ती 28; मरकुस 16; लूका 24; यूहन्ना 20

अरिमतिया का रहने वाला यूसुफ, जो प्रतिष्ठित मंत्री था, और वह परमेश्वर के राज्य की बाट जोह रहा था। वह हियाव करके पीलातुस के पास गया और यीशु की लाश माँगी। पीलातुस ने आश्चर्य किया कि वह इतना शीघ्र मर गया। और सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि क्या उसके मरे हुए देर हुई? जो सूबेदार के द्वारा सब हाल जान लिया, तो उसने लाश यूसुफ को दिला दी। नीकुदेमुस भी जो पहले यीशु के पास रात को गया था, पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। तब उन्होंने यीशु की लाश को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा। उस स्थान पर

जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी, और उस बारी में एक नई कब्र थी, जिसमें कभी कोई न रखा गया था। सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी। और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम वहां कब्र के सामने बैठी थीं।

दूसरे दिन, जो तैयारी के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, ''हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमाने वाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो, कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें कि वह मरे हुओं में से जी उठा है। तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। पीलातुस ने उनसे कहा, ''तुम्हारे पास पहरुए तो हैं। जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो।'' सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।

जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शलोमी ने सुगंधित वस्तुएँ मोल लीं, कि आकर प्रभु की देह पर मलें। और सप्ताह के पहले दिन बड़ी भोर, जब सूरज निकला ही था, कि वे कब्र पर आईं। और आपस में कहती थीं, कि हमारे लिए कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा? जब उन्होंने आँखें उठाईं, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है। क्योंकि वह बहुत बड़ा था। और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए दहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं। उसने उनसे कहा, 'चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो; वह जी उठा है; यहाँ नहीं है, देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों से कहो, कि वह तुमसे पहले गलील को जाएगा, जैसा उसने तुमसे कहा था, तुम वहीं

उसे देखोगे।''

और वे कब्र से निकलकर चेलों को बताने के लिए भाग गईं। तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले, और दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुँचा और झुककर कपड़े पड़े देखे। और वह अंगोछा जो उस के सिर पर बंधा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं, परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुँचा था, भीतर गया, और देखकर विश्वास किया।

तब चेले अपने घर लौट गए। परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही। तब प्रभु ने उसे दर्शन दिया, और उससे पूछा, ''हे नारी, तू क्यों रोती है? किसको ढूँढ़ती है? उसने माली समझकर उसे से कहा, ''हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है, तो मुझ से कह कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।'' यीशु ने उससे कहा, ''मरियम!'' उसने पीछे फिरकर उससे इब्रानी में कहा, ''रब्बूनी'' अर्थात् हे गुरु। यीशु ने उससे कहा, ''मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता के पास ऊपर जाता हूँ।'' मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया कि मैंने प्रभु को देखा, और उसने मुझसे ये बातें कहीं। अपने स्वर्गारोहण से पहले चालीस दिनों तक प्रभु अनेक बार अपने लोगों के सामने प्रकट हुए।

कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस कहते हैं: वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारहों को दिखाई दिया। फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिन में से बहुतेरे अब तक वर्तमान हैं, पर कितने सो गए। फिर याकूब को दिखाई दिया, तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। और सब के बाद, मुझ को भी दिखाई दिया। (1 कुरिन्थियों 15:5-8)।

पुनरुत्थान के पश्चात् प्रभु यीशु का प्रकट होना

समय	गवाह	संदर्भ
1. पहले दिन	मरियम मगदलीनी	मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:11-18
2. पहले दिन	कब्र से लौटती स्त्रियाँ	मत्ती 28:9-10
3. पहले दिन	दो शिष्य	लूका 24:13-32
	(इम्माऊस के मार्ग पर)	मरकुस 16:12-13.
4. पहले दिन	पतरस (यरुशलेम में)	लूका 24:34; 1 कुरि 15:5
5. पहले दिन	प्रेरितों में से दस (उपरौठी कोठरी में)	लूका 24:36-43; यूहन्ना 20:19-23
6. चालीस दिन के अंदर	ग्यारह शिष्य (उपरौठी कोठरी में)	यूहन्ना 20:24-29
7. चालीस दिन के अंदर	सात प्रेरित (गलील की झील के किनारे)	यूहन्ना 21:1-24.
8. चालीस दिन के अंदर	ग्यारहों शिष्य और 500 विश्वासी (ताबोर पर्वत पर)	मत्ती 28:16-20 1 कुरि. 15:6
9. चालीस दिन के अंदर	ग्यारहों शिष्य और याकूब	मरकुस 16:14; 1 कुरि. 15:7
10. चालीस दिन के अंदर	ग्यारह शिष्य (जैतून पर्वत)	लूका 24:50-53

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु को कब्र में रखने के बारे में विस्तारपूर्वक बताएँ।
2. यहूदियों ने प्रभु के कब्र की मुहर लगाकर रखवाली क्यों की?
3. पीलातुस ने उनकी बात कैसे मानी?
4. प्रभु यीशु कब मृतकों में से जी उठे?
5. अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु सबसे पहले किसके सामने प्रकट हुए?
6. मनुष्य जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की क्या शर्त है?